अतींद्रिय सामर्थ्य संयोग नहीं तथ्य

- श्रीराम शर्मा आचार्य
- डॉ. प्रणव पण्ड्या

अतींद्रिय सामर्थ्य संयोग नहीं तथ्य

लेखक :

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. : ०९९२७०८६२८९, ०९९२७०८६२८७

पुनरावृत्ति सन् २००९ मूल्य : १८.०० रुपये

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि
मथुरा (उ. प्र.)

लेखक :
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

पुनरावृत्ति सन् २००९

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

अतींद्रिय क्षमताएँ
पृष्ठभूमि एवं आधार

मनुष्य में काम करने और सोचने की क्षमता है। इन्हीं दोनों के समन्वय से अनेकानेक प्रकार की कलाओं और कुशलताओं का स्वरूप सामने आता है। उपार्जनों और उपलब्धियों के पीछे इन्हीं क्षमताओं का संयोग-उपयोग काम कर रहा होता है। समृद्धि और वैभव के जो कुछ चमत्कार दीखते हैं, उनके पीछे मनुष्य की यह शारीरिक और मानसिक क्षमताएँ ही काम कर रही होती हैं।

अतिरिक्त क्षमताएँ इससे आगे की भूमिका में उत्पन्न होती हैं। इन्हें विभूतियाँ कहते हैं और इनके पीछे दैवी अनुकंपा काम करती समझी जाती हैं। ऋद्धि सिद्धियों का क्षेत्र यही है। योगाभ्यास-तपश्चर्या, तंत्र प्रयोग, भक्ति-साधना आदि अनुष्ठानों का आश्रय लेकर इन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है।

चेतना की गहरी खोज-बीन करने पर पता चलता है कि यह बाह्य उपार्जन नहीं, आंतरिक उद्भव है। मानवी सत्ता का बहुत थोड़ा अंश ही प्रयोग में आ सका है। जितना ज्ञात है और जिसका प्रयोग होता है वह बहुत थोड़ा अंश है। इससे कितनी ही गुनी संभावनाएँ मानवी सत्ता के गहन अंतराल में छिपी पड़ी हैं। धरती की ऊपरी सतह पर तो घास-पात उगाने की क्षमता ही दीख पड़ती है। कहीं धूलि कहीं पत्थर बिखरे दीखते हैं, पर गहराई तक खोदते जाने पर बहुमूल्य खनिजों की परतें उपलब्ध होती जाती हैं। ठीक इसी प्रकार शरीर की श्रम शक्ति और मन की चिंतन शक्ति से आगे गहराई में उतरने पर उन क्षमताओं का अस्तित्व सामने आता है, जिन्हें अतींद्रिय या दैवी कहते हैं। वस्तुतः वे भी व्यक्ति की अपनी ही अविज्ञात एवं उच्चस्तरीय सामर्थ्यें ही होती हैं। उन्हें प्रयत्नपूर्वक जगाया या बढ़ाया जा सकता है।

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों ने जो अतींद्रिय क्षमताएँ खोजी हैं, वे उन्हें चार वर्गों में विभक्त करते हैं—(१) क्लेयर वायेन्स (परोक्ष

दर्शन)— वस्तुओं या घटनाओं की वह जानकारी जो ज्ञान प्राप्ति के सामान्य आधारों के बिना ही उपलब्ध हो जाए। (२) प्रीकॉग्नीशन (भविष्य ज्ञान)—बिना किसी मान्य आधार के भविष्य की घटनाओं का ज्ञान। (३) रेट्रोकॉग्नीशन (भूतकालिक ज्ञान)—बिना किन्हीं मान्य साधनों से अविज्ञात भूतकालीन घटनाओं की जानकारी। (४) टेलीपैथी (विचार-संप्रेषण)—बिना किसी आधार या यंत्र के अपने विचार दूसरों के पास पहुँचाना तथा दूसरों के विचार ग्रहण करना। इस वर्गीकरण को और भी अधिक विस्तृत किया जाए तो उन्हें ११ प्रकार की गतिविधियों में बाँटा जा सकता है—

(१) बिना किन्हीं ज्ञातव्य साधनों के सुदूर स्थानों में घटित घटनाओं की जानकारी मिलना।

(२) एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की मन:स्थिति तथा परिस्थिति का ज्ञान होना।

(३) भविष्य में घटने वाली घटनाओं का बहुत समय पहले पूर्वाभास।

(४) मृतात्माओं के क्रिया-कलाप जिससे उनके अस्तित्व का प्रत्यक्ष परिचय मिलता हो।

(५) पुनर्जन्म की वह घटनाएँ जो किन्हीं बच्चों, किशोरों या व्यक्तियों द्वारा बिना सिखाए-समझाए बताई जाती हों और उनका उपलब्ध तथ्यों से मेल खाता हो।

(६) किसी व्यक्ति द्वारा अनायास ही अपना ज्ञान तथा अनुभव इस प्रकार व्यक्त करना जो उसके अपने व्यक्तित्व और क्षमता से भिन्न और उच्च श्रेणी का हो।

(७) शरीरों में अनायास ही उभरने वाली ऐसी शक्ति जो संपर्क में आने वालों को प्रभावित करती हो।

(८) ऐसा प्रचंड मनोबल जो असाधारण दुस्साहस के कार्य विनोद की साधारण स्थिति में कर गुजरे और अपनी तत्परता से अद्भुत पराक्रम कर दिखाए।

(९) अदृश्य आत्माओं के संपर्क से असाधारण सहयोग-सहायता प्राप्त करना।

(१०) शाप और वरदान जैसी शब्द प्रहार की शक्तियाँ, जो व्यक्तियों व वस्तुओं पर दीर्घकालिक प्रभाव बनाए रह सकते हैं।

(११) परकाया प्रवेश या एक आत्मा में अन्य आत्मा का सामयिक प्रवेश। इसी के अंतर्गत शरीर से बाहर आत्मसत्ता के होने की (आऊट ऑफ बॉडी एक्सपीरेएन्सेज—ओ. बी. ई.) अनुभूतियाँ भी आती हैं।

इनके अतिरिक्त भी कुछ विविध तथा विसंगत बहुवर्गीय क्रम की अनेकों घटनाएँ हो सकती हैं जिनसे अतींद्रिय शक्ति प्रमाणित होती हो, जैसे—मनुष्येतर जीवों की असामान्य अतींद्रिय क्षमताएँ।

योगशास्त्रों में आत्मा को परमात्मा से मिलाने, जीव को ब्रह्म में विलीन करने वाली साधनाओं द्वारा अपने लक्ष्य की प्राप्ति संभव बताई गई है, वहीं यह भी बताया गया है कि ये साधनाएँ करते-करते मनुष्य अनेक दिव्य शक्तियों का स्वामी बन जाता है और उसके भीतर ऐसी-ऐसी विलक्षणताओं के उद्भव की बात भी कही गई है जिन्हें चमत्कारी सिद्धियाँ कहा जाता है। योग दर्शन के चार पादों में से एक पाद—एक अध्याय में तो केवल उसी बात का विवेचन किया गया है कि योग साधक को कौन-कौन सी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। दिव्य दर्शन, दिव्य श्रवण, दूरदर्शन, भूत, भविष्य का ज्ञान, प्रातिभ, श्रावण, वेदन, आदर्श, आस्वाद, वार्ता, छायापुरुष, ज्ञान सिद्धियाँ तथा अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व, काय सपत और अनभिघात आदि सिद्धियों का उल्लेख आता है। अन्यान्य शास्त्रों में इन सिद्धियों का इतना सविस्तार उल्लेख मिलता है कि उन्हें पढ़कर सहज ही विश्वास करते नहीं बनता। कई लोग इसी कारण योगशास्त्र और उसकी सिद्धियों को कपोल-कल्पित मानते थे। कल तक विज्ञान की भी यही धारणा थी, किंतु जब इस तरह की अनेकानेक घटनाओं और सिद्धि-संपन्न व्यक्तियों का विश्लेषण तथा परीक्षण किया गया, तो पता चला कि अतींद्रिय सामर्थ्य केवल कहने-सुनने या मन मोदक खाने जैसी ही बात नहीं है बल्कि वह तथ्यपूर्ण है और योग साधना द्वारा उनका विकास

एक विज्ञानसम्मत प्रक्रिया से होता है। उसके द्वारा विश्व-ब्रह्मांड में व्याप्त परम चेतना से तादात्म्य स्थापित कर जीव चेतना उसकी सामर्थ्य को अर्जित करने लगती है।

मुंडकोपनिषद् के दूसरे अध्याय में महर्षि अंगिरा शौनक से कहते हैं कि जिस प्रकार प्रज्वलित अग्नि से उसी के जैसे रूप-रंग वाली हजारों चिनगारियाँ चारों ओर निकलती हैं, उसी प्रकार परमपुरुष अविनाशी ब्रह्म से नाना प्रकार के मूर्त-अमूर्त भाव निकलते हैं। उन्हें जीवसत्ता भी कहा जा सकता है। चिनगारियाँ जिस प्रकार अग्नि की समस्त विशेषताएँ अपने में समाहित किए रहती हैं, उसी प्रकार जीवात्मा में भी परमात्मा की समस्त विशेषताएँ अंतर्निहित रहती हैं। उन्हें प्रयत्नपूर्वक योग साधना और तपश्चर्या द्वारा जाग्रत किया जा सकता है। उस जाग्रति के फलस्वरूप जो कुछ इंद्रियातीत है, वह इंद्रियगम्य बन सकता है और जिसे बुद्धि द्वारा नहीं समझा जा सकता, जो बुद्धि की पकड़ में नहीं आता, वह प्रज्ञा द्वारा-जाग्रत सूक्ष्म बुद्धि द्वारा जाना जा सकता है।

विज्ञान पहले इन तथ्यों को नकारता आ रहा था, पर नकारने से तो कोई तथ्य असत्य नहीं हो जाता। जो घटनाएँ अनादिकाल से घटती आ रही हैं, यदा-कदा घटने के कारण वे विचित्र और चमत्कारी भी लगती हैं, परंतु उनके पीछे चेतना विज्ञान के सुनिश्चित नियम काम करते हैं, आज भी घटती हैं। पहले लंबे समय तक उन्हें गप, भ्रम या मनगढ़ंत कहा जाता रहा, परंतु विज्ञान उनकी ओर से और अधिक आँखें मूँदे नहीं रह सका।

अब इन घटनाओं के वैज्ञानिक अध्ययन भी किए जाने लगे हैं, उनके निष्कर्षों को पुष्ट करने के लिए प्रयोगशालाओं में परीक्षण भी होते हैं तथा जो तथ्य विदित होते हैं उन्हें निर्विवाद रूप से प्रकाशित किया जाता है। उदाहरण के लिए, बिना किसी बाहरी संसाधनों के मीलों दूर घटी घटनाओं का आभास ही लिया जाए जिसे अध्यात्म की भाषा में दूरबोध कहते हैं। आत्मा की यह सामर्थ्य लंबी योग साधनाओं के अनवरत अभ्यास से प्राप्त होती है, किंतु यदा-कदा सामान्य स्थिति में भी इसकी अनुभूति हो जाती है।

एक घटना सन् १९१८ की है। लंदन में चार वर्ष का बालक जॉन हक्सले अपने हमउम्र अन्य बच्चों के साथ खेल रहा था। अचानक उसे खेलते-खेलते न जाने क्या हुआ कि चिल्लाता हुआ घर के भीतर दौड़ा आया—मेरे पिता का दम घुटा जा रहा है। उन्हें बचाओ वे एक कोठरी में बंद हो गए हैं और उन्हें कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा है। जॉन इतना कहकर बेहोश हो गया और जब उसे होश आया तो उसके मुँह से जो पहले शब्द निकले वह थे—अब वे ठीक हो जाएँगे।

उस समय जॉन के पिता प्रथम महायुद्ध में फ्रांस के मोर्चे पर लड़ रहे थे। युद्ध समाप्त होने पर जब वे घर वापस आए तो उन्होंने बताया कि ७ नवंबर को वे एक गैस चेंबर में फँस गए थे और वहाँ से किसी अदृश्य शक्ति के सहयोग से ही वे निकल पाए। घर के लोगों को तब एकाएक याद आया कि जिस दिन जॉन खेलते-खेलते बेहोश हो गया था उस दिन भी तो ७ नवंबर थी।

इस प्रकार की एक नहीं असंख्य घटनाएँ हैं। कई व्यक्तियों को रहस्यमय अनुभव होते हैं और कभी पता चलता है कि उन्होंने जो अनुभव किया है, वह अमुक स्थान पर ठीक उसी प्रकार घटा है। वैज्ञानिकों ने जब इन रहस्यों को उद्‌घाटित करने का बीड़ा उठाया तो एक से एक चौंका देने वाले तथ्य सामने आए और सिद्ध हुआ कि साढ़े पाँच फुट ऊँची डेढ़ सौ पौंड वजनी काया में ब्रह्मांडव्यापी चेतना संयुक्त और ओत-प्रोत है।

प्रसिद्ध जीवशास्त्री प्रो. फ्रैंक ब्राउन ने कई प्रयोगों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि सृष्टि में जो असंख्य प्राणी हैं, वे ऐसे संग्राहक रिसीवर हैं जो ब्रह्मांड के स्पंदन तथा संवेदन ग्रहण करते रहते हैं। संग्राहक का काम करने वाले बहुत सूक्ष्म परमाणु बताए जाते हैं, जिनमें घनत्व, भार, विस्फुटन, चुंबकत्व आदि कोई भौतिक लक्षण नहीं होते हैं।

अन्य वैज्ञानिकों ने भी इस दिशा में खोज की और पाया कि प्रो. फ्रैंक ब्राउन का मत एकदम सही है। संग्राहक का काम करने वाले इन चेतन परमाणुओं को 'न्यूट्रिनो' नाम दिया गया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि ये अणु अरबों की संख्या में प्रकाश की गति से बहते रहते हैं।

यहाँ तक कि ये अणु के भीतर से भी पार हो जाते हैं—इतने सूक्ष्म होते हैं। यदा-कदा इनमें कुछ विशेष क्रियाशीलता आती है। इसी से इन्हें देख पाना संभव होता है।

एंड्रिया ड्राब्स नामक वैज्ञानिक ने न्यूट्रिनो के आधार पर ही साइकोन अणु का पता लगाया और कहा कि साइकोन ही मस्तिष्क के न्यूरॉन कणों से जुड़कर परा-चेतना को जाग्रत करता है। एक्सेल फरसॉफ नामक अंतरिक्ष वैज्ञानिक ने तो तथ्यों और प्रयोगों के आधार पर यह प्रमाणित कर दिखाया कि मनुष्य को कभी अनायास ही विचित्र अनुभूतियाँ होती हैं। उनमें से कुछ खास तरह की अनुभूतियाँ माइंडॉन नामक कणों के हलचल में आने से होती हैं। जब ये कण सक्रिय होते हैं तो हमारा अवचेतन मन (सबकांशस) ब्रह्मांडीय चेतना के साथ जुड़ जाता है। यदि उन अनुभूतियों को पहचाना, जगाया अथवा समझा जा सके तो व्यक्ति बैठे-ठाले ही किसी भी ग्रह-नक्षत्र की बातें जान सकता है।

योग साधना भी एक विज्ञान है और उसके अपने सुनिश्चित सिद्धांत हैं। विज्ञान का यह सिद्धांत जिस प्रकार अपने आप में अकाट्य है कि हाइड्रोजन के दो अणु और ऑक्सीजन का एक अणु मिलकर पानी बनता है, उसी प्रकार योग विज्ञान के भी अकाट्य, अनुभूत और परीक्षित सिद्धांत हैं, जिन्हें अपनाकर कोई भी अभीष्ट दिशा में असाधारण सामर्थ्य अर्जित कर लेता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से जिस प्रकार यह सिद्ध हो गया है कि मनुष्य के भीतर कई केंद्रों में ऐसी गुप्त सामर्थ्य छिपी पड़ी है जो अनुकूल परिस्थितियों में ही प्रकट होती है। योगाभ्यास द्वारा उन परिस्थितियों का निर्माण ही किया जाता है। साम्यवादी राष्ट्र रूस जहाँ के स्कूलों में यह सिखाया जाता है कि धर्म अफीम है और ईश्वर फ्रॉड है—में ही अब इस दिशा में बहुत कार्य होने लगा है। कुछ समय पूर्व इन घटनाओं की वास्तविकता जाँचने के लिए कई परीक्षण किए गए।

गत २९ अप्रैल, १९७६ को कार्ल निकोलायेब नामक युवा वैज्ञानिक को मास्को से साइबेरिया भेजा गया। उद्देश्य था—दूरानुभूति के कुछ सिद्धांतों का प्रायोगिक परीक्षण। साइबेरिया के नियत स्थान पर गोल्डन वैली होटल में कुछ सोवियत वैज्ञानिकों के साथ बैठा हुआ था। उसी समय सैकड़ों मील दूर मास्को स्थित एक 'इंसुलेटेड' कक्ष में वैज्ञानिक यूरी कामेस्की अपने कुछ साथियों के साथ बैठा था। यूरी को नहीं बताया गया था कि उसे किस प्रकार का संदेश भेजना है ? ठीक आठ बजे, एक वैज्ञानिक ने कामेस्की के हाथ में एक सीलबंद पैकिट पकड़ा दिया। उस पैकिट में धातु की बनी एक स्प्रिंग थी जिसमें सात क्वाइल लगे थे।

कामेस्की ने उस स्प्रिंग को उठा लिया और क्वाइलों पर उँगलियाँ फेरने लगा। उस समय कामेस्की ने कार्ल निकोलायेब का ध्यान किया और पूरी एकाग्रता के साथ यह कल्पना की कि वह उसके सामने बैठा है तथा उस स्प्रिंग को देख रहा है—फिर वह कार्ल की आँखों से स्प्रिंग और क्वाइल देख रहा है।

उसी समय, मास्को से १८६० मील दूर अपने वैज्ञानिक साथियों के बीच बैठे कार्ल ने कुछ अजीब सा अनुभव किया। जैसे उसे अपने हाथों में कोई वस्तु दिखाई दे रही हो। कुछ ही क्षणों बाद वह बोला—गोल, चमकती हुई चीज धातु से बनी हुई है···· क्वाइल है।

इसके बाद कामेस्की ने मास्को में एक पेचकस का चित्र देखा तो कार्ल ने उसका विवरण भी शब्दशः बता दिया। कार्ल निकोलायेब ने टेलीपैथी को सिद्ध करने में बड़ी मेहनत की है। एक प्रेस सम्मेलन में कार्ल ने इन प्रयोगों के संदर्भ में कहा है, "टेलीपैथी के क्षेत्र में मैंने जो सफलता प्राप्त की है, वह हर कोई प्राप्त कर सकता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति में अंतःशक्ति विद्यमान होती है। इसीलिए मैं अपनी योग्यता को विज्ञान की कसौटी पर कसा जाना महत्त्वपूर्ण मानता हूँ। यदि मैं ऐसी योग्यता प्राप्त कर सकता हूँ तो कोई कारण नहीं कि आप ऐसी योग्यता प्राप्त न कर सकें।"

'यह विद्या आपने कहाँ से सीखी?'—इस प्रश्न के उत्तर में कार्ल निकोलायेव ने बताया—"बचपन में उन्हें योग पर किसी भारतीय महात्मा द्वारा लिखी हुई एक पुस्तक प्राप्त हो गई थी। उसी से प्रेरणा प्राप्त कर मैं अपने मित्रों से कहने लगा कि वे मुझे कोई मानसिक आदेश दें। आगे चलकर मैंने योगदर्शन, राजयोग, प्राणायाम आदि साधनाओं का ११ वर्ष तक अभ्यास किया। इसका परिणाम वर्तमान सफलता के रूप में प्रस्तुत है।"

इस क्षेत्र का और अधिक गहरा अध्ययन करने के लिए रूस ने भारत सरकार से कुछ योगियों को जिन्होंने योग साधना के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलताएँ अर्जित की थीं, रूस भेजने के लिए भी आग्रह किया था। न केवल रूस में वरन अन्य पश्चिमी देशों में भी इस प्रकार के प्रयोग सफलतापूर्वक किए गए हैं तथा इस दिशा में बहुत आगे पहुँच गए व्यक्तियों से कई महत्त्वपूर्ण कार्यों में सहयोग लिया गया है।

चेकोस्लोवाकिया के ब्रेतिस्लाव काफ्का ने पराशक्ति के संबंध में अनेकों अद्भुत प्रयोग किए हैं। उन्होंने एक प्रयोगशाला भी स्थापित कर रखी है। कहते हैं कि द्वितीय महायुद्ध में जब मित्र राष्ट्रों के अधिकारियों को युद्ध की स्थिति के बारे में कुछ पता नहीं चलता था तो वे बेतिस्लाव काफ्का की ही सहायता लेते थे। काफ्का अपनी प्रयोगशाला में कार्यरत दूसरे मनोवैज्ञानिक को समाधिस्थ कर देते तथा उससे वही प्रश्न करते। प्रायः यह जानकारी सही निकलती थी।

न ज्ञान न विज्ञान, फिर भी निर्बाध आदान-प्रदान

२२ अगस्त, १९६४ की घटना है। प्रसिद्ध फ्रांसीसी व्यापारी फ्रेंड स्पेडलिंग अपनी मोटर कार से हेरी की ओर बढ़ रहे थे। हेरी वेस्टइंडीज द्वीप समूह के एक टापू पर स्थित सुरम्य स्थान है। अटलांटिक महासागर के फरोपियन द्वीप हिस्यानोलिया के पश्चिमी स्थान पर उस स्थान में

स्पेडलिंग प्राय: व्यापार के सिलसिले में आया-जाया करते थे। उस दिन जब वे हेरी की ओर बढ़ रहे थे कि रास्ते में अचानक तूफान आ गया। तूफान भी ऐसा कि पहले कभी नहीं आया था। उस तूफान में करीब १५० व्यक्ति मर गए थे। स्पेडलिंग भी उस अंधड़ में फँस गए फिर भी उन्होंने आगे चलने का निश्चय किया और किसी तरह होटल तक पहुँच जाने की बात सोचने लगे। अपने होटल तक पहुँचने के लिए वे नक्शे की सहायता से आगे बढ़ना चाह ही रहे थे कि उन्हें सुनाई दिया—पीछे लौट जाओ, यह रास्ता खतरनाक है।

आवाज बहुत समीप से आई थी, लगता था कोई कार की पिछली सीट पर बैठा था। स्पेडलिंग ने चौंककर इधर-उधर देखा। कोई दिखाई नहीं दिया। उन्होंने समझा कि कोई भ्रम हुआ है। स्पेडलिंग ने अपनी यात्रा जारी रखी। कुछ दूर आगे बढ़े ही थे कि फिर वही आवाज सुनाई दी। वही शब्द तो थे, किंतु इस बार स्वर पहले की अपेक्षा ऊँचा था। स्पेडलिंग ने स्वर को पहचाना भी, वह आवाज उनकी पत्नी से बहुत मिलती-जुलती थी। मिलती-जुलती इसलिए कि उस समय श्रीमती स्पेडलिंग तो उस स्थान से हजारों मील दूर कनेक्टीकट (अमेरिका) में थीं। स्पेडलिंग को फिर भी उस आवाज पर भरोसा न हुआ और वे बराबर आगे बढ़ते रहे। रह-रहकर वह आवाज सुनाई देती, स्पेडलिंग चौंक जाते, सहम उठते और रुककर थोड़ी देर विचार करने लगते फिर आगे बढ़ जाते।

यह आवाज कहाँ से आई? कौन आगे बढ़ने से रोक रहा है? पत्नी तो हजारों मील दूर है, फिर उसकी आवाज इतनी स्पष्ट कैसे सुनाई दे रही है और उसे कैसे मालूम कि यहाँ अंधड़ आया हुआ है तथा मैं उसी में यात्रा कर रहा हूँ? आदि ऐसे प्रश्न थे, जिन पर स्पेडलिंग जितना ही विचार करते उतना ही असमंजस बढ़ जाता था। रुकते-रुकाते वह कुछ घंटों में समुद्र तट के पास बह रही एक नदी के पुल तक पहुँचे। वह पुल पार करने जा ही रहे थे कि देखा अंधड़-

तूफान में उफन रहे समुद्र ने अपनी एक तेज लहर फेंकी और उस लहर के दबाव से नदी पर बना पुल टूटकर ऐसे बहने लगा जैसे नदी में डूबता-उतराता पत्ता। अचानक यह दृश्य देखकर स्पेडलिंग काँप उठे। कुछ क्षण पहले भी यदि उन्होंने अपनी कार पुल पर बढ़ा दी होती तो निश्चित ही उनका कहीं पता नहीं चलता।

पर यह रहस्य, रहस्य ही रहा कि स्पेडलिंग को अपनी पत्नी की आवाज और चेतावनी कहाँ से तथा कैसे सुनाई दे रही थी? घर पहुँचने पर तो इसमें रहस्य का एक और अध्याय जुड़ गया। स्पेडलिंग जब घर पहुँचे, तो उन्होंने अपनी पत्नी से इस घटना की चर्चा की। उनकी पत्नी ने बताया कि ठीक उसी रात को उसने सपना देखा कि उसका पति हेरी के जंगल में भयानक तूफान में फँस गया है। आगे गहरी नदी है, उसमें उसकी मोटर डूबने ही वाली है। इस दृश्य से वह बुरी तरह घबरा उठी और सोते में ही चीख उठी—फ्रेड वापस लौट जाओ। वह अपने पति को इसी नाम से पुकारती थी। 'खतरे से बचो। आगे खतरा है।' यह एक रहस्य ही था कि हजारों मील दूरी पर रह रही श्रीमती फ्रेड को उसी समय ऐसी अनुभूति कैसे हुई, जो न केवल भविष्य बताती थी वरन एक की स्थिति का दूसरे को तत्क्षण आभास भी देती थी।

ब्रिटेन की साइकिक रिसर्च सोसाइटी ने श्री मायर्स की अध्यक्षता में ऐसी अनेक घटनाओं की जाँच-पड़ताल की है, जिनमें मनुष्य की अंतर्निहित अतींद्रिय क्षमताओं का रहस्योद्घाटन होता है। जिन घटनाओं को मनुष्य के भीतर देव-दानव का आवेश कहा जाता है, उनमें से कई घटनाएँ भी इसी प्रकार की अतींद्रिय क्षमताओं से संबद्ध बताई गई हैं। उपर्युक्त घटना से मिलती-जुलती एक और घटना सेन फ्रांसिस्को की है। वहाँ का एक ट्रक ड्राइवर लुई फिशर अपनी पत्नी हैजल रेफर्टी से झगड़ा होने के कारण घर छोड़कर चला गया। झगड़ा इतना बढ़ा कि दोनों ने आवेश में आकर एक-दूसरे से कभी न मिलने की कसम खा

ली। इतना ही नहीं, उन्होंने वह शहर छोड़कर अन्यत्र चले जाने की बात भी कही, ताकि वे फिर कभी एक-दूसरे का मुख न देख सकें।

इन दोनों में घनिष्ठ प्रेम था। इतना प्रेम कि दूसरे लोग उन्हें देखकर ईर्ष्या से जला करते थे। किसी बात पर उन्हें आवेश आ गया और गुसा-गुस्से में वे चले गए। किंतु गुस्सा शांत होने पर वे अनुभव करने लगे कि जरा से आवेश में आकर उन्होंने इतना बड़ा कदम उठा लिया है, जो नहीं उठाना चाहिए। वे सोचने लगे कि इतने समय से वे कितनी अच्छी तरह घनिष्ठ मित्रों की भाँति रह रहे थे। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, दोनों का पश्चात्ताप बढ़ने लगा और वापस मिलने की बेचैनी भी होने लगी। इस बेचैनी को शांत करने के लिए वे ऐसा उपाय ढूँढ़ने लगे कि साथी को ढूँढ़ सकें और अपनी गलती स्वीकार कर एक-दूसरे से क्षमा माँग सकें।

लेकिन समस्या यह थी कि लुई हैजल को और हैजल लुई को कहाँ ढूँढ़े ? दोनों में किसी को भी तो यह पता नहीं था कि उनका साथी कहाँ है ? एक दिन सबेरे हैजल ने सुना—लुई लास एजिल्टा शहर में है। वह तुम्हारा इंतजार ग्रिफिथ की बेधशाला के पास बैठा कर रहा है। हैजल वहाँ तुरंत पहुँच जाओ। यह आवाज ऐसे सुनाई दी जैसे पास ही कोई रेडियो बज रहा हो और उससे यह सूचना प्रसारित हो रही हो।

ठीक इसी प्रकार की आवाज लुई ने भी सुनी—ग्रिफिथ की बेधशाला पर पहुँचो, वहाँ बैठी हैजल तुम्हारा इंतजार कर रही है। यह आवाज सुनकर दोनों ही तत्काल दौड़ पड़े और नियत स्थान पर पहुँचते ही दोनों ने एक-दूसरे को देखा, आँखों में झाँका। वहाँ पश्चात्ताप के आँसू इस तरह भरे हुए थे कि पुतलियाँ किसी झील में तैरती सी प्रतीत हो रही थीं। एक-दूसरे को देखकर आँसुओं का वह बाँध टूट गया और दोनों फूट-फूटकर रोए।

अब दोनों के लिए आश्चर्य का विषय यह था कि मिलन की पृष्ठभूमि बनाने वाला यह प्रसारण कहाँ से और कैसे हुआ ? लुई को

हैजल से मिलने और हैजल को लुई से मिलने के लिए यह अलग-अलग शब्दावली कैसे प्रसारित हुई? अगर यह रेडियो प्रसारण था तो एनाउन्स किसने किया? रेडियो स्टेशन पहुँचकर दोनों ने मालूम किया तो पता चला कि वहाँ से ऐसी कोई सूचना प्रसारित नहीं की गई, फिर भी लुई और हैजल ने यह शब्द सुने थे और इसी आधार पर दोनों एक-दूसरे से मिले। जब ऐसी कोई सूचना रेडियो द्वारा प्रसारित नहीं की गई तो आश्चर्य का विषय था कि यह सूचना उनके कानों ने कैसे सुनी? परामनोविज्ञानवेत्ता इस घटना को सुनकर और विश्लेषण करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अतींद्रिय चेतना ऐसा ताना-बाना बुन सकती है, जिसके कारण दो घनिष्ठ व्यक्तियों के विचार एक-दूसरे से वार्त्तालाप कर रहे हों।

अमेरिका के मनःशक्ति संस्थान के निर्देशक डॉ. ब्रूकेल्स के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में इस प्रकार की अतींद्रिय क्षमताएँ विद्यमान हैं, जिन्हें वह प्रयत्लपूर्वक जाग्रत कर सकता है। कभी-कभी यह शक्तियाँ अनायास भी जाग्रत हो जाती हैं और व्यक्ति में ऐसी विशेषताएँ उत्पन्न हो जाती हैं जो आमतौर पर हर किसी में नहीं दिखाई पड़तीं। परामनोविज्ञान भी शोध, अन्वेषण और परीक्षणों के माध्यम से इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि मनुष्य की मानसिक शक्तियाँ इतनी सीमित नहीं हैं जितनी कि वह प्रतिदिन के कार्य-कलापों में प्रयुक्त होती दिखाई देती हैं। उसका एक बहुत बड़ा अंश तो प्रसुप्त ही पड़ा रहता है और लोग उसका कोई उपयोग नहीं कर पाते जिस प्रकार कि गड़ा या गाड़ा हुआ धन। व्यक्ति के पास कितनी ही संपदा हो सकती है, पर कोई भी व्यक्ति अपनी सारी जमा पूँजी का उपयोग नहीं कर पाता, उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य अपनी कुल जमा पूँजी—मानसिक शक्ति का पूरा-पूरा उपयोग नहीं कर पाता।

अंतर्दृष्टि संपन्न कितने ही भारतीय योगियों-ऋषियों का उल्लेख मिलता है, जो एक स्थान पर बैठे-बैठे विश्व की समस्त हलचलों एवं

भावी घटनाक्रमों का पता लगा लेते थे। महाभारत में वर्णन आता है कि अंधे धृतराष्ट्र को संजय ने अपनी दिव्यदृष्टि से उनके निकट बैठकर कुरुक्षेत्र की समस्त घटनाओं का वर्णन इस प्रकार किया था जैसे सामने प्रत्यक्ष देख रहे हों। ऐसे क्षमता संपन्न असंख्य ऋषियों का उल्लेख भारतीय धर्मग्रंथों में मिलता है। इसका उल्लेख करते हुए ऋषि 'योग तत्त्वोपनिषद्' में लिखते हैं—

यथा वा चित्त सामर्थ्य जायत योगिनो ध्रुवम् दूरश्रतिर्दूरदृष्टि अणाद् दूरगमस्तथा वाक् सिद्धिः कामरूपत्व महश्यकरणी तथा।

जैसे-जैसे चित्त की सामर्थ्य बढ़ती है, वैसे ही दूर-श्रवण, दूरदर्शन, वाक्सिद्धि, कामनापूर्ति आदि अनेकों विलक्षण दिव्य सिद्धियाँ मिलती चली जाती हैं।

दूरानुभूति की ये घटनाएँ विलक्षण मानवी सामर्थ्य का परिचय देती हैं। भारतीय अध्यात्मवेत्ताओं ने मस्तक पर दोनों भौंहों के बीच अवस्थित आज्ञाचक्र को दिव्य दृष्टि का केंद्र माना है। तत्त्ववेत्ताओं का कहना है कि हर मनुष्य में यह क्षमता मौजूद है कि वह भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों ही कालों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अब यह तथ्य विज्ञानसम्मत बनता जा रहा है।

महान आत्मीयता के आधार पर भी अनायास ही किन्हीं-किन्हीं व्यक्तियों में यह बेतार के तार का संपर्क जुड़ते पाया गया है। यह क्यों व कैसे होता है, इसका आत्मिकी के अतिरिक्त और किसी के पास कोई उत्तर नहीं।

'इन सर्च ऑफ दि ट्रुथ' पुस्तक में एक घटना का हवाला देते हुए श्रीमती रूथ मांटगुमरी लिखती हैं कि युद्धों के समय पाशविक वृत्तियाँ एकाएक आत्ममुखी हो उठती हैं, तब कैसे भी व्यक्तियों को अतींद्रिय अनुभूतियाँ स्पष्ट रूप से होने लगती हैं। युद्ध के मैदानों में लड़ने वाले सैनिक और उसके संबंधी रिश्तेदारों के बीच एक प्रगाढ़ भावुक संबंध स्थापित हो जाता है, वही इन अति मानसिक अनुभूतियों की सत्यता का

कारण होता है। ध्यान की गहन अवस्था में होने वाले भविष्य की घटनाओं के पूर्वाभास भी इसी कारण होते हैं कि उस समय एक ओर से मानसिक विद्युत दूसरी ओर से पूरी क्षमता के साथ संबंध जोड़ देती है। जिस प्रकार लेसर यंत्र, दूरदर्शी यंत्र हमें दूर के दृश्य व समाचार बताने, दिखाने लगते हैं, उसी प्रकार यह भाव संबंध हमें दूरवर्ती स्थानों की घटनाओं के सत्य आभास कराने लगते हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध की ही एक घटना का उल्लेख अपने एक अध्याय में करते हुए श्रीमती रूथ मांटगुमरी ने लिखा है कि चेकोस्लोवाकिया तथा थाईलैंड के भूतपूर्व राजदूत जो उसके बाद ही जापान के राजदूत नियुक्त हुए, श्री जॉनसन तब मुकड़ेन नगर में थे। युद्ध की आशंका से बच्चों को अलग कर दिया गया। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पैट्रोसिया जॉन ने कैलीफोर्निया के लैगुना बीच में एक मकान ले लिया और वहीं रहने लगीं।

इस बीच श्रीमती जॉनसन ने कई बार जापान के समाचार जानने के लिए अपना रेडियो मिलाया, पर रेडियो ने वहाँ का मीटर पकड़ा ही नहीं। एक दिन पड़ोस की एक स्त्री ने बताया कि उनका रेडियो जापानी प्रसारणों को (रेडियो ब्रॉडकास्टिंग) खूब अच्छी तरह पकड़ लेता है। तीन महीने तक श्रीमती जॉनसन ने इस तरफ कुछ ध्यान ही नहीं दिया। एक दिन उन्हें एकाएक रेडियो सुनने की इच्छा हुई। रेडियो का स्विच घुमाया ही था कि आवाज आई—हम रेडियो स्टेशन मुकड़ेन से बोल रहे हैं। अब आप एक अमेरिकन ऑफीसर वी. जॉनसन को सुनेंगे। विस्मय विस्फारित श्रीमती जॉनसन एकाग्रचित्त बैठ गईं। अगले ही क्षण जो आवाज आई वह उनके पति की ही आवाज थी। वे बोल रहे थे—"मैं वी. एलेक्सिस जॉनसन मुकड़ेन से बोल रहा हूँ जो भी कैलीफोर्निया अमेरिका का नागरिक इसे सुने कृपया मेरी पत्नी पैट्रोसिया जॉनसन या मेरे माता-पिता श्री व श्रीमती कार्ल टी जॉनसन तक पहुँचाए और बताए कि मैं यहाँ कैद में हूँ, खाना अच्छा मिलता है

और आशा है कि कैदियों की अदला-बदली में शीघ्र ही छूट जाऊँगा, अपनी पत्नी और बच्चों को प्यार भेजता हूँ।"

दो माह पश्चात जॉनसन कैदियों की बदली में छूटकर आ गए। पैट्रोसिया पति से मिलने गई तो वहाँ उसे पति से क्षणिक भेंट होने दी, क्योंकि कुछ समय के लिए श्री एलेक्सिस जॉनसन को तुरंत जहाज पर जाना था। पैट्रोसिया को थोड़ी ही देर में घर लौटना पड़ा। उसकी सहेलियाँ उसे घुमाने ले गईं, पर अभी वे एक सिनेमा में बैठी ही थीं कि पैट्रोसिया एकाएक उठकर बाहर निकल आई और अपने घर फोन मिलाया तो दूसरी ओर से एलेक्सिस जॉनसन बोले और बताया कि मैं यहाँ हूँ। मुझे जहाज में नहीं जाना पड़ा। पैट्रोसिया सिनेमा छोड़कर घर चली आई।

तीन माह तक कभी भी रेडियो सुनने की आवश्यकता अनुभव न करना और ठीक उसी समय जबकि पति संदेशा देने वाले हों रेडियो सुनने की अंतःकरण की तीव्र प्रेरणा का रहस्य क्या हो सकता है ? कौन सी शक्ति थी जिसने पैट्रोसिया को सिनेमा के समय फोन पर पहुँचने की प्रेरणा दी। जब इन बातों पर विचार करते हैं तो पता चलता है, कोई एक अदृश्य शक्ति है अवश्य जिसने मानवमात्र को एक भावनात्मक संबंध में बाँध अवश्य रखा है। हम जब तक उसे नहीं जानते, तब तक मनुष्य शरीर की सार्थकता कहाँ ? दूरवर्ती स्वजनों के साथ घटित होने वाली घटनाओं तथा भविष्यवक्ताओं का पूर्वाभास कितनी ही बार ऐसे विचित्र ढंग से सामने आता है कि न तो उन्हें झुठलाया जा सकता है और न उनका आधार अथवा कारण समझ में आता है।

विज्ञान के पास ऐसी अनेक गुत्थियों का कोई समाधान नहीं। कैसे किसी को अनायास ही वर्तमान, भूत या भविष्य की जानकारी होने लगती है व जो कुछ कहा जाता है, वह शत-प्रतिशत सही निकलता है। यह अभी तक सुलझाया नहीं जा सका।

शेफील्ड (ब्रिटेन) के श्री डेनिस होम्स और श्रीमती ईर्टलन होम्स की १८ माह की बच्ची ने एक दिन दीवार की ओर सिर उठाकर देखा और कहा—"मम्मी, पिक्चर हॉल।" इसके बाद घुटनों के बल आकर वह माँ की गोद में बैठ गई। लेकिन कुछ ही समय बीता कि अचानक उसी दीवार से एक भारी चौखटे वाली तस्वीर टूटकर, जहाँ पहल केसी बैठी हुई थी, ठीक वहीं आ गिरी।

इसके नौ महीने बाद होम्स परिवार छुट्टियाँ बिताने के लिए कार से 'यारमुथ' जा रहा था। केसी की यह पहली यात्रा थी। यारमुथ से आठ मील पहले सड़क पर एक मोड़ है और जहाँ मोड़ पूरा होता है, वहाँ ६-७ टूटी हुई पवन चक्कियाँ हैं, जो मोड़ पार करने पर ही दिखाई देती हैं। लेकिन मोड़ पूरा होने के पूर्व ही केसी बोल उठी—"मम्मी, वहाँ पवन चक्कियाँ हैं।" पत्नी और पति इस बात को सुनते ही अवाक् हो गए, लेकिन उन्होंने इसे निरा संयोग समझकर टाल दिया।

पर इस अस्वाभाविकता को कब तक मात्र संयोग समझा जाए। मार्च, १९७३ में एक दिन केसी की बुआ उसे शेफील्ड के सिटी रोड कब्रिस्तान में ले गईं, ताकि वहाँ वह अपने दादा की कब्र पर फूल चढ़ा सकें। सहसा केसी बोल उठी—"मेरा दोस्त डेविड भी यहीं दफन है।" आश्चर्यचकित होकर बुआ ने उसे दिखाने को कहा।

केसी उन्हें कब्रिस्तान के एक ढलवें कोने में ले गई, जहाँ एक पत्थर पर लिखा था—डेविड सुपुत्र क्लारा और फ्रैंक। मृत्यु १९०७ उम्र अठारह मास।

केसी से उसके माता-पिता ने काफी पूछा कि उसे डेविड की कब्र का पता कैसे लगा? लेकिन वह बराबर एक ही संक्षिप्त उत्तर देती रही—'मुझे पता था।'

ऐसी क्षमताओं की कल्पना सिद्धयोगियों में तो की जा सकती है, पर नन्हे बालकों में इस तरह की अद्भुत क्षमताओं का प्राकट्य विस्मयकारी

तथ्य जान पड़ता है। आत्मविद्या के ज्ञाताओं को इसमें कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं लगता। सृष्टि में जो भी कुछ पैदा होता है चाहे वह जीव-जंतु, पशु-पक्षी, मनुष्य हो अथवा वृक्ष-वनस्पति। शैशव, युवा (प्रौढ़) तथा जरा अवस्था का सामना सभी को करना पड़ता है। यह विज्ञानसम्मत प्रक्रिया साधना के क्षेत्र में भी कार्य करती है। साधनाएँ चाहे वह यम, नियम, प्राणायाम हों या मंत्र जाप, सोऽहं, खेचरी और मुद्रा बंध साधनाएँ, सबका उद्देश्य प्राणशक्ति को प्रखर बनाना है। प्रज्वलित प्राण ऊर्जा ही मस्तिष्कीय न्यूरॉन के लिए विद्युत का काम करती है, उसी के सहारे सिद्धयोगी टेलीविजन की तरह चाहे कहीं देखते, कहीं भी सुन लेते हैं। भूत और भविष्य उनके लिए वर्तमान में निवास करते हैं।

जब तक साधना द्वारा उपार्जित प्राण पक न जाएँ, तब तक साधक के दिन जोखिम भरे कसौटी के होते हैं। उनके न पकने तक विषय-वासना और तृष्णा-अहंता के वनचरों द्वारा उदरस्थ कर लिए जाने की आशंका तो रहती ही है, कहीं कोई अनुभूति हो तो बालबुद्धि उसे चमकाकर अपना अहंकार जताने की भी भूल करके उसे गँवा सकती है। कदाचित साधनाकाल में ही किसी की मृत्यु हो जाए तो लोकोत्तर जीवन में प्राण परिपाक क्रिया चलती रहती है, वही इतर जन्मों की प्रतिभा के रूप में दिखाई देती है।

जब केसी ४ वर्ष की थी, एक दिन श्रीमती होम्स वर्ग-पहेलियाँ हल कर रही थीं। उन्होंने अपने पति से पूछा—'बी' से प्रारंभ होने वाला पाँच अक्षरों का वह कौन सा शब्द है, जिसका अर्थ हवाई जहाज होता है ? श्री होम्स तथा उनकी १५ वर्षीय पुत्री जैकलीन इस प्रश्न का उत्तर न दे सके। तभी केसी कह उठी—'ब्लिम्प'। शब्दकोश ढूँढ़ने पर बात सही निकली।

अगस्त, १९७४ के दूसरे सप्ताह में होम्स परिवार छुट्टी मनाने यारमुथ गया। एक बुधवार को समुद्र के किनारे टहलते हुए केसी कहने

लगी—"आज दादाजी उदास हैं। कोई बुरी घटना घटने वाली है।" वह अपने पिता के एक पुराने सहकर्मी वेनराइट के पिता को 'दादाजी' कहा करती थी। शनिवार को होम्स परिवार शेफील्ड लौटा। वहाँ उन्हें पता चला कि बुधवार को दादाजी के भाई की मृत्यु हो गई थी।

एक दिन श्रीमती होम्स रसोईघर में काम कर रही थीं। तभी केसी वहाँ आई और बोली—"कैसी हो टिच?" श्रीमती होम्स ने पूछा कि मुझे इस नाम से पुकारने के लिए तुमसे किसने कहा? केसी ने जवाब देने के बदले पूछा—"नानाजी की कमर टेढ़ी थी और वे चपटी टोपी पहनते थे न?" वास्तव में केसी के नानाजी की कमर झुकी हुई थी। वे चपटी टोपी पहनते थे तथा केसी की माँ को प्यार से 'टिच' कहकर बुलाते थे, लेकिन वे तो केसी के जन्म से ४ वर्ष पूर्व ही मर चुके थे।

अप्रैल, १९७५ की बात है। वियतनाम युद्ध में अनाथ हुए बच्चों को हवाई जहाज द्वारा अमेरिका में बसाने के लिए लाया जा रहा था। टी. वी. में उसकी खबरें देखते समय केसी ने कहा—"बच्चे मर जाएँगे।" माँ ने कहा—"हाँ बच्चे भूखों मर रहे हैं।" लेकिन केसी ने उनकी बात काटते हुए कहा—"नहीं जहाज जल रहा है, बच्चे मर रहे हैं।" दो दिन बाद ही खबर आई कि एक जहाज के गिर जाने से कई बच्चे मर गए।

दूरदर्शन, भविष्यदर्शन को प्रामाणिकता की कसौटी पर कसने के लिए अमेरिका में एक शोध कार्यक्रम बनाया गया। राष्ट्रीय सुरक्षा संगठन और केंद्रीय जासूसी संगठन ने इन शक्तियों से युक्त 'इंगोस्वान' एवं 'पेट प्राइस' नामक दो व्यक्तियों का परीक्षण किया। यह कार्य स्टेनफोर्ड शोध संस्थान की प्रयोगशाला में संपन्न हुआ। किसी प्रकार के संदेह की गुंजाइश न रहे इसलिए हैराल्ड पुराफ और रसेल टार्ग

नामक दो भौतिकविदों को भी नियुक्त किया गया। इंगोस्वान एवं पेट प्राइस एक स्थान पर बैठकर किसी भी दूरवर्ती स्थान में हो रहे क्रिया-कलाप, स्थान की विशेषताओं का वर्णन उसी प्रकार कर देते थे जैसे प्रत्यक्ष सामने देख रहे हों।

एक प्रयोग पेट प्राइस पर किया गया। वैज्ञानिकों ने पेट प्राइस से कहा कि वह वर्जीनिया के एक गुप्त सैनिक केंद्र का पूरा विवरण प्रस्तुत करे। कुछ देर ध्यानमग्न होने के उपरांत प्राइस ने जो विवरण प्रस्तुत किया उसे सुनकर वैज्ञानिक विस्मित रह गए। उसने इतनी छोटी-छोटी बातों का भी उल्लेख किया, जिसकी जानकारी वहाँ रहने वाले अधिकारियों को भी नहीं रहती थी। प्राइस ने कहा कि उक्त सैनिक अड्डे के तलघर के ऑफिस में दो फाइलें रखी हैं जिनमें एक का नाम है 'फ्लाइंग ट्रेप' तथा दूसरी का 'मिनर्वा'। तलघर के उत्तर की दीवार के साथ लगी अलमारी पर लिखा है—'ऑपरेशन पुल'। उक्त स्थान का नाम प्राइस ने बताया 'टेस्टाक या हेफार्क'। तलघर के मूर्द्धन्य अधिकारियों का नाम कर्नल आर. जे. ह्वेमिल्स, मेजर जनरल जार्जनेश और मेजर जॉनकलहूम बताया। जिस तलघर का विवरण प्राइस ने प्रस्तुत किया वह एक गोपनीय प्रयोगशाला थी, जहाँ से सोवियत उपग्रहों की निगरानी रखी जाती थी। विशिष्ट सूत्रों द्वारा मालूम करने पर सभी बातें सही पाई गईं। उपस्थित अधिकारियों ने कहा कि प्राइस तथा स्वान कुशल जासूस का कार्य कर सकते हैं। उन्होंने इस कार्य के लिए बड़ी रकम देने का भी आग्रह किया, किंतु दोनों ने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि ईश्वरप्रदत्त इस सामर्थ्य का हम दुरुपयोग नहीं कर सकते।

दूरानुभूति संबंधी घटनाओं में आयरलैंड की एक घटना सर्वाधिक चर्चित है। वहाँ तिपेरारी नगर में रहने वाले एक व्यापारी युवक हिकी

ने न्यूफाउंडलैंड से अपने मित्रों को सूचित किया कि वह शीघ्र ही तिपेरारी पहुँच रहा है। हिकी तिपेरारी से न्यूफाउंडलैंड व्यापार के सिलसिले में आया था और उसने वहाँ काफी पैसा कमाया था। हिकी ने जिस तारीख को वापस पहुँचने की सूचना दी थी, उस तारीख को वह नहीं पहुँचा। उस तारीख को बीते भी एक सप्ताह बीत गया तो मित्रों ने पुलिस में रिपोर्ट की। पुलिस ने हिकी की खोज-बीन शुरू की। इस सिलसिले में पुलिस रोजर्स नामक एक सराय मालिक के पास पहुँची, जहाँ हिकी ठहरा था। रोजर्स ने बताया कि हिकी के हुलिए का एक युवक कुछ दिन पहले एक साथी के साथ जलपान के लिए आया था और उसके बहुत रोकने पर भी नहीं रुका था। पुलिस के यह पूछने पर कि वह उन दोनों को क्यों रोकना चाहता था? रोजर्स ने एक विचित्र कारण बताया कि उनके आने के कुछ समय पहले मेरी पत्नी ने स्वप्न में उन दोनों युवकों को जलपान के लिए सराय में आते देखा था और देखा था कि वे दोनों जलपान के बाद चले गए हैं। रास्ते में एक युवक ने दूसरे की हत्या कर दी और उसकी लाश को झाड़ी में छिपा दिया। रोजर्स की पत्नी ने बताया कि मैं वह स्थान बता सकती हूँ जहाँ युवक को छिपाया गया था।

रोजर्स के इस बयान के आधार पर पुलिस ने हिकी के साथी को खोजना आरंभ कर दिया। कुछ दिन बाद पुलिस ने काउफील्ड नामक उस युवक को एक गिरजाघर में पकड़ा। काउफील्ड वहाँ वेश बदलकर एक पादरी के सहायक के रूप में काम कर रहा था। किसी को भी विश्वास न हुआ कि देखने में इतना भोला-भाला और सीधा लगने वाला लड़का निर्मम हत्यारा भी हो सकता है। अदालत में काउफील्ड ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए कहा—"सराय में रोजर्स की पत्नी को अपनी ओर घूरते हुए देखकर मैंने हिकी की हत्या करने का इरादा बदल दिया था, लेकिन बाद में जैसे ही एकांत मिला, मुझ पर शैतान

सवार हो गया और मैंने उसके ही चाकू से उसका गला काट दिया।" काउफील्ड को इस हत्या के अपराध में फाँसी की सजा मिली।

इस तरह के अनेकों उदाहरण और प्रमाण हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि मनुष्य वही नहीं है जो कुछ वह प्रतीत होता है और उसकी शक्ति वहीं तक सीमित नहीं है, जितनी कि वह दिखाई देती है।

प्रश्न उठता है कि मनुष्य की विराट सत्ता जब अपने को प्रकट करने के लिए आकुल-व्याकुल है तो जिन्हें अतींद्रिय स्तर की क्षमताएँ अनायास ही प्राप्त हो जाती हैं। उनकी संख्या कुछेक तक ही सीमित क्यों है? क्यों नहीं सभी मनुष्यों में वह प्रकट होती है? इसका कोई उत्तर नहीं दिया जा सकता, पर इतना सच है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर के विराट और महान की झाँकी कभी न कभी मिलती अवश्य है। कई बार बिना किसी आधार या ठोस कारण के हुए बिना भी किए गए पूर्वानुमान आश्चर्यजनक रूप से सही सिद्ध होते हैं। ध्यानपूर्वक अपने अतीत के अनुभवों का विश्लेषण किया जाए तो इस तरह की कुछेक घटनाएँ सभी लोगों के जीवन में मिल जाएँगी। होता यही है कि इस तरह के अनुभवों या अनुमानों को सामान्य दिनचर्या का ही अंग मानकर उपेक्षा कर दी जाती है और अपने भीतर की अनंत संभावनाओं का परिचय होते-होते रह जाता है।

यह संयोग था अथवा दूरबोध

सन् १८९८ में एक अमेरिकी लेखक रॉबर्टसन का उपन्यास 'द रैंक ऑफ टाइरन' प्रकाशित हुआ था। उपन्यास की कथावस्तु टाइरन नामक विशाल जलयान से संबंधित थी। यह जहाज ७५,००० टन का विशाल यात्री-जलयान था। टाइरन की लंबाई ८८२ फीट की थी और इसमें तीन प्रोपेलर थे। जहाज में सवार यात्रियों की संख्या लगभग तीन हजार थी और लेखक ने पूरे उपन्यास में काल्पनिक टाइरन को कभी न

डूबने वाला जहाज बताया, लेकिन एक वर्ष अप्रैल के महीने में जहाज की पेंदी में बरफ की चट्टान टकराने के कारण एक छेद हो जाता है और जहाज में पानी भर जाता है। फलतः जहाज पानी में डूब जाता है। लेखक ने काल्पनिक जहाज और उसमें सवार यात्रियों में से सबके डूब जाने का कारण नावों का अभाव बताया था।

प्रकाशित होते ही उपन्यास की हजारों प्रतियाँ हाथोहाथ बिक गईं। रोमांचकारी उपन्यासों की लोकप्रियता प्रायः वर्ष-दो वर्ष तक ही रहती है, परंतु १४ वर्ष बाद उस उपन्यास की माँग एकदम अब तक के सभी उपन्यासों की लोकप्रियता का रिकार्ड तोड़ने लगी। कारण था कि उपन्यास में वर्णित काल्पनिक जहाज काल्पनिक दुर्घटना और काल्पनिक यात्रियों की काल्पनिक जल-समाधि शब्दशः सत्य सिद्ध हो उठी थी।

लोगों ने सन् १९१२ की अप्रैल १५-१६ के समाचार पत्रों में पढ़ा—१४ अप्रैल की रात्रि को ११ बजकर ४० मिनट पर एक यात्री-जहाज एस. एस. टाइरैनिक इंग्लैंड से अमेरिका जाते हुए उत्तर अटलांटिक में बरफ की चट्टान से टकराकर पेंदी में सूराख होने से डूब गया है। यह उस प्रसिद्ध यात्री-जहाज की प्रथम यात्रा थी। कितना आश्चर्यजनक संयोग था कि १४ वर्ष पूर्व मारगट रॉबर्टसन के उपन्यास 'द रैंक ऑफ टाइरन' का काल्पनिक जहाज भी टाइरन था। वह भी अपनी प्रथम यात्रा में ही डूब जाता है। उसमें वर्णित दुर्घटना टाइरैनिक दुर्घटना के विवरण से सटीक मेल खाती थी।

टाइरैनिक जहाज का भार भी लगभग ७५,००० टन था, उसकी ऊँचाई ८८२ फीट थी, उस जहाज में तीन प्रोपेलर लगे हुए थे और उसमें लगभग ढाई हजार यात्री सवार थे। काल्पनिक टाइरन जहाज से यह विवरण कितना संगति खाता है—यह प्रस्तुत लेख की प्रारंभिक पंक्तियों में देखा जा सकता है। आश्चर्य की बात तो यह कि काल्पनिक टाइरन के बारे में भी उन्हीं विशेषताओं का उल्लेख किया गया था, जिनके दावे

टाइरैनिक जहाज का निर्माण करने वाली जहाज कंपनी ने किए थे। उस जहाज कंपनी का दावा था कि यह जहाज कभी न डूबने वाला अद्वितीय जहाज था। १४ वर्ष पूर्व प्रकाशित उपन्यास में भी टाइरन के बारे में उपन्यास के लेखक ने इसी प्रकार का कथानक विकसित किया।

इसी तरह के और भी वर्णन उपन्यास में थे, जिन्हें टाइरैनिक-दुर्घटना का पूर्वाभास कहा गया है। स्वाभाविक ही यह प्रश्न उठता है कि यह मात्र एक संयोग था अथवा लेखक मारगट रॉबर्टसन ने किसी अंतःप्रेरणा या पूर्वाभास से प्रेरित होकर आने वाले कल का चित्र अपने उपन्यास में खींच दिया था।

किसी युग में भले ही यह कहा जा सकता था कि इस प्रकार की घटनाएँ मात्र संयोग के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं, परंतु अब वैज्ञानिक और डॉक्टर भी यह मानते हैं कि शरीर में इंद्रियों की चेतना का भी अस्थायी महत्त्व है। स्थायी रूप से दर्शन, श्रवण, घ्राण, उत्प्रेरण और संवेदन की सभी क्षमताएँ मस्तिष्क में विद्यमान हैं। थैलेमस नामक अंग भीतरी मस्तिष्क में होता है, जो सिर के केंद्र में अवस्थित है। यही केंद्र सभी तन्मात्राओं के ठहरने का स्थान है। इसी के ऊपर पीनियल ग्रंथि होती है जो देखने का काम करती है। 'पीनियल ग्लैंड' को तीसरा नेत्र भी कहते हैं। पिट्यूटरी ग्लैंड्स और सुषुम्ना शीर्ष (मेंडुला आब्लॉगेटा) जो शरीर के संपूर्ण अवयवों का नियंत्रण करते हैं, वे सब भी मन से संबंधित हैं। मस्तिष्क का यदि वह केंद्र काट दिया जाए तो शरीर के अन्य सब संस्थान बेकार हो जाएँगे।

विज्ञान और शरीर रचनाशास्त्र (एनाटॉमी) की इन आधुनिक जानकारियों का भंडार यद्यपि बहुत समृद्ध हो चुका है किंतु योग और भारतीय तत्त्वदर्शन की तुलना में ये जानकारियाँ समुद्र में एक बूँद की तरह हैं। भारतीय तत्त्ववेत्ताओं ने मन को सर्वशक्तिमय इंद्रियातीत ज्ञान का आधार माना है। उसकी शक्तियों को ही ब्रह्म में लीन कर देने से हाड़-मांस का मनुष्य सर्वजयी और कालदर्शी हो जाता है। महर्षि पतंजलि ने इस तत्त्वदर्शन का साधन स्वरूप बताते हुए कहा है—

परिणाम त्रय संयमाद तीतानागत ज्ञानस्।

—योगदर्शन, विभूतिपरिषद्

तीन परिणामों में (चित्त का) संयम करने से भूत और भविष्य का ज्ञान होता है।

मनो हि जगतां कतृ मनो हि पुरुषः स्मृतः।

—योगवासिष्ठ (३/९१/४)

संसार को रचने वाला पुरुष भी स्वयं मन ही है, मन में सब प्रकार की शक्तियाँ हैं।

उपर्युक्त घटना के संबंध में, उपन्यास और जहाज-दुर्घटना की सभी बातें समान रूप से घटित होने के बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले कुछ और विवरणों को जान लेना उचित होगा। उपन्यास में वर्णित घटनाक्रम तो चौदह वर्ष पूर्व का था, परंतु उसी समय जब टाइटैनिक जहाज का जलावतरण होने वाला था कुछ और लोगों को भी इसी प्रकार का आभास हुआ। एक अँगरेज व्यापारी जे. कैनन मिडिलटन ने २३ मार्च, १९१२ को टाइटैनिक से यात्रा करने के लिए टिकट खरीदा। लेकिन यात्रा से दस दिन पूर्व ही कैनन ने एक स्वप्न देखा। स्वप्न में उसे एक बड़ा जहाज समुद्र में उलटा तैरता दिखाई दिया। उसकी तली टूटी हुई दिखाई दे रही थी और बहुत से यात्री चीखते-चिल्लाते पानी में हाथ-पैर मार रहे थे।

स्वप्न इतना भयावह था कि घबराकर कैनन की आँख खुल गई। उसने सोचा ऐसे ही कोई स्वप्न होगा और वह उस बात को भूल गया। अगली रात जब वह फिर सोने लगा तो सोते ही फिर वही स्वप्न देखने लगा। इस बार उसने अपने आप को जहाज के ऊपर हवा में तैरते हुए देखा। दो दिन तक लगातार यही स्वप्न देखने के कारण कैनन इतना संदेहग्रस्त हो गया कि उसने अपनी यात्रा ही स्थगित कर दी। दुर्घटना के बाद उसने लंदन की 'सोसाइटी फार साइकोलॉजिकल रिसर्च' को पत्र लिखकर अपने स्वप्न की जानकारी दी। यह विवरण सोसाइटी की पत्रिका में भी प्रकाशित हुआ।

बैरी ग्रांट ने एक दूसरे ही प्रकार का विवरण 'फॉर मेमोरी' नामक पुस्तक में लिखा है जो सन् १९५६ में न्यूयॉर्क से प्रकाशित हुई थी। बैरी ग्रांट ने लिखा है कि जिस दिन टाइरैनिक जहाज अपनी पहली यात्रा का आरंभ कर रहा था, जहाज का भोंपू बज चुका था और इंजिन भी स्टार्ट हो चुका था, तब उसके पिता जेक मार्शल और उसकी माँ आइल ऑफ ह्वाइट दूसरी ओर मकान की छत पर जहाज को रवाना होते देख रहे थे। एकाएक न जाने क्या हुआ कि श्रीमती मार्शल अपने पति की बाँह पकड़कर जोर से चीखीं—'अरे''''' रे ! वह जहाज तो अमेरिका पहुँचने से पहले ही डूब जाएगा। कुछ करो, रोको उसे।'

जेक मार्शल ने अपनी पत्नी को सहलाया और कहा—"चिंता मत करो टाइरैनिक कभी भी डूब नहीं सकता।" लेकिन श्रीमती मार्शल अपने पति को इस प्रकार कहते देखकर गुस्सा हो गईं और कहने लगी—"तुम कैसी बातें कर रहे हो? मैं सैकड़ों लोगों को अपनी आँखों से पानी में डूबते हुए देख रही हूँ। क्या तुम उन्हें मरने दोगे?"

प्रसिद्ध लेखक जानेथन स्विफ्ट ने अपनी पुस्तक 'गुलिवर की यात्राएँ' में लिखा था कि मंगल ग्रह के चारों ओर दो चंद्रमा परिक्रमा करते हैं। इसमें एक की चाल दूसरे से दुगनी है। उस समय यह बात निरी कल्पना के सिवा कुछ नहीं लगती थी, क्योंकि तब इस बात का किसी को तनिक भी आभास नहीं था कि मंगल के इर्द-गिर्द चंद्रमा भी हो सकता है। पीछे डेढ़ सौ वर्ष बाद सन् १९७७ में वाशिंगटन की नेवल आबजरवेटरी में एक शक्तिशाली दूरबीन के सहारे यह देख लिया गया कि वास्तव में मंगल ग्रह के दो चंद्रमा हैं और एक की चाल दूसरे से दूनी है तो लोग आश्चर्यचकित रह गए कि उस साधनहीन जमाने में जब इस तरह की कल्पना कर सकना भी संभव नहीं था, तब किस प्रकार स्विफ्ट ने मंगल ग्रह की स्थिति बताई।

विज्ञान कथा लेखिका मेरिनिबेन ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'ए होल इन द स्पेस' में एक ऐसे तारे की कल्पना की थी जो सूर्य से आकार में दस गुना था और अरबों वर्ष बाद एक काला पिंड भर रह गया। यही

नहीं वह सिकुड़कर साठ किलोमीटर अर्द्धव्यास का रह गया किंतु उसका भार अभी भी सूर्य से दस गुना अधिक है।

उस समय जब यह उपन्यास लिखा गया, तब वैज्ञानिकों का इस ओर ध्यान भी नहीं गया था। सन् १९७२ में 'साइगनस-एक्स वन' नामक एक ब्लैक होल के अस्तित्व का पता चला जिसका अर्द्धव्यास साठ किलोमीटर है और वजन सूर्य से दस गुना अधिक। पृथ्वी से उसकी दूरी, घनत्व, गुरुत्वाकर्षण वहाँ की गतीय संभावना, आकर्षण शक्ति आदि सब कुछ उपन्यास में वर्णित विशेषताओं से मेल खाती थी।

क्या इन सब घटनाओं से मात्र संयोग कहकर छुटकारा पा लिया जाए? विज्ञान के लिए इतने प्रबल प्रमाण होने के बाद उनकी उपेक्षा कर पाना संभव नहीं है। भारतीय तत्त्वदर्शन तो पहले ही मानता है कि अतींद्रिय चेतना मानवी सत्ता के अस्तित्व में विद्यमान है। ऐसे घटनाक्रम तो मात्र उस भांडागार की एक झलक भर देते हैं।

कुछ समय पूर्व तक इस तरह की बातों पर संदेह किया जाता था और उनकी यथार्थता अविश्वसनीय समझी जाती थी। ऐसी घटनाओं को मात्र जादूगरी के अतिरिक्त और कोई महत्त्व नहीं दिया जाता था किंतु अब विज्ञान क्रमशः इन्हें ऐसे प्रामाणिक तथ्य मानता चला जा रहा है, जिसकी खोज भौतिकी के अन्य क्रिया-कलापों की तरह ही आवश्यक है। चेतना के संबंध में अभी तक जितनी जानकारी प्राप्त हो सकी है, उससे स्पष्ट हो चला है कि मनुष्य, मनुष्य के बीच पड़ी हुई गोपनीयता की दीवार उठ सकती है और न केवल एक-दूसरे की अंत:स्थिति को जाना जा सकता है अपितु कायिक या भौतिक उपकरणों का प्रयोग किए बिना भी दूरस्थ रहे व्यक्तियों से भावनात्मक आदान-प्रदान संभव है।

परामनोविज्ञान के अनुसार विश्वमानस (यूनिवर्सल माइंड) एक समग्र विचार-सागर है और वैयक्तिक चेतना उसकी अलग-अलग लहरें हैं। ये लहरें अलग-अलग दिखाई देने पर भी एक-दूसरे से

अविच्छिन्न रूप में संबद्ध हैं। उस समग्र विचार सागर से ही व्यक्तिगत चेतना, अनेक विधि चेतनाएँ और स्फुरणाएँ उपलब्ध करती हैं। अध्यात्म शास्त्र तो इस मान्यता को काफी पहले से प्रामाणिक और अनुभव सिद्ध मानता रहा है। उसके अनुसार समस्त प्राणी एक ही विराट चेतना का अस्तित्व हैं। काय कलेवर की दृष्टि से अलग दीखते हुए भी सभी प्राणी आत्मिक दृष्टि से एक ही हैं। व्यक्तिगत भौतिकता और स्वभावगत विभिन्नताएँ एक-दूसरे के विपरीत स्तर की दिखाई देने पर भी न केवल उनकी मूल प्रवृत्ति में साम्य है, वरन ऐसा पारस्परिक संबंध भी है जिसे पूर्णतया अलग कर पाना संभव नहीं हो सकता। अतींद्रिय क्षमताओं को प्रमाणित करने वाली घटनाएँ इसी तथ्य को सिद्ध करती हैं। भविष्य में जब इनका रहस्योद्‌घाटन होगा तो मनुष्य की सत्ता के बारे में यह विश्वासपूर्वक सप्रमाण कहा जा सकेगा कि वह उतना ही नहीं है, जितना कि शारीरिक और मानसिक क्षमता के आधार पर जाना-समझा जाता है।

❐

चमत्कार बनाम परामनोविज्ञान

चमत्कारों का तात्त्विक विश्लेषण करने पर जो निष्कर्ष सामने आता है, वह यह है कि बुद्धि की पकड़ की सीमा में जो घटनाएँ नहीं आतीं, वे चमत्कार मालूम पड़ती हैं अथवा जो बातें आमतौर पर प्रचलन में नहीं हैं, तभी तक चमत्कारी प्रतीत होती हैं। जैसे ही उनका रहस्य प्रकट होता है, उनमें कोई आश्चर्यजनक बात नहीं जान पड़ती। वैज्ञानिक आविष्कारों के आरंभिक दिनों में रेल, तार, टेलीफोन, वायुयान, मोटर आदि का नया-नया प्रचलन हुआ था। तब लोग इन्हें देखने के लिए सौ-दो सौ मील पैदल चलकर आते थे, पर धीरे-धीरे जब ये वस्तुएँ नित्य के व्यवहार में सर्वत्र प्रयोग में आने लगीं तो कुछ ही दिनों में उनका आकर्षण जाता रहा, वह चमत्कार समाप्त हो गया। पहली बार जब डायनामाइट का विस्फोट हुआ तो उसे एक अचरज की घटना मानी गई। विस्फोट का सूत्र हाथ लगते ही वह एक सामान्य बात हो गई है। जो परमाणु बम की बनावट तथा नाभिकीय विस्फोट के सिद्धांत से अपरिचित है, उनके लिए वह एक असाधारण घटना मालूम पड़ती है, पर भौतिक शास्त्र के ज्ञाताओं के लिए वह उतनी आश्चर्यजनक नहीं है। मानवविहीन उपग्रहों का धरती का गुरुत्वाकर्षण चीरकर अंतरिक्ष की कक्षा में प्रतिष्ठापित होकर चक्कर काटने लगने की घटनाएँ अज्ञ मस्तिष्कों को हैरत में डाल सकती हैं, पर विज्ञ उसे तकनीकी ज्ञान की एक विशेष विधा भर मानते हैं।

मानवी मन की बनावट ही ऐसी है कि वह असामान्य वस्तुओं अथवा घटनाओं को देखकर उनके पीछे किसी अविज्ञात गुप्त शक्ति की कल्पना करता है। बिजली चमकने जैसी प्राकृतिक बात का ठीक कारण न मालूम होने से यह मान्यता मन में बैठा ली गई कि इंद्र के हाथ में वज्र चमकता है। जो शरीरशास्त्र तथा आरोग्य विज्ञान से

अनभिज्ञ हैं अथवा जिन क्षेत्रों में आधुनिक प्रगति नहीं हुई है, उनमें आज भी यह विश्वास प्रचलित है कि बीमारियाँ, महामारियाँ किसी देवी-देवता के प्रकोप से पैदा होतीं तथा उनकी अनुकंपा से ही दूर हो सकती हैं। विभिन्न प्रकार के रोगों के उपचार के लिए उनमें भूतों, जिन्नों, प्रेतों, देवियों को भगाने वाले ओझा अभी भी पिछड़े हुए समाजों में पाए जाते हैं, पर विज्ञान की कसौटी पर उनकी मान्यताओं को मूर्खतापूर्ण माना जाता है तथा यह समझा जाता है कि उस समाज में घटनाओं की समीक्षा करने की बुद्धिसंगत कसौटी का अभाव है। पर विज्ञ समाज में ये अंधविश्वास नहीं पाए जाते।

अभी कुछ दशकों पूर्व तक प्रकृति की अनेकानेक घटनाएँ रहस्यमय बनी हुई थीं जिसे भारी आश्चर्य की दृष्टि से देखा जाता रहा है। बारमूड़ा त्रिकोण की घटना है, जहाँ कि सैकड़ों जलयान, वायुयान यात्रियों समेत गायब होते हैं, जिनका कोई अता-पता अब तक नहीं मिल सका है। उसके साथ अनेकों किंवदंतियाँ जुड़ गईं। किसी अन्यान्य ग्रह के लोगों के कारनामे, देवता का प्रकोप आदि मानकर संतोष किया जाता रहा, पर विज्ञान की नवीनतम खोजों ने उन सभी मान्यताओं को झुठलाकर यह सिद्ध कर दिया कि वह भी एक प्रकार का 'ब्लैक होल' है। ऐसे केंद्र एक ही सीध में पृथ्वी पर आठ स्थानों पर हैं, उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव पर भी दो केंद्र हैं। अंतरिक्ष में असंख्यों की संख्या में ब्लैक होल मौजूद हैं। इनकी आकर्षण शक्ति अत्यधिक प्रचंड है। हाथी जैसे विशालकाय जीव भी उसके आकर्षण से तिनके की तरह खिंचते हुए चले आते हैं। उस प्रचंड आकर्षण शक्ति के कारण ही जलयान, वायुयान बारमूड़ा त्रिकोण नामक स्थान पर जाकर गायब होते रहे। ऐसे प्रकृति के रहस्यों की संख्या असंख्यों है, जिनके विषय में आधुनिक विज्ञान को भी कुछ ज्ञान नहीं है, पर समझा जाता है कि उनके रहस्योद्घाटन में लगे वैज्ञानिक उन रहस्यों को उजागर करने में अगले दिनों समर्थ होंगे। पर जब तक कि प्रकृति की उन विलक्षणताओं का कारण नहीं ज्ञात हो जाता, तब तक के लिए वे रहस्य हैं।

सृष्टि का दूसरा घटक चैतन्य है, वह जड़ प्रकृति की तुलना में कहीं अधिक सामर्थ्यवान अधिक विलक्षण है। जीवधारियों के भीतर उस चेतना का छोटा अंश कार्य करता, अनेकों प्रकार के अचंभित करने वाले करतब दिखाता देखा जा सकता है। प्रकृति की तुलना में चेतना के अंतराल में बहुमूल्य उपलब्धियों के भांडागार मौजूद हैं, जिन्हें प्राप्त करके असंभव समझे जाने वाले कार्यों को भी संभव बनाया जा सकता है।

उपलब्धियों को करतलगत करने की एक सशक्त प्रयोगशाला मानवी काया के रूप में हर व्यक्ति को मिली हुई है। वह इतनी विलक्षण तथा उपयोगी यंत्रों से सुसज्जित है, जितनी प्रकृति की अन्य कोई भी संरचना नहीं है। शरीर, बुद्धि, मन, अंतःकरण में से प्रत्येक को विभिन्न आयाम समझा जा सकता है। अभी मानवी विकास की सीमा 'मैटर' तक सीमित है। शरीर और बुद्धि भी इसी सीमा के अंतर्गत आते हैं। बुद्धि का वह हिस्सा जो अधिक समर्थ है, चैतन्य है जिसे वैज्ञानिक ९३ प्रतिशत मानते हैं, अंतःप्रज्ञा (इंट्यूशन) का है, वह अविज्ञात का क्षेत्र है। सात प्रतिशत का ही समस्त व्यापार अनेकानेक वैज्ञानिक उपलब्धियों के रूप में परिलक्षित हो रहा है। बोलचाल की भाषा में जिसे मन कहा जाता है, उसकी अति नगण्य जानकारी मनुष्य को है। आधुनिक मनोविज्ञान को भी अपनी खोजों द्वारा जो प्राप्त हुआ है, वह अत्यल्प है। उसकी गहरी परतों की सामर्थ्यों का कुछ भी ज्ञान मनोविज्ञान को नहीं है। इसी क्षेत्र में अगणित रहस्यों की चाबी छिपी हुई है। अतींद्रिय सामर्थ्य के रूप में प्रख्यात शक्तियाँ इसी के अंतराल से उपजती तथा किन्हीं-किन्हीं महापुरुषों में प्रकट होती दिखाई पड़ती हैं। इच्छाशक्ति के चमत्कृत कर देने वाले, कुतूहलवर्द्धक कृत्य आएदिन देखे जाते हैं। वह और कुछ भी नहीं मन की एकाग्रता का एक छोटा सा पक्ष है। इसी की एक छोटी सामर्थ्य हिप्नोटिज्म को पश्चिमी मनःशास्त्रियों ने भी मान्यता दे दी है, उसके अभ्यास एवं सामर्थ्य के विकास के लिए कितने ही विद्यालय भी खुल गए हैं।

अमेरिका के विस्कासिन विश्वविद्यालय में हिप्नोटिज्म, योग की विधिवत शिक्षा दी जाने लगी है। वाशिंगटन विश्वविद्यालय में अतींद्रिय सामर्थ्य पर शोध कार्य चल रहा है। बोस्टन के एक महाविद्यालय में एक रहस्यमय विद्या पढ़ाई जा रही है—'द रिटोरिक ऑफ डस्क' (कोहरे की मूक भाषा)। ऑकलैंड विश्वविद्यालय में इच्छाशक्ति तथा प्राणशक्ति के प्रयोग-उपचार चल रहे हैं। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रो. इडेन का मत है कि भोगवादी संस्कृति से ऊबा हुआ मनुष्य राहत के लिए किसी अतिमानवी सामर्थ्य की खोज में भटक रहा है। पश्चिम के व्यक्ति में एक ऐसी व्याकुलता पैदा हो गई है, जो अनायास ही उसे पूरब की आध्यात्मिक विशेषताओं की ओर आकर्षित कर रही है।

अतींद्रिय क्षमताओं एवं अलौकिक घटनाओं के प्रमाण अब इतनी अधिक संख्या में सामने आने लगे हैं कि इसका कारण ढूँढ़ने के लिए मनीषा को विवश होना पड़ा है। कभी यह बातें अंधविश्वास या किंवदंती कहकर हँसी में उड़ाई जा सकती थीं। किंतु अब और विश्वस्त परीक्षण की कसौटी पर खरे उतरने वाले प्रमाणों की संख्या इतनी अधिक है कि उ[illegible]लाया नहीं जा सकता। ऐसी दशा में प्रकृति के विज्ञात नियमों से आगे बढ़कर यह देखना पड़ रहा है कि इन रहस्यों के पीछे किन सिद्धांतों एवं कारणों का समावेश है?

बीस-बाईस वर्ष पूर्व तक रूस में टैलीपैथी को जादूगरी और धोखाधड़ी की संज्ञा दी जाती थी तथा उसका तिरस्कारपूर्वक उपहास उड़ाया जाता था। इस संबंध में कहा जाता था कि विचार संप्रेषण के लिए मस्तिष्क में इलैक्ट्रो मैग्नेटिक तरंगें चाहिए, जबकि वहाँ उनका कोई अस्तित्व नहीं है। ऐसी दशा में इस प्रकार की कोई संभावना विज्ञान स्वीकार नहीं कर सकता। इस प्रतिपादन के अग्रणी वैज्ञानिक अलक्जेंडर किताई गोरोरस्की ने पीछे अपने विचार बदल दिए। विचार

बदलने का कारण यह था कि आगे चलकर उन्होंने कई परामनोवैज्ञानिक शोधों का निकट से अध्ययन किया और जो तथ्य सामने आए उनके अनुसार अपनी पूर्व धारणाओं की गलती को ईमानदारी के साथ स्वीकार कर लिया। अब रूस इस शोधकार्य में सबसे आगे है। 'साइकिक डिसकवरीज बिहाइंड आयरन करटेन' पुस्तक में ऐसे अनेकों परामनोवैज्ञानिकों व उनके कार्यों का उल्लेख है। यह विधा वहाँ अच्छी-खासी प्रतिष्ठा पा चुकी है।

अब मूर्द्धन्य मन:शास्त्रियों तथा वैज्ञानिकों ने पाश्चात्य जगत में भी परामानसिक शक्तियों का अस्तित्व स्वीकार कर लिया है। न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय के मन:शास्त्री डॉ. मेहलान वैंगनर ने एक सर्वेक्षण रिपोर्ट तैयार की है, जिसमें उल्लेख है कि अमेरिका के ९ प्रतिशत विचारशील व्यक्ति अतींद्रिय शक्ति को एक वास्तविकता, ४५ प्रतिशत एक प्रबल संभावना मानते हैं। फ्रांस, हालैंड, चेकोस्लोवाकिया, प. जर्मनी आदि के वैज्ञानिक भी परामानसिक शक्ति को एक सचाई के रूप में स्वीकार करने लगे हैं। प्रिंसटन विश्वविद्यालय के डॉ. रॉबर्ट डीन मानसिक शक्ति का पदार्थों पर प्रभाव का अध्ययन गंभीरता से कर रहे हैं। नोबुल पुरस्कार विजेता डॉ. ब्रायन जोसेफसन के अनुसार परामनोविज्ञान के नए क्षेत्र के आविष्कार के बाद भौतिकी की नई परिभाषा देनी होगी। रूसी प्रोफेसर लियोनिद वासिलयेव ने हिप्नोटिज्म तथा टेलीपैथी पर अनेकों प्रकार के प्रयोग किए हैं। अपने अनुसंधान निष्कर्ष में उन्होंने बताया है कि सुविकसित मानव मस्तिष्क विचार प्रसारण केंद्र की सफल भूमिका संपन्न कर सकता है।

अति मानसिक शक्तियों के प्रति बढ़ती हुई मानवी अभिरुचि मनुष्य की उस सहज जिज्ञासा का परिचय देती है, जो मात्र उथली बुद्धि के सहारे चेतना क्षेत्र के रहस्यों को जानना एवं पाना चाहती है। उन्हें चमत्कारिक इसलिए भी समझा जाता रहा है क्योंकि विज्ञान की यांत्रिक तथा बुद्धि की पकड़ सीमा से बाहर हैं। उन्हें जानने, सामर्थ्यों

को करतलगत करने की विद्या, बुद्धि तथा उसके द्वारा आविष्कृत विज्ञान के पास नहीं है, हो भी नहीं सकती। कारण कि बुद्धि का क्षेत्र तर्क, विज्ञान का मैटर है। पदार्थ एवं तर्क से परामानसिक शक्तियाँ परे हैं। उनका भी एक विज्ञान है, वह विज्ञान भौतिक विज्ञान के नियमों पर नहीं, चेतना विज्ञान के नियमों पर आधारित है। 'साइंस ऑफ सोल' आत्म विज्ञान के नाम से वह अध्यात्म जगत में जाना जाता है।

एक तथ्य सुनिश्चित रूप से जानना आवश्यक है कि पदार्थ विज्ञान की तरह चेतना विज्ञान के भी निश्चित नियम एवं विधान हैं। चमत्कार जैसी किसी कला का उस विधा में कोई स्थान नहीं है। बुद्धि उन्हें समझ नहीं पाती, इसलिए वह चमत्कार प्रतीत होता है। अन्यथा सब कुछ एक निर्धारित सिद्धांत से परिचालित है। साथ ही यह बात भी हृदयंगम करने योग्य है कि हाथ पर सरसों जमाना, वस्तुएँ मँगा देना, बाल से भभूत निकालना जैसी बाल-क्रीड़ाओं का अतींद्रिय सामर्थ्य से कोई संबंध नहीं है। बाजीगरी के वे कृत्य सिद्धियों के नाम पर जहाँ कहीं भी आते हों, समझना चाहिए वहाँ अवश्य ही धूर्तता का समावेश है। अतींद्रिय सामर्थ्य का प्रत्यक्ष स्वरूप बढ़े हुए संकल्पबल, प्राण शक्ति, वाक् शक्ति के रूप में उभरकर सामने आता तथा परिष्कृत-प्रखर व्यक्तित्व के रूप में अपना परिचय देता है। प्राणबल, संकल्पबल, विचारबल ही समीपवर्ती तथा दूरवर्ती वातावरण तथा संबद्ध व्यक्तियों को प्रभावित करता उन्हें जबरन अभीष्ट दिशा में चल पड़ने को बाध्य करता है।

संकल्पबल की चमत्कारी शक्ति—संकल्पबल की शक्ति असीम है। जिन्हें 'चमत्कार' की संज्ञा दी जाती है, वे इच्छाशक्ति द्वारा अंदर छिपी प्रसुप्त पड़ी विभूतियों का जागरण भर हैं। उन्हें हर कोई जगा सकता है। ऐसे अनेक उदाहरणों से गत कुछ दशकों की पुस्तकें रँगी पड़ी हैं जिनमें प्रत्यक्षत: चमत्कारी, किंतु परोक्ष रूप से अतींद्रिय सामर्थ्यों की जागृति की परिणति रूप में सामान्य व्यक्तियों के माध्यम से घटनाक्रम संपन्न हुए।

सन् १९१० की बात है। जर्मनी में एक ट्रेन में एक सोलहवर्षीय किशोर यात्रा कर रहा था। घर से भागकर वह कहीं दूर जाना चाहता था। पैसे के अभाव में वह टिकट न ले सका। टिकट निरीक्षक को देखते ही उसने सीट के नीचे छिपने की कोशिश की, पर वह टिकट निरीक्षक की निगाहों से बच न सका। उसने किशोर से टिकट माँगा। टिकट तो उसके पास था नहीं। पास में अखबार का टुकड़ा पड़ा था। किशोर ने उसे हाथ में उठाया, मन में संकल्प किया कि यह टिकट है और उसने टिकट निरीक्षक के हाथों में वह टुकड़ा थमा दिया। मन ही मन संकल्प दोहराता रहा—"हे परमात्मा ! उसे वह कागज का टुकड़ा टिकट दिखाई पड़ जाए।" उसके आश्चर्य का तब ठिकाना न रहा जब देखा कि निरीक्षक ने उस कागज के टुकड़े को वापस लौटाते हुए यह कहा—"क्या तुम पागल हो गए हो। तुम्हारे पास जब टिकट है तो सीट के नीचे छिपने की आवश्यकता क्या है ?"

'एबाउट माई सेल्फ' पुस्तक में बुल्फ मैसिंग नामक एक रशियन परामनोवैज्ञानिक उपर्युक्त घटना का उल्लेख करते हुए लिखता है कि उस दिन से मेरा पूरा जीवन बदल गया। पहले मैं अपने आप को असमर्थ, असहाय तथा मूर्ख मानता था, पर उस घटना के बाद यह विश्वास पैदा हुआ कि मेरे भीतर कोई महान शक्ति सोई पड़ी है जिसे जगाया-उभारा जा सकता है। उन प्रयत्नों में मैं प्राणपण से लग गया तथा सफल भी रहा।

सन् १९१० से १९५० तक मैसिंग को दुनिया भर में ख्याति मिली। उसकी संकल्प शक्ति की विलक्षणता का परीक्षण अनेकों बार विशेषज्ञ वैज्ञानिकों के समक्ष किया गया। स्टालिन जैसा मनोबल संपन्न व्यक्ति भी मैसिंग से डरने लगा। भयभीत होकर स्टालिन ने उसे गिरफ्तार करा लिया। स्टालिन को सुनी हुई बातों पर विश्वास न था। मैसिंग की परीक्षा उसने स्वयं ली। उसने मैसिंग से कहा—"तुम मेरे सामने अपनी सामर्थ्य का परिचय दो।" वह सहर्ष इसके लिए राजी हो गया।

स्टालिन ने आदेश दिया—"बंद कमरे से कल दो बजे तुम्हें छोड़ा जाएगा। एक व्यक्ति तुम्हें मास्को के एक बड़े बैंक में ले जाएगा। तुम्हें बैंक के कैशियर से एक लाख रुपये निकलवाकर लाना होगा। पर ध्यान रहे—तुम मात्र अपनी वाणी का प्रयोग कर सकते हो—किसी शस्त्र का नहीं।"

दूसरे दिन पूरी बैंक को सैनिकों से घिरवा दिया गया। दो व्यक्ति पिस्तौलें लिए छद्म वेश में मैसिंग के पीछे-पीछे चल पड़े ताकि वह किसी प्रकार की चाल न चल सके। ट्रेजरर के सामने उसे खड़ा कर दिया गया। मैसिंग ने जेब से एक कोरा कागज निकाला—एकाग्र नेत्रों से देखा तथा ट्रेजरर को दे दिया। ट्रेजरर गौर से उस कागज को उलट-पुलट कर देखकर आश्वस्त हो गया कि वह एक चैक है एवं सही है। उसे अपने पास रखकर उसने एक लाख रुपये मैसिंग को दे दिए। उसे लेकर वह स्टालिन के पास पहुँचा तथा सौंप दिया। सारा विवरण जानकर स्टालिन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

इतने पर भी स्टालिन को उसकी संकल्प शक्ति पर पूर्ण विश्वास न हुआ। उधर मैसिंग वह धनराशि लेकर खजांची के पास पहुँचा पूरी बात बताई। उसने चैक समझकर रखे हुए कागज को दोबारा देखा तो वह अब मात्र कोरा कागज था। धनराशि को वापस करते हुए मैसिंग ने खजांची से कहा—"महोदय ! क्षमा करें, यह संकल्प शक्ति का एक छोटा सा प्रयोग था। आपको इसका दंड न भुगतना पड़े, इस कारण लौटाने आया।" वह क्लर्क इस घटना से इतना अधिक हतप्रभ हुआ कि उसे हार्ट अटैक का दौरा पड़ा और कई दिनों तक भयावह सपने आते रहे।

इस रहस्य की और भी पुष्टि करने की दृष्टि से उधर स्टालिन ने मैसिंग को आदेश दिया कि सैनिकों की देख-रेख में बंद कमरे से निकलकर वह ठीक बारह बजे रात्रि को स्टालिन से मिले। स्टालिन के

लिए सैनिकों की कड़ी सुरक्षा वैसे भी रखी जाती थी, लेकिन यह व्यवस्था और कड़ी कर दी गई ताकि किसी प्रकार मैसिंग निकलकर स्टालिन तक पहुँचने न पाए। पर इन सबके बावजूद भी निर्धारित समय पर वह स्टालिन के समक्ष पहुँचकर मुस्कराने लगा। स्टालिन को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। पर जो सामने घटित हुआ था उससे इनकार भी कैसे कर सकता था? भय मिश्रित स्वर में उसने मैसिंग से पूछा कि यह असंभव कार्य तुमने किस प्रकार, किस शक्ति के सहारे किया थोड़ा विस्तार में बताओ।

मैसिंग बोला—यह और कुछ भी नहीं संकल्पबल का एक छोटा चमत्कार है। मैंने मात्र इतना किया कि मन को एक विचार—एक लक्ष्य के लिए एकाग्र किया। तत्पश्चात दरवाजे पर आकर सैनिक से निर्देश के स्वर में बोला—मैं बेरिया हूँ। ज्ञातव्य है कि बेरिया को रूसी फौज का सबसे बड़ा अधिकारी, स्टालिन के बाद सर्वशक्तिमान अधिकारी माना जाता था।

आपसे मिलने की इच्छा जाहिर करते ही सैनिकों की पहली कतार ने मुझे एक कमरे का नंबर बताया। वहाँ पहुँचने पर मैंने पुनः अपना परिचय पहले की भाँति दिया। सुरक्षा पर तैनात सैनिकों ने एक-दूसरे दिशा वाले कमरे की ओर संकेत किया। वहाँ भी सशस्त्र सैनिकों की एक टोली मौजूद थी। जनरल बेरिया का नाम सुनकर व उन्हें प्रत्यक्ष सामने देखकर उन सैनिकों ने भी अभिवादन करते हुए आगे का रास्ता बताया। इस प्रकार सैनिकों की सात टोली पार करने के बाद निश्चित रूप से यह मालूम हुआ कि आप कहाँ हैं? अपना पूर्व की भाँति परिचय देकर मैं यहाँ आ सकने में सफल हुआ।

मैसिंग के द्वारा स्टालिन को एक नया सूत्र हाथ लगा कि मनुष्य के भीतर कोई ऐसी अविज्ञात शक्ति विद्यमान है जो प्रत्यक्ष सभी आयुधों से भी अधिक समर्थ है। उसके द्वारा असंभव स्तर के कार्य भी पूरे किए

जा सकते हैं। स्टालिन ने मैसिंग की अतींद्रिय सामर्थ्य के परीक्षण के लिए एक दूसरे मनःशास्त्री इवान नैमोर को नियुक्त किया जो अपने समय का मनोविज्ञान का मूर्द्धन्य विशेषज्ञ माना जाता था। लंबे समय तक उसने मैसिंग का अध्ययन किया। अंततः उसने घोषणा की कि मन की अचेतन शक्ति चेतन की तुलना में अधिक सबल है। उसे उभारकर अच्छे-बुरे दोनों ही तरह के काम लिए जा सकते हैं। मैसिंग के भीतर का अचेतन प्रचंड रूप से जाग्रत है। उसी के माध्यम से वह प्रचंड संकल्प की प्रेरणा देकर दूसरों को सम्मोहित कर लेता है तथा अपने प्रयोजन में सफल हो जाता है। यह उसकी जाग्रत अतींद्रिय शक्ति ही है।

काशी के प्रसिद्ध संत और सिद्धयोगी स्वामी विशुद्धानंद ने जिनके एक शिष्य के साथ दो अन्य व्यक्ति भी थे, तीनों शिष्यों की जिज्ञासा का समाधान करते हुए कहा—"देखो इच्छाशक्ति के विषय में मैं तुम्हें एक प्रयोग बताता हूँ। तुम तीनों अपने हाथ की मुट्ठी बाँध लो और उसमें रखने लायक किसी भी वस्तु की इच्छा करो।" तीनों शिष्य मुट्ठी बाँधकर स्वामी जी के निर्देशानुसार मनचाही वस्तु की इच्छा करने लगे। कुछ देर बाद स्वामी जी ने कहा—"मुट्ठी खोलकर देखो तुम्हारी वस्तु मुट्ठी में आ गई है या नहीं।" तीनों शिष्यों ने मुट्ठी खोलकर देखा तो वह पहले जैसी ही खाली मिली। बाबा ने फिर कहा—"एक बार और मुट्ठी बाँधो तथा पुनः अपनी इच्छित वस्तु का चिंतन करो। तुम लोगों ने यह तो देख लिया कि मात्र इच्छा से कुछ नहीं होता। अब मैं तुम्हारी इच्छा में शक्ति का संचार करता हूँ।" तीनों शिष्यों ने फिर मुट्ठियाँ बंद कर लीं। बाबा के कहने पर जब उन्होंने खोला तो तीनों की मुट्ठियों में इच्छित वस्तुएँ विद्यमान थीं।

इस घटना की व्याख्या में सिद्ध योगी ने अपने शिष्यों को बताया कि तुम्हारी इच्छा और मेरी शक्ति दोनों मिलकर ही इच्छाशक्ति के रूप

में परिणत हो गईं। जब तुम स्वयं अपनी शक्ति का विकास कर लोगे तो तुम्हें इस शक्ति-संचार की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

जहाँ कहीं भी कभी चमत्कारी घटनाओं के विवरण मिलते हैं, इच्छाशक्ति ही उनके मूल में विद्यमान रहती है। अमेरिका के 'मिशिगन पैरासाइकिक रिसर्च सेंटर' ने इस प्रकार की कितनी ही घटनाओं के विवरण संकलित किए और उनकी वास्तविकता की जाँच की। रिसर्च सेंटर द्वारा खोज के लिए चुनी गई घटनाओं में से कई निराधार और झूठ थी, परंतु ऐसी भी कितनी ही घटनाएँ निकलीं जिनसे इच्छाशक्ति के चमत्कारों तथा उसके विकास संबंधी नियमों के बारे में नई जानकारियाँ मिलीं।

न केवल अमेरिका वरन रूस में भी जहाँ स्थूल से परे किसी वस्तु या शक्ति का अस्तित्व पहली ही प्रतिक्रिया में झूठ और फ्रॉड समझा जाता है। ऐसे कई व्यक्ति हैं जो अपनी इच्छाशक्ति की अद्‌भुत सामर्थ्य का वैज्ञानिक परीक्षण करवाने में भी निस्संकोच आगे आएँ। रूस की महिला श्रीमती मिखाइलोवा अपनी अतींद्रिय सामर्थ्य के लिए विख्यात हैं। एक रात्रि भोज में, जिसमें प्रसिद्ध रूसी पत्रकार वादिम मारिम भी उपस्थित थे, लोगों के आग्रह पर मिखाइलोवा ने कुछ चमत्कार प्रस्तुत कर उपस्थित लोगों को हैरत में डाल दिया। वादिम मारिम ने अपने पत्र के ताजे अंक में उस प्रदर्शन के बारे में लिखा— वहाँ मेज पर कुछ दूर एक डबल रोटी रखी थी। उन्होंने उसकी ओर निर्निमेष दृष्टि से देखना आरंभ किया। कुछ ही क्षणों के पश्चात डबल रोटी उनकी ओर सरकने लगी जैसे ही डबल रोटी उनके निकट आती वैसे ही श्रीमती मिखाइलोवा ने झुककर थोड़ा मुँह खोला और वह डबल रोटी उनके खुले मुँह में पहुँच गई।

रूस के ही एक दूसरे मनःचिकित्सक डॉ. बैंशनोई अपनी अलौकिक शक्ति के लिए विख्यात हैं। वे किसी भी वस्तु को केवल दृष्टि केंद्रित कर उसे अपने स्थान से हटा सकते हैं और किसी खाली पात्र को दूध या किसी अन्य वस्तु से परिपूर्णतः कर सकते हैं। इन बातों

पर रूस में अभी तक बहुत कम विश्वास किया जाता है। इसलिए कुछ वैज्ञानिकों ने बैंशनोई की परीक्षा लेने का कार्यक्रम बनाया। वैज्ञानिकों ने हर तरह से डॉ. बैंशनोई के प्रत्येक कार्यक्रम की परीक्षा ली और उनको बारीकी से जाँचा, परंतु कहीं कोई धोखा-धड़ी या हाथ की सफाई नहीं दिखाई दी।

डॉ. नैंडोर फीडोर ने एक पुस्तक लिखी है, 'विटबीन टू वर्ल्डस'। इस पुस्तक में उन्होंने कितनी ही ऐसी घटनाओं का उल्लेख किया है, जिनके मूल में स्थूल मानवीय सामर्थ्य से परे कोई शक्ति काम करती थी। इसमें उन्होंने अमेरिका की एक घटना दी है।

अमेरिका के प्रसिद्ध मनोविज्ञानशास्त्री डॉ. एलेक्जेंडर रॉल्फ ने मैक्सिको सिटी में कई विद्वानों एवं वैज्ञानिकों के समक्ष अपनी इच्छाशक्ति के प्रयोग द्वारा मेघरहित आकाश में १२ मिनट के अंदर बादलों को पैदा करके कुछ बूँदा-बाँदी भी करा दी थी। उस समय तो उपस्थित लोगों ने डॉ. रॉल्फ की शक्ति को एक संयोगमात्र कह दिया। इन्हीं डॉ. रॉल्फ ने सन् १९५४ में फिर १२ सितंबर को 'ओंटैरियो ओरीलियो' नामक स्थान पर खुले आम प्रदर्शन करने का निश्चय किया। पचासों वैज्ञानिक, पत्रकार, नगर के वरिष्ठ अधिकारी एवं मेयर भी उपस्थित थे। प्रामाणिकता की कसौटी के लिए तेज फोटो खींचने वाले कैमरे भी लगा दिए गए थे।

दर्शकों ने आसमान में छाए बादलों में से जिस बादल पट्टी को हटाने के लिए कहा—डॉ. एलेक्जेंडर ने आठ मिनट के भीतर उसको अपनी दृष्टि जमा कर गायब करके दिखा दिया। कैमरों ने भी बादल हटने के चित्र दिए। लोग इसे संयोगमात्र न समझें, इसलिए उन्होंने यह प्रयोग तीन बार दोहराकर दिखाया, तब वहाँ के सभी प्रमुख समाचार-पत्रों ने इस समाचार को क्लाउड डेस्ट्रायर बाई डॉक्टर (बादल डॉक्टर द्वारा नष्ट किए गए) का शीर्षक देकर सुर्खियों के साथ प्रकाशित किया था। उपर्युक्त प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए एक प्रसिद्ध विज्ञानी ऐलेन

एप्रागेट ने 'साइकोलॉजी टूडे' पत्रिका में एक विस्तृत लेख छापकर यह बताया कि मनुष्य की इच्छाशक्ति अपने ढंग की एक सामर्थ्यवान विद्युत धारा है और उसके आधार पर प्रकृति की हलचलों को प्रभावित कर सकना पूर्णतया संभव है। इसे जादू नहीं समझना चाहिए।

इच्छाशक्ति द्वारा वस्तुओं को प्रभावित करना अब एक स्वतंत्र विज्ञान बन गया है, जिसे साइकोकाइनेसिस (पी. के.) कहते हैं। इस विज्ञान पक्ष का प्रतिपादन है कि ठोस दीखने वाले पदार्थों के भीतर भी विद्युत अणुओं की तीव्रगामी हलचलें जारी रहती हैं। इन अणुओं के अंतर्गत जो चेतनातत्त्व विद्यमान हैं उन्हें मनोबल की शक्ति तरंगों द्वारा प्रभावित, नियंत्रित और परिवर्तित किया जा सकता है। इस प्रकार मौलिक जगत पर मन:शक्ति के नियंत्रण को एक तथ्य माना जा सकता है।

अमेरिका के ही ओरीलिया शहर में डॉ. एलेक्जेंडर रॉल्फ ने एक शोध संस्थान खोल रखा है, जहाँ वस्तुओं पर मन:शक्ति के प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन विधिवत किया जा रहा है। कई शोधकर्त्ता और विद्यार्थी इस संस्थान में शोध निरत हैं। डॉ. एलेक्जेंडर रॉल्फ ने एक पुस्तक भी लिखी है—'पॉवर ऑफ माइंड'। इसमें उन्होंने इच्छाशक्ति संबंधी विभिन्न प्रमाण दिए हैं। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है कि 'प्रगाढ़ ध्यानशक्ति द्वारा एकाग्र मानव-मन शरीर के बाहर स्थित सजीव एवं निर्जीव पदार्थों पर भी इच्छानुकूल प्रभाव डाल सकता है।' रॉल्फ का कहना है कि यह एक निर्विवाद तथ्य है कि इच्छा-शक्ति द्वारा स्थूलजगत पर नियंत्रण संभव है।

इलेक्ट्रॉनिक ब्रेन के निर्माण की प्रक्रिया में ज्ञात तथ्यों द्वारा वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अवचेतन मन एक सशक्त कंप्यूटर की तरह कार्य करता है और जिस तरह एक कंप्यूटर में की गई फीडिंग के अनुसार ही वह क्रियाशील होता है, उसी तरह अवचेतन भी अपना आहार हमारे विचारों तथा संकल्पों से प्राप्त करता है। इस तरह अवचेतन

की दिशा मनुष्य की इच्छाओं से ही प्रभावित होती है। स्पष्ट है कि इस अवचेतन पर व्यक्ति प्रयास द्वारा पूर्ण नियंत्रण पा सकता है और तब सभी अलौकिक लगने वाले काम कर सकता है।

व्यक्ति स्वयं अपना विद्युत चुंबकीय बल-क्षेत्र या गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र विकसित कर सकता है, ऐसा वैज्ञानिक मानने लगे हैं। पर उसका आधार एवं प्रक्रिया अभी तक वे नहीं जान पाए हैं। मनुष्य चलता-फिरता बिजलीघर है। उसका भीतरी समस्त क्रिया-कलाप स्नायु जाल में निरंतर बहते रहने वाले विद्युत-प्रवाह से ही संपादित होता है। बाह्य जीवन में ज्ञानेंद्रियों और कर्मेंद्रियों द्वारा जो विभिन्न प्रकार की हलचलें होती हैं, उनमें खरच होने वाली ऊर्जा वस्तुतः मानव विद्युतशक्ति ही होती है। रक्त आदि रसायन तो मात्र उसके निर्माण में ईंधन भर का काम देते हैं।

शक्ति के बिजली, भाप, तेल जैसे साधनों में ही अब विचारशक्ति को भी स्थान मिलने जा रहा है। अध्यात्म शास्त्र में तो आरंभ से ही विचारों को ऐसा समर्थ तत्त्व माना गया है जो न केवल अपने उद्‌गमकर्त्ता को वरन पूरे संपर्क क्षेत्र को भी प्रभावित करता है। इतना ही नहीं उससे दूरवर्ती एवं अपरिचित प्राणियों तथा पदार्थों तक को प्रभावित किया जा सकता है।

टैलीपेथी के एक प्रयोगकर्त्ता इंग्लैंड के ए. एन. क्रीरी ने बहुत समय तक यह प्रयोग चलाया कि बंद कमरे में क्या हो रहा है? इसकी जानकारी प्राप्त की जाए। इस प्रयोग में एक महिला अधिक दिव्यदृष्टि संपन्न सिद्ध हुई।

क्रीरी ने अपने प्रयोगों की सचाई जाँचने के लिए अनेक प्रामाणिक व्यक्तियों से अनुरोध किया। जाँचने वालों में डबलिन विश्वविद्यालय के प्रो. सर विलियम बैरट इंग्लैंड की सोसाइटी फार साइकिक रिसर्च के प्रधान प्रो. सिजविक जैसे मूर्द्धन्य लोग थे। उन्होंने कई तरह से उलट-पुलटकर इन प्रयोगों को देखा और उन प्रयोगों के पीछे निहित सचाई

को स्वीकारा। इन प्रयोगों की जाँच का विवरण 'विचार संप्रेषण समिति' ने प्रकाशित किया है।

दूरवर्ती लोगों के मस्तिष्कों को प्रभावित करने और उनमें अभीष्ट परिवर्तन लाने की दिशा में आस्तिकों और नास्तिकों को समान रूप से सफलता मिली है। इन प्रयोगों में रूसी वैज्ञानिक भी योगसाधकों के पदचिह्नों पर चल रहे हैं। लेनिनग्राड विश्वविद्यालय के शरीरविज्ञानी प्रो. लियोनिद वासिलयेव ने दूरसंचार क्षमता का प्रयोग एक शोध कार्यों में निरत मंडली पर किया। उनने अपने प्रयोगों द्वारा चालू शोध के प्रति धीरे-धीरे उदासीन होने और उसे छोड़कर अन्य शोध में लाने का प्रयोग चालू रखा और उसके सफल परिणाम पर सभी को आश्चर्य हुआ। लियोनिद ने अपना अभिप्राय गुप्त कागजों में नोट करके साथियों को बता दिया था कि वे अमुक शोध मंडली की मन:स्थिति में उच्चाटन उत्पन्न करके अन्य कार्य में रुचि बदल देंगे। कुछ समय में वस्तुतः वैसा ही परिवर्तन हो गया और उस मंडली ने बड़ी सीमा तक पूरा किया गया अपना कार्य रद्द करके नया कार्य हाथ में ले लिया।

इतिहास-पुराणों की बात छोड़ दें तो भी प्रत्यक्षदर्शियों की प्रामाणिक साक्षियों के आधार पर यह विश्वास किया जा सकता है कि विचार और शब्द के मिश्रण से बनने वाले मंत्र-प्रवाह का प्रयोग आत्मशक्ति द्वारा करके वातावरण तक में हेर-फेर करने में सफलता मिल सकती है।

अफ्रीकी जनजातियों की तरह ही मलाया में भी मंत्रविद्या के प्रयोग और चमत्कार बहुत प्रस्तुत होते रहते हैं। वहाँ के मांत्रिक ऋतु-परिवर्तन को भी प्रभावित करते देखे गए हैं। यह भी संकल्प शक्ति का चमत्कार है।

मलाया के राजा परमेसुरी अगोंग की पुत्री राजकुमारी शरीफा साल्वा के विवाह की तैयारियाँ बहुत धूम-धाम से की गईं। उत्सव बहुत शानदार मनाया जाना था। किंतु विवाह के दिन घनघोर वर्षा आरंभ

हो गई और सर्वत्र पानी भरा नजर आने लगा। अब उत्सव का क्या हो? निदान रहमान नामक एक तांत्रिक महिला राजकीय सम्मान के साथ बुलाई गई और उससे वर्षा रोकने के लिए कुछ उपाय-उपचार करने के लिए कहा गया। फलतः एक आश्चर्यचकित करने वाला प्रतिफल यह देखा गया कि पानी तो उस सारे क्षेत्र में बरसता रहा, पर समारोह के लिए जितनी जगह नियत थी उस पर एक बूँद पानी भी नहीं गिरा और उत्सव अपने निर्धारित क्रम के अनुसार ठीक तरह संपन्न हो गया। ठीक ऐसी ही एक और भी घटना उस देश में सन् १९६४ में हुई थी। उन दिनों राष्ट्रमंडलीय हॉकी दल खेलने आया था और उसे देखने के लिए भारी भीड़ उपस्थित थी। दुर्भाग्य से नियत समय पर भारी वर्षा आरंभ हो गई। कुआलालंपुर नगर पर घनघोर घटाएँ बरस रही थीं। अब खेल का क्या हो? मैदान पानी से भर जाने पर तो सूखना बहुत दिनों तक संभव नहीं हो सकता था। इस विपत्ति से बचने का उपाय वहाँ के मांत्रिकों की सहायता लेना उचित समझा गया। अस्तु, मलाया स्पोर्ट्स अध्यक्ष ने आग्रहपूर्वक रैम्बाऊ के जाने-माने मांत्रिक को बुलाया। उसका प्रयोग भी चकित करने वाला रहा। खेल के मैदान पर एक अदृश्य छतरी तन गई और वहाँ एक बूँद भी न गिरी, जबकि चारों ओर भयंकर वर्षा के दृश्य दिखाई देते रहे।

एक और तीसरी घटना भी अंतर्राष्ट्रीय चर्चा का विषय बनी रही है। 'दि इयर ऑफ दि ड्रैगन' फिल्म की शूटिंग वहाँ चल रही थी। जिस दिन प्रधान शूटिंग होनी थी उसी दिन वर्षा उमड़ पड़ी, इस अवसर पर भी अब्दुल्ला बिन उमर नाम के मांत्रिक की सहायता ली गई और शूटिंग क्षेत्र पूरे समय वर्षा से बचा रहा।

'द रॉयल एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी' के तत्कालीन अध्यक्ष तथा अन्य प्रमुख लोगों ने श्री डेनियल डगलस होम की विलक्षण कलाबाजियों का आँखों देखा विवरण लिखा है। प्रख्यात वैज्ञानिक, रेडियो मीटर के

निर्माता, थीलियम व गोलियम के अन्वेषक सर विलियम क्रुक्स ने भी श्री डेनियल डगलस होम का बारीकी से अध्ययन कर उन्हें चालाकी से रहित पाया था।

इन करिश्मों में हवा में ऊँचे उठ जाना, हवा में चलना और तैरना, जलते हुए अँगारे हाथ में रखना आदि हैं। सर विलियम क्रुक्स अपने समय के शीर्षस्थ रसायनशास्त्री थे। उन्होंने भलीभाँति निरीक्षण कर श्री डी. डी. होम की हथेलियों की जाँच की, उनमें कुछ भी लगा नहीं था। हाथ मुलायम और नाजुक थे। फिर श्री क्रुक्स के देखते-देखते श्री डी. डी. होम ने धधकती अँगीठी से सर्वाधिक लाल चमकदार कोयला उठाकर अपनी हथेली में रखा और रखे रहे। उनके हाथ में छाले, फफोले कुछ भी नहीं पड़े।

'रिपोर्ट ऑफ द डायलेक्टिकल सोसाइटीज कमेटी ऑफ स्पिरिचुअलिज्म' में लॉर्ड अडारे ने भी श्री होम का विवरण दिया है। आपने बताया कि एक 'सियान्स' में वे आठ व्यक्तियों के साथ उपस्थित थे। श्री डी. डी. होम ने दहकते अँगारे न केवल अपनी हथेलियों पर रखे, बल्कि उन्हें अन्य व्यक्तियों के भी हाथों में रखाया। सात ने तो तनिक भी जलन या तकलीफ के बिना उन्हें अपने हाथ में रखा। इनमें से ४ महिलाएँ थीं। दो अन्य व्यक्ति उसे सहन नहीं कर सके। लॉर्ड अडारे ने ऐसे अन्य अनेक अनुभव भी लिखे हैं, जो श्री होम की अति मानसिक क्षमताओं तथा अदृश्य शक्तियों से उनके संबंध पर प्रकाश डालते हैं। इनमें अनेक व्यक्तियों की उपस्थिति में कमरे की सभी वस्तुओं का होम की इच्छामात्र से थर-थराने लगना, किसी एक पदार्थ जैसे टेबिल या कुरसी आदि का हवा में चार-छह फुट ऊपर उठ जाना और होम के इच्छित समय तक वहाँ उनका लटके रहना, टेबिल के उलटने-पलटने के बाद भी उस पर सामान्य रीति से रखा संगमरमर का पत्थर और कागज, पेंसिल का यथावत बने रहना आदि है।

सर विलियम क्रुक्स ने भी एक सुंदर हाथ के सहसा प्रकट होने, होम के बटन में लगे फूल की पत्ती को उस हाथ द्वारा तोड़े जाने, किसी वस्तु के हिलने, उसके इर्द-गिर्द चमकीले बनने और फिर उस बादल को स्पष्ट हाथ में परिवर्तित होने तथा उस हाथ को स्पर्श करने पर कभी बेहद सर्द, कभी उष्ण और जीवंत लगने आदि के विवरण लिखे हैं।

विचारों की शक्ति का सामान्य जीवन में भी महत्त्वपूर्ण उपयोग होता रहता है। उन्हीं के आधार पर क्रिया-कलाप बनते हैं और तद्नुरूप परिणाम सामने आते हैं। बहिरंग व्यक्तित्व वस्तुतः मनुष्य के अंतरंग की प्रतिक्रिया भर ही होता है। विचारों से समीपवर्ती लोग सहयोगी-विरोधी बनते हैं। निंदा और प्रशंसा के आधारों की जड़ें अंतःक्षेत्र में ही गहराई तक धँसी होती हैं। सामान्य स्तर की विचारशक्ति भी जीवन का क्रम बनाती है तो फिर विशेष स्तर की विचारशक्ति जो योगाभ्यास के साधना विज्ञान के आधार पर तैयार की जाती है, चमत्कारी परिणाम उत्पन्न कर सके तो इसे अबुद्धिसम्मत नहीं कहा जा सकता। मंत्र शक्ति के प्रयोगों में जहाँ दंभ और बहकावे की भी भरमार रहती है, वहाँ ऐसे प्रामाणिक प्रसंगों की भी कमी नहीं होती, जिनके आधार पर इस अलौकिकता का आधार समझ में न आने पर उसे अविश्वस्त नहीं कहा जा सकता।

कई बार ऐसा भी देखा गया है कि किन्हीं व्यक्तियों में वस्तुओं को विचारशक्ति से प्रभावित करने की क्षमता अनायास ही पाई जाती है। उन्होंने कोई योगाभ्यास नहीं किया तो भी वे अदृश्य को देख सकने—अविज्ञात को जान सकने से समर्थ रहे। ऐसी विलक्षणता हर मनुष्य के अचेतन मन में मौजूद है। मानवी विद्युत सामान्यतया दैनिक क्रिया-कलापों में ही खरच होती रहती है, पर यदि उसे बढ़ाया जा सके तो कितने ही विलक्षण कर्म भी हो सकते हैं। साधना से दिव्य क्षमता बढ़ती है और उससे कितने ही प्रकार के असामान्य कार्य कर

सकना संभव होता है। यह आध्यात्मिक उपलब्धियाँ अगले जन्मों तक साथ चली जाती हैं। ऐसे लोग बिना साधना के भी पूर्वसंचित संपदा के आधार पर चमत्कारी आचरण प्रस्तुत करते देखे गए हैं। ऐसे ही लोगों में एक नाम यूरीगेलर का भी है।

अँगरेजी भाषा की वैज्ञानिक पत्रिकाएँ 'नेचर' और 'न्यू साइंटिस्ट' विश्वविख्यात हैं। उनका संपादन और प्रकाशन विश्व के मूर्द्धन्य वैज्ञानिकों द्वारा होता है और उसमें प्रकाशित विवरणों को खोज युक्त एवं तथ्यपूर्ण माना जाता है। इन्हीं पत्रिकाओं में यूरीगेलर के शरीर में पाई गई अतींद्रिय शक्ति के प्रामाणिक विवरण विस्तारपूर्वक छपे हैं।

यूरीगेलर का जन्म २० दिसंबर, १९४६ में तेलअबीब (इजरायल) में हुआ। उसकी माता जर्मन थीं। जब यह युवक साइप्रस में पढ़ता था, तभी उसने अपने में कुछ विचित्रताएँ पाईं और उन्हें बिना किसी संकोच या छिपाव के अपने परिचितों को बताया-दिखाया। वह जब घड़ियों के निकट जाता तो सुइयाँ अकारण ही अपना स्थान छोड़कर आगे-पीछे हिलने लगतीं। स्कूल के छात्रों के सामने अपनी दृष्टि मात्र से धातुओं की बनी चीजों को मोड़कर ही नहीं, तोड़कर भी दिखाया।

उसने खुले मैदान में बिना किसी परदे या जादुई लाग-लपेट के—हर प्रकार के संदेहों का निवारण का अवसर देते हुए अनेक प्रदर्शन किए हैं। किसी को किसी चालाकी की आशंका हो तो वह यह अवसर देता है कि तथ्य को किसी भी कसौटी पर जाँच लिया जाए। उसे जादूगरों जैसे करिश्मे दिखाने का न तो अभ्यास है और न अनुभव। सम्मोहन कला उसे नहीं आती। जो भी वह करता है स्पष्टतः प्रत्यक्ष होता है। स्टैनफोर्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा आयोजित परीक्षण गोष्ठियों में मूर्द्धन्य वैज्ञानिकों के सम्मुख वह अपनी कड़ी परीक्षा में पूर्णतया सफल होता रहा है। जर्मनी और इंग्लैंड के प्रतिष्ठित पत्रकारों के सम्मुख उसने अपनी विशेषता प्रदर्शित की है और टेलीविजन पर उसके प्रदर्शनों को दिखाया गया है।

यूरीगेलर दूर तक अपनी चेतना को फेंक सकता है। वहाँ की स्थिति जान सकता है। इतना ही नहीं प्रमाणस्वरूप वहाँ की वस्तुओं को भी लाकर दिखा सकता है। उससे जब ब्राजील जाने और वहाँ की कोई वस्तु लाने के लिए कहा गया तो उसने वैसा ही किया और वहाँ का विवरण सुनाने के साथ-साथ ब्राजील में चलने वाले नोटों का एक बंडल भी सामने लाकर रख दिया।

फिलाडेलफिया के दो वैज्ञानिकों के कक्ष में यूरीगेलर को मुलाकात देनी थी। उन प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के नाम हैं—ऑर्थर यंग ओर टेडबास्टिन। इन दोनों के सम्मुख भेंट देकर जब वे जीने से उतरकर नीचे की मंजिल में आए तो ऊपर के कमरे में रखी भारी मूर्ति भी नीचे उतर आई और उनके कंधे पर बैठ गई।

पूछने पर यूरीगेलर ने बताया कि यह क्षमता उन्हें बिना किसी प्रयास के अनायास ही मिली है। इन प्रदर्शनों में उन्हें तंत्र-मंत्र आदि कुछ नहीं करना पड़ता। अदृश्य दर्शन के लिए एक साधारण सा परदा खड़ा कर लेते हैं और उसी पर उतरते चित्रों को टेलीविजन की तरह देखते रहते हैं।

वह मेज पर रखे हुए धातुओं के बने मोटे उपकरणों को दृष्टि मात्र से मोड़ देने या तोड़ देने की विद्या में विशेष रूप से निष्णात है। ऐसे प्रदर्शन वह घंटों करता रह सकता है। सन् १९६९ में उसने आँखों में मजबूत पट्टी बँधवाकर और ऊपर से सील कराकर इजरायल की सड़कों पर मोटर चलाई थी।

उसकी अदृश्य दर्शन की शक्ति भी अद्‌भुत है। उसकी माता को जुए का चस्का था। जब वह घर लौटती तो यूरीगेलर अपने आप ही बता देता कि वह कितना पैसा जीती या हारी है।

इसकी अतींद्रिय विशेषताओं का परीक्षण वैज्ञानिकों और अन्वेषकों की मंडलियों के समक्ष कितनी ही बार किया गया, किंतु वह निर्भ्रांत ही सिद्ध हुआ है। पदार्थ वैज्ञानिक अपनी हठधर्मिता के कारण अभी भी

यूरीगेलर की इच्छाशक्ति की सामर्थ्य को मान्यता नहीं देते, पर इससे कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। जो प्रत्यक्ष है, उसे नकारा नहीं जा सकता।

'स्ट्रेंज हैपनिंग्स' एवं 'बिटवीन टू वर्ल्डस' पुस्तकों में ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख है, जैसी कि ऊपर-वर्णित की गई, जिनमें इच्छा-शक्ति के बल पर चमत्कारी प्रदर्शनों का वर्णन है।

इस सामर्थ्य को प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्रायड ने किस प्रकार मान्यता दी, यह भी एक ऐतिहासिक विस्मयकारी प्रसंग है।

२५ मार्च, १९०९ की घटना है। मनोविज्ञान शास्त्र के पितामह फ्रायड से मिलने के लिए उनके समकालीन मनःशास्त्री जुंग गए। चर्चा का विषय परामानसिक शक्ति का प्रभाव था। फ्रायड इस तरह की किसी विशेष मानसिक क्षमता पर विश्वास नहीं करते थे। जुंग ने अपने पक्ष के समर्थन में अपनी मनःक्षमता का एक विशेष प्रदर्शन किया। फ्रायड के कमरे में रखी वस्तुएँ इस तरह थर-थराने लगीं मानो कोई तूफान उनकी उठक-पटक कर रहा हो। पुस्तकों की आलमारी में पटाखा फूटने जैसा धमाका हुआ। इससे फ्रायड चकित रह गए और उन्होंने अपनी असहमति का तुरंत परित्याग कर दिया। उन्होंने माना कि मानवी मन विलक्षण है। उसमें विलक्षण सामर्थ्यों का भांडागार है। एकाग्रचित्त हो, अपनी संकल्प शक्ति से वह कुछ भी कर दिखा सकता है।

विचार संप्रेषण की प्रक्रिया में भी संकल्प शक्ति का ही प्रयोग निहित है। दैनंदिन जीवन में भी उस सामर्थ्य का एक छोटा सा पक्ष देखने को मिलता है। कितने ही व्यक्ति दूसरों को अपनी बातों, अपने विचारों से प्रभावित कर असंभव कार्य करा लेते हैं। इच्छानुरूप दिशा में दूसरों को मोड़ने में भी सफल हो जाते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि वे प्रभावित व्यक्तियों की तुलना में कहीं अधिक संकल्पवान हैं।

वह शक्ति बीज प्रत्येक में विद्यमान है। उसे अंकुरित एवं विकसित किया जा सकता है। साधना के, तप-तितिक्षा के छोटे-बड़े प्रयोग इसलिए किए जाते हैं कि किसी प्रकार संकल्प शक्ति के जगने एवं सुदृढ़ होने का अवसर मिले। भौतिक क्षेत्र में अभीष्ट स्तर की सफलता के लिए तदनुरूप प्रयास करने पड़ते हैं। मन:क्षेत्र आत्मिकी की परिधि में आता है। किसी-किसी में संस्कारों वश सहज ही उभार आता है, जबकि किसी-किसी को पुरुषार्थ साधना करनी पड़ती है। आवश्यकता अपने अंत: की इस सामर्थ्य को पहचानने, आत्मशोधन एवं आत्मविकास के प्रयोजन पूरे कर संकल्प शक्ति के सुनियोजन भर की है। जिन्हें भी चमत्कार के दर्शन को समझना हो परामनोविज्ञान के उपर्युक्त तथ्यों एवं मानव की सूक्ष्म संरचना को ध्यान में रखना चाहिए।

❐

पूर्वाभास एवं भविष्य-कथन कितना सही, कितना तर्कसम्मत?

क्या मनुष्य वही देखता है, जो सामने परिलक्षित होता है। साधारण स्थिति में तो ऐसा ही होता देखा जाता है। नाक के ऊपर लगे हुए दो नेत्र गोलक केवल सामने की दिशा में और कुछ दाएँ-बाएँ एक नियत आकार-प्रकार-डायमेन्शन तक वस्तुएँ देख सकते हैं। इसे फील्ड ऑफ विजन कहते हैं। सूक्ष्मदर्शी व दूरदर्शी यंत्रों की मदद से इच्छानुसार वस्तुओं के आकार-प्रकार को बड़ा देखा जा सकता है, चाहे वे समीपस्थ हों अथवा दूरस्थ। किंतु यह दृश्य वर्तमानकाल के ही हो सकते हैं, भूत या भविष्य के नहीं। टेलीविजन, फोटोग्राफी, चित्रों के माध्यम से भूतकाल की जानकारी हो सकती है। इतने भर से मनुष्य को संतुष्ट होना पड़ा है।

क्या भविष्य को प्रत्यक्ष आँखों के समक्ष देखा जा सकता है? प्रश्न उठ सकता है कि भविष्य का पूर्व निर्धारित रूप कैसे देखा जा सकता है? यदि भविष्य निश्चित है तो कर्म पुरुषार्थ की क्या आवश्यकता? अत: बुद्धि की अटकल, कंप्यूटर सब कुछ के बावजूद भविष्य कथन की बात गले नहीं उतरती। बुद्धिवाद का युग है तो यह चिंतन स्वाभाविक भी है।

किंतु पूर्वाभास एवं भविष्य-कथन के अनेकों ऐसे घटनाक्रम दैनंदिन जीवन में प्रकाश में आते हैं, जिनका विज्ञान के पास कोई उत्तर नहीं। वे कालांतर में सही भी होते पाए गए हैं। ऐसी एक नहीं, अनेकों घटनाएँ हैं जिनमें सामान्य अथवा असामान्य व्यक्तियों में यह क्षमता अकस्मात उभरी या विकसित की गई एवं समय की कसौटी पर वे खरे उतरे।

प्रयत्नपूर्वक आत्मबल को बढ़ाना और सिद्धियों के क्षेत्र में प्रवेश करना यह एक तर्क और विज्ञानसम्मत प्रक्रिया है, किंतु कभी-कभी

ऐसा भी देखने में आता है कि कितने ही व्यक्तियों में इस प्रकार की विशेषताएँ अनायास ही प्रकट हो जाती हैं। उन्होंने कुछ भी साधन या प्रयत्न नहीं किया तो भी उनमें ऐसी क्षमताएँ उभरीं जो अन्य व्यक्तियों में नहीं पाई जातीं। असामान्य को ही चमत्कार कहते हैं। अस्तु, ऐसे व्यक्तियों को चमत्कारी माना गया। होता यह है कि किन्हीं व्यक्तियों के पास पूर्वसंचित ऐसे संस्कार होते हैं, जो परिस्थितिवश अनायास ही उभर आते हैं। वर्षा के दिनों में अनायास ही कितने पौधे उपज पड़ते हैं, वस्तुतः उनके बीज जमीन में पहले से ही दबे होते हैं। यही बात उन व्यक्तियों के बारे में कही जा सकती है जो बिना किसी प्रकार की अध्यात्म साधनाएँ किए ही अपनी अलौकिक क्षमताओं का परिचय देते हैं।

भविष्य दर्शन की विशेषता को अतींद्रिय क्षमता के अंतर्गत ही गिना जाता है। इस विशेषता के कारण संसार भर में जिन लोगों ने विशेष ख्याति प्राप्त की है, उनमें एंडरसन, सेमबैंजोन, पीटर हरकौस, फ्लोरेंस फादर पियो आदि के नाम पिछले दिनों पत्र-पत्रिकाओं के पृष्ठों पर छाए रहे हैं।

पूर्वाभास में भविष्य-कथन के जो सही उदाहरण सामने आते रहते हैं, उनका कारण क्या हो सकता है ? उसका तथ्यसंगत उत्तर एक ही हो सकता है—अध्यात्म स्तर की विशेषता, दिव्यदृष्टि। वह अदृश्य जगत की हाँडी में पकती हुई भावी संभावनाओं का स्वरूप और समय जान सकता है। कर्म का प्रतिफल समयसाध्य है। इस मध्यवर्ती अवधि में यह पता चलाना कठिन पड़ता है कि किस कृत्य की परिणति कितने समय में, किस प्रकार, किस स्थान में होगी ? इतने पर भी उसका स्वरूप बहुत कुछ इस स्थिति में होता है कि कोई दिव्यदर्शी उसका पूर्वाभास प्राप्त कर सके। यह संभावना है भी या नहीं, इस संदर्भ में कितनी ही महत्त्वपूर्ण साक्षियाँ समय-समय पर सामने आती रहती हैं।

प्रथम विश्वयुद्ध के दिन, पहली नवंबर—आठवर्षीय एंडरसन घर की बैठक में खेल रहा था। सहसा वह रुका। माँ के पास पहुँचा

और उसका हाथ पकड़ उसे बैठक में ले गया, जहाँ उसके भाई नेल्सन की फोटो लगी थी। नेल्सन कनाडा की सेना में कप्तान था और मोर्चे पर था। एंडरसन ने भाई की फोटो की ओर संकेत करते हुए माँ से कहा—"माँ, देखो तो, भैया के चेहरे पर बंदूक की गोली लग गई है और वे जमीन पर गिरकर मर गए हैं।"

"चुप मूर्ख ! ऐसी अशुभ बात तेरे दिमाग में कहाँ से आई ? अब कभी ऐसे कुछ न बोलना और न ऐसा सोचा करो।" माँ ने झिड़का। पर एंडरसन तो अपनी बात पर जिद सी करने लगा। इस घटना के दो-तीन बाद जब तार आया कि १ नवंबर, १९१८ को गोली लगने के कारण नेल्सन की मृत्यु हो गई है, तो पूरा परिवार शोक में डूब गया। पर एंडरसन की बातें याद कर वे सब विस्मय से भी भर उठे।

इसके बाद तो मुहल्ले-पड़ोस में उसने कई बार ऐसी भविष्य संबंधी बातें बताईं कि लोग उसे सिद्ध भविष्यवक्ता मानने लगे। घर वालों ने उसका ध्यान बँटाने के लिए उसे शीघ्र ही एक खान की नौकरी में लगा दिया। पर थोड़े ही दिनों में एंडरसन ने यह कहते हुए इस नौकरी को छोड़ दिया कि मैं उन्मुक्त आत्मा हूँ। योग के संस्कार मुझ में हैं। निरंतर आत्मपरिष्कार ही मेरा लक्ष्य है। भौतिक परिस्थितियों से, पैसे-रुपयों के लोभ से मैं बँधा नहीं रह सकता।

इसके बाद एंडरसन व्यापारी जहाजों द्वारा विश्व-भ्रमण के लिए निकल पड़ा। इसी बीच उसने अपने शरीर का व्यायाम, योगाभ्यास, संयम और परिश्रम द्वारा विकास कर अतुलित बल अर्जित किया। लोहे की छड़ कंधे पर रखकर उसमें १५-२० व्यक्तियों तक को लटकाकर चल-फिर लेना, कार उठा लेना, शक्तिशाली, गतिशील मोटर को हाथ से रोक देना, उन्मत्त और क्रुद्ध साँड़ों को पछाड़ देना आदि के करतब उसके लिए मामूली बात हो गई। उसने इनके सफल प्रदर्शन किए और ख्याति पाई।

लोग कहने लगे कि यह कोई पूर्वजन्म का योगी है। पूर्व जन्म में किए गए योगाभ्यास का प्रभाव और प्रकाश इसमें अब भी शेष है। ७० वर्ष से अधिक की आयु में भी एंडरसन लोहे की नाल दोनों हाथ से पकड़कर सीधी कर देते हैं। शारीरिक शक्ति के साथ ही उन्होंने अतींद्रिय सामर्थ्य भी विकसित की और वे जीन डिक्सन, कीरो तथा टेनीसन से भी अधिक सफल भविष्यवक्ता माने जाते हैं। एंडरसन भारत आकर योग एवं ज्योतिष संबंधी ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। यद्यपि उनकी यह आकांक्षा परिस्थितियोंवश पूर्ण नहीं हो सकी।

इंग्लैंड में ही सैमबैंजोन नामक एक व्यक्ति हुआ है। उसे बाल्यावस्था से ही पूर्वाभास की शक्ति प्राप्त थी। सात वर्ष का था, तभी उसे यह पूर्वाभास हुआ कि बाहर गए पिताजी एक ट्राम से घर आ रहे हैं और वह ट्राम दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से वे घायल हो गए हैं। माँ को बैंजोन ने यह बताया तो मिली झिड़की। पर जब कुछ समय बाद आहत पिताजी घर आए और उन्होंने बताया कि ट्राम दुर्घटना से ही वे आहत हुए हैं तो दुखी माँ विस्मित भी हो उठी।

बाल्यावस्था में ही सैमबैंजोन ने अनेकों बार पूर्वाभास की अपनी शक्ति का परिचय दिया। उसके घर में क्रिसमस पर प्रीतिभोज दिया गया। मित्रों, पड़ोसियों, परिजनों ने उपहार दिए। सबके जाने के बाद माँ ने सैमबैंजोन से उपहार का एक डिब्बा दिखाकर पूछा—"तू बड़ा भविष्यदर्शी बनता है, बता इस डिब्बे में क्या है?" डिब्बा जैसा आया था, वैसा ही बंद था। सैम ने वे सारी वस्तुएँ गिन-गिनकर बता दीं जो उस डिब्बे में बंद थीं।

बिना किसी लेन्स या यंत्र के डिब्बे के भीतर की वस्तु का यह ज्ञान इस तथ्य का द्योतक है कि विचारों और भावनाओं की दिव्य तथा सूक्ष्मशक्ति द्वारा बिना किसी माध्यम के गहन अंतराल में छिपी वस्तुओं को भी देखा-जाना जा सकता है।

अपने एक परिचित पेंटर के बारे में एक दिन ऑफिस में बैठे बैंजोन ने सहसा चल-चित्रवत दृश्य देखा कि वह एक दीवार की

पेंटिंग करते समय सीढ़ियों से लुढ़ककर गिर पड़ा है। तीन दिन के भीतर ही यह दुर्घटना इसी रूप में हुई और मुहल्ले के एक मकान की दीवार की रँगाई के समय सीढ़ी से फिसलकर गिरने से उक्त पेंटर की मृत्यु हो गई। बैंजोन का पूर्वाभास सत्य सिद्ध हुआ।

प्रख्यात भविष्यवक्ता पीटर हरकौस की विलक्षण अतींद्रिय शक्ति विश्वप्रसिद्ध है। वह घटनास्थल की किसी भी वस्तु को छूता और उसे उस स्थान से संबंधित अतीत में घटी, वर्तमान में घट रही तथा भविष्य में घटित होने वाली घटनाएँ स्पष्ट दिखने लगतीं।

पेरिस में कई शीर्षस्थ अधिकारियों की उपस्थिति में हरकौस का आह्वान किया गया कि वह अपनी अतींद्रिय सामर्थ्य का प्रदर्शन करे। पीटर हरकौस को कंघा, कैंची, घड़ी, लाइटर और बटुआ देकर कहा गया कि आप इनके आधार पर एक मामले का पता लगाएँ। पीटर ने पाँचों को छुआ और ध्यानमग्न हो गया। उसने दो वस्तुओं को अनावश्यक कहकर लौटा दिया। फिर बटुए को हाथ में थामकर खोया हुआ सा बोलने लगा—एक गंजा आदमी है। वह सफेद कोट पहने है। एक पहाड़ी के पास छोटे से मकान में वह रहता है, जिसके बगल से रेलवे-लाइन गुजरती है। मकान से कुछ दूर एक गोदाम है। दोनों स्थानों के बीच एक शव पड़ा है। यह हत्या का मामला है। यह हत्या किसी निकोला नामक व्यक्ति द्वारा उसे जहर मिला दूध पिलाकर की गई है। लगता है यह सफेद कोटधारी गंजा ही निकोला है, जो इन दिनों जेल में है और वह शव एक महिला का है। निकोला भी मर गया है।

पीटर हरकौस की सभी बातें तो सही थीं। पर जेल में बंद निकोला जीवित था। तभी अधिकारियों को समाचार दिया गया कि दो घंटे पहले निकोला ने आत्महत्या कर ली है।

सन् १९५० में जब प्रसिद्ध संग्रहालय वेस्टमिनिस्टर एबी से 'स्कोन' नामक हीरा चोरी गया तो पूरे ब्रिटेन में तहलका मच गया। गुप्तचरों और पुलिस की दौड़-धूप व्यर्थ गई। चोरी का सुराग तक नहीं मिला। तब पीटर हरकौस की सहायता ली गई। हरकौस लंदन पहुँचा।

एबे के दरवाजे की एक लोहे की चादर का टुकड़ा अपने हाथ में लेकर पीटर बताने लगा—पाँच लड़कों ने 'स्कोन' को चुराया है और कार द्वारा ग्लासगो ले गए हैं। हीरा एक महीने में मिल जाएगा। चोरों के भागने का रास्ता भी हरकौस ने नक्शे में बता दिया। अंत में एक माह में हीरा मिला और हरकौस की हर बात सत्य निकली।

एम्सटरडम में एक बार एक फौजी कप्तान का लड़का समुद्र में गिर गया। शव मिल नहीं रहा था। पीटर हरकौस ने अपनी अंत:दृष्टि से शव को तलाशने का स्थान बताया। वह मिल गया।

बेल्जियम के जॉर्ज कार्नेलिस के हत्यारों का पता भी हरकौस ने ही लगाया था। अमेरिकी डॉ. अंडिया पूरिया के आमंत्रण पर पीटर अमेरिका गए। वहाँ उन पर कई प्रयोग किए गए।

पीटर हरकौस ने स्वयं ही 'साइक' नाम से अपना संस्मरण-संग्रह लिखा व प्रकाशित कराया है; जो उसकी अतींद्रिय शक्तियों पर प्रकाश डालता है।

पूर्वाभास की यह क्षमता कई व्यक्तियों में असाधारण तौर पर विकसित होती है। द्वितीय महायुद्ध में ऐसे लोगों का दोनों पक्षों ने उपयोग किया था। हिटलर के परामर्शमंडल में पाँच ऐसे ही दिव्यदर्शी भी थे। उनका नेतृत्व करते थे—विलियम क्राफ्ट।

इसी मंडली के एक सदस्य श्री डी. ह्वोल ने तत्कालीन ब्रिटिश विदेशमंत्री लॉर्ड हेली फिक्स को सर्वप्रथम एक भोज में अनुरोध किए जाने पर हिटलर की योजनाओं का पूर्वाभास दिया। वे सच निकलीं और श्री ह्वोल को फौज में कैप्टन का पद दिया गया। श्री डी. ह्वोल हिटलर की अनेक योजनाओं की जानकारी अपनी दिव्यदृष्टि से दे देते। ब्रिटेन तदनुसार रणनीति बनाता। फौजी अफसरों को जिम्मेदारियाँ सौंपते समय भी उनके भविष्य-बावत श्री डी. ह्वोल से सलाह ली जाती। उन्हीं के परामर्श पर माउंटगुमरी को फील्ड मार्शल बनाया गया। उनकी सफलताएँ सर्वविदित हैं। जापानी जहाजी बेड़े को नष्ट करने की योजना भी श्री ह्वोल की सलाह से बनी थी। महायुद्ध की समाप्ति के

बाद श्री ह्वोल ने ब्रिटिश शासक को परामर्श देने का कार्य छोड़ दिया था और धार्मिक लेखन का अपना पुराना काम करने लगे थे।

न्यूजर्सी नगर की रहने वाली फ्लोरेंस से उसके साथी नेबेल ने एक बार कहा—"आप सबके बारे में भविष्य बताती ही रहती हैं। मेरे बारे में भी बताइए।" नेबेल प्रसारण-सेवा का कर्मचारी था। उसने माइक फ्लोरेंस की ओर बढ़ाया तो फ्लोरेंस ने उसे दाहिने हाथ में थाम लिया। १५-२० सेकंड तक वह शांत रही। फिर बोली—"आप शीघ्र ही दूसरे राज्य का प्रसारण करेंगे।"

नेबेल हँस पड़ा। उन्होंने कहा कि आपसे मैं यह एक अच्छा मजाक कर बैठा। अब अगर हमारे इस कार्यक्रम को हमारी कंपनी के किसी संचालक ने सुना होगा तो दूसरे राज्य में जब जाऊँगा, तब यहाँ से अवश्य मेरा कार्यकाल समाप्त समझिए।

कुछ मिनटों बाद कंट्रोलरूम में फोन घनघना उठा। वह नेबेल के लिए ही फोन था। कंपनी के जनरल मैनेजर ने उसे बताया कि शीघ्र ही न्यूयॉर्क से एक कार्यक्रम शुरू किया जाएगा। वहाँ तुम्हें ही भेजने का निर्णय लिया गया है। किंतु यह घोषणा कल होगी। अभी इसे गुप्त ही रखना है। फ्लोरेंस ने जो कुछ बताया है, वह है तो सच, पर उसे यह बात कैसे ज्ञात हुई ? यही आश्चर्य का विषय है। नेबेल फ्लोरेंस से यह भी नहीं कह पा रहा था कि आपकी भविष्यवाणी सच है।

फ्लोरेंस ने अपनी पराशक्ति के बल पर खोए हुए व्यक्तियों, वस्तुओं और हत्या के मामलों जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर संबद्ध व्यक्तियों तथा पुलिस को आवश्यक जानकारी देकर मदद की।

जुलाई, १९६४ में ही अमेरिका में बाल्टीमोर शहर की एक ग्यारह वर्षीया बच्ची घर से सहसा गायब हो गई। जिसका कुछ पता पुलिस नहीं लगा पा रही थी। वहाँ के अखबार 'न्यूज अमेरिकन' ने अपने संवाददाता को फ्लोरेंस के पास भेजा। फ्लोरेंस ने बताया कि उस बालिका के पड़ोस के घर के तहखाने में कुछ दिखाई दे रहा है, उसे देखा जाए।

इसके दो दिन बाद पुलिस अधिकारी जब लड़की की डायरी लेकर फ्लोरेंस के पास पहुँचे तो उसे हाथ में लेने के बाद फ्लोरेंस ने निश्चित रूप से यह घोषणा कर दी कि इस बालिका की हत्या की जा चुकी है और लाश पड़ोस के घर में तहखाने में दफन है। खोज करने पर लड़की का शव वहीं मिला।

एक बार एक लड़की की हत्या के प्रकरण में पुलिस जब कोई सुराग न पा सकी तो शव के पास पड़ा एक सिक्का लेकर फ्लोरेंस के पास पुलिस अधिकारी पहुँचा। उस सिक्के को हाथ में लेकर फ्लोरेंस ने बताया कि यह आखिरी बार जिस व्यक्ति के हाथ में था—वह साढ़े पाँच फुट लंबा है, १९० पौंड वजन वाला है तथा जिस इमारत में यह शव प्राप्त हुआ है, उसके पास वाले मदिरालय में आता-जाता रहता है। पुलिस ने इस आधार पर खोज की और शीघ्र ही अपराधी को पकड़ लिया। रूमाल, पुस्तक, डायरी, पेन, अँगूठी आदि कोई भी वस्तु छूकर वह संबद्ध व्यक्ति के बारे में बता सकती थी। पर फ्लोरेंस ने अनुभव किया कि ऐसे प्रत्येक परा-दर्शन के बाद, जिसमें यह प्रयत्नपूर्वक अपनी शक्ति खरच करती है, उसे अपनी अतींद्रिय शक्ति में कुछ ह्रास सा अनुभव में आता है।

शीघ्र ही उसने अपने को सीमित कर लिया। अपनी शक्ति का प्रदर्शन तो फ्लोरेंस ने पूरी तरह बंद कर ही दिया, वह लोगों को जानकारियाँ अब नहीं देती। अत्यावश्यक एवं विषम परिस्थितियों में ही वह लोगों को जानकारी देती। उसने ध्यान, उपासना एवं स्वाध्याय में अधिक समय लगाना प्रारंभ कर दिया। न्यूजर्सी के अपने मकान को उसने साधना केंद्र ही बना डाला। कुछ वर्षों बाद उसने लिखने का क्रम प्रारंभ किया। उसकी पुस्तकें बाजार में तेजी से बिकने लगीं। इसमें से 'गोल्डन लाइट ऑफ ए न्यू एरा' तथा 'फाल ऑफ द सेंसेशनल कल्चर' अधिक प्रसिद्ध हुईं। मनोचिकित्सक एवं सम्मोहन कला विशारद डॉ. मोरे वर्सटीन

से उसकी मैत्री विकसित हुई। वह समाज-सेवा के कार्यों में अधिकाधिक रुचि लेने लगी।

जब इटली के पादरी, सुप्रसिद्ध भविष्यवक्ता फादर पियो ने पत्रकारों के पूछने पर भविष्य कथन व्यक्त किया तो प्रतिवाद में वे बोले कि पूँजीवाद तथा साम्यवाद एक कमरे में कैसे रह सकते हैं ? इटली में वह शक्ति कहाँ जो वह विश्वयुद्ध में भाग ले ? मुसोलिनी का उदय एक अपराजेय शक्ति के रूप में हुआ है। उसका पतन असंभव है। विश्व-संस्था का निर्माण एक असंगत कल्पना है, जिसकी स्थापना कभी भी संभव नहीं।

इस प्रतिवाद के प्रत्युत्तर में फादर पियो का उत्तर था—द्वितीय विश्वयुद्ध की अनेक विचित्रताओं में अमेरिका और रूस दोनों का एक साथ मित्र सेना के रूप में युद्ध में भाग लेना भी सम्मिलित है। इस युद्ध में इटली को भी भाग लेना पड़ेगा और भाग ही नहीं, युद्ध-समाप्ति की पहल भी वही करेगा। तब तक मुसोलिनी का पतन हो चुका होगा और एक बार इटली को भयंकर मुद्रा स्फीति, महँगाई तथा देशव्यापी संकटों का सामना करना पड़ेगा। इस विश्वयुद्ध का आखिरी चरण इतना भयंकर होगा कि दुनिया के सभी शीर्ष राजनीतिज्ञ यह सोचने को विवश होंगे कि युद्ध, समस्याओं का अंतिम हल नहीं है। वार्ताओं से भी समस्याएँ सुलझाई जा सकती हैं, इस भावना से प्रेरित एक विश्व-संस्था का निर्माण होगा, किंतु उसमें राजनीतिक अखाड़ेबाजी के अतिरिक्त होगा और कुछ भी नहीं। यह एक सुनिश्चित संभावना है व इसे टाला नहीं जा सकता।

ऊपर जिस पत्रकार ने फादर पियो से इन भविष्यवाणियों की संभावनाओं पर आशंका व्यक्त की थी, तब तक अधिक ख्याति प्राप्त न होने के कारण बहुत अधिक लोगों को तो विवाद का अवसर नहीं मिला, किंतु जब उसी पत्रकार द्वारा सर्वप्रथम प्रकाशित फादर पियो की भविष्यवाणियाँ एक-एक कर सच होती गईं तो एकाएक उनके नाम

की इटली में धूम मच गई। इटली के गिरजाघर में पादरी श्री पियो अत्यंत विनम्र स्वभाव, मधुर वाणी, ऊँचा शरीर, स्वस्थ और गौर वर्ण तथा विनोदप्रिय स्वभाव के हैं। परमात्मा पर उनकी अनन्य आस्था है। अपनी निश्चितता का आधार भी वह इसी आस्था को मानते हैं, उनका कहना है कि जब परमात्मा को अपनी हर संतान के हित की चिंता आप है तो मनुष्य व्यर्थ की कल्पनाओं में क्यों डूब मरे?

उन दिनों अमेरिका में प्रेसीडेंट निकसन चुनाव लड़ रहे थे। इटली में भी उनके पक्ष-विपक्ष की बातें चलती रहती थीं। एक दिन यह प्रसंग फादर पियो के समक्ष भी उठा तो उन्होंने कहा—"शक नहीं निकसन अब तक के सब अमेरिकी शासनाध्यक्षों की अपेक्षा अधिक बहुमत से विजयी होंगे, किंतु जिस तरह उफान आग को बुझा देता है और स्वयं भी तली में चला जाता है, उसी प्रकार निकसन महोदय उतने ही बदनाम राष्ट्रपति होंगे और उन्हें बीच में ही गद्दी छोड़ने तथा जनसत्ता के अधिकारों के हनन का अपयश भोगना पड़ेगा।"

उस समय कोई यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि इतने शक्तिशाली प्रेसीडेंट निकसन को वाटर गेट कांड ले डूबेगा और उस कारण उन्हें महाभियोग तक का सामना करना पड़ेगा; पर इतिहास ने यह सब कुछ कर दिखाया।

फादर पियो की तरह ही उत्तर-पूर्वी कनाडा के हायलैंड प्रदेश की निवासिनी माल्वा डी भी अपनी सही भविष्यवाणियों के लिए विख्यात रही हैं। उन्हें अनायास ही वह शक्ति प्राप्त हो गई जिससे वह लोगों के फोटो या हाथ की लिखावट देखकर उसके सुदूर भविष्य को जान लेती हैं। इन भविष्यवाणियों के द्वारा न केवल उन्होंने अनेक लोगों को उनके खोए बच्चों से मिलाया, आजीविका के रास्ते बताए अपितु सैकड़ों लोगों की आकस्मिक घटनाओं से भी रक्षा की। ऐसे व्यक्तियों में स्वयं उनके पति भी थे जो उनसे परामर्श लिए बिना कभी भी कोई काम नहीं करते थे।

उनकी भविष्यवाणियों में कैनेडी की राष्ट्रपति चुनाव में विजय तथा उनकी मृत्यु की पूर्व घोषणा का अत्यधिक महत्त्व रहा। उन्होंने सन् १९६१ में यह भविष्यवाणी कर दी थी कि २२ नवंबर, १९६३ को राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या कर दी जाएगी। घोषणा को लिखकर उन्होंने एक लिफाफे में बंद कराकर उसे सरकारी प्रामाणिकता में रजिस्ट्री कराई। पीछे जब उनकी हत्या के दिन उसे खोला गया तो लोग आश्चर्यचकित रह गए कि वह वही तिथि थी जो माल्वा डी के पूर्व रजिस्ट्री कराए लिफाफे में थी।

इस चर्चा का एक रोचक अध्याय यह था कि उसी दिन उन्होंने वह भी घोषणा करा दी कि ३ अगस्त, १९६४ को चर्चिल की मृत्यु हो जाएगी तथा जून, १९६५ को कनाडा में एक ऐसी जबरदस्त विमान दुर्घटना होगी जिसमें एक भी व्यक्ति जीवित नहीं बचेगा। पूर्व कथन से प्रभावित होने के कारण इस बार तो उनकी घोषणाओं को विधिवत टेलीविजन में भी दिखाया गया। जिस दिन उनका यह कार्यक्रम प्रसारित हो रहा था उस दिन एक भी टी. वी. सेट बंद नहीं था। लोग भारी संख्या में पहले से ही टी. वी. सेट घेरकर खड़े हो गए थे। यह दोनों भविष्यवाणियाँ अखबारों में भी प्रकाशित हुईं और जब निश्चित तिथियों सहित वे पूर्ण सच निकलीं तो लोगों ने दाँतों तले उँगली दबा ली।

प्रसुप्त क्षमता के परिचायक ये विलक्षण घटनाक्रम— पूर्वाभास एवं भविष्य-कथन दो दीखने में एकसी होते हुए भी भिन्न विधाएँ हैं। भविष्य-कथन की सामर्थ्य कुछ में जन्मजात रूप से होती है, कुछ इसे प्रयत्नपूर्वक विकसित कर लेते हैं। वे मानव जाति के भविष्य, मनीषियों-नेताओं के संबंध में बिना उन्हें देखे भविष्य बताने की क्षमता रखते हैं। घटनाओं को वे भविष्य के गर्भ में पकने से पूर्व ही देख लेते हैं। नोस्ट्राडेमस, जीन डिक्सन, प्रो. हरार कीरो, जॉन सैवेज, एंडरसन आदि इसी प्रकार के भविष्यवक्ता रहे हैं।

पूर्वाभास अनायास ही कभी-कभी किन्हीं को भी हो सकता है। यह संबंधित व्यक्ति की आत्मीयता-घनिष्ठता पर भी निर्भर करता है एवं किसी व्यक्ति के अंदर जागी हुई क्षमता के आधार पर ध्यान लगाने पर व्यक्तियों व घटनाओं के संबंध में हो सकता है। है यह सब प्रकृति के नियम के अनुकूल ही। समष्टि में क्या कुछ हो रहा है, होने वाला है, यह जान सकना सबके वश की बात है। योग साधना का अवलंबन लेकर हर कोई इसे अपने अंदर विकसित कर सकता है।

अनेकों भविष्य-कथन कहे जाने वाले ऐसे हैं जो प्रसिद्ध तो नहीं हुए, पर उनके सभी कथन सही निकले। जोर्डन के भविष्यवक्ता शेख अब्दुल रजा ने एक बार भविष्यवाणी की थी कि जोर्डन के शासक अब्दुल्ला का कत्ल होगा। बताए हुए समय सन् १९५१ में वह घटना उसी रूप में घटित हुई। भविष्यवक्ता की शक्ति की जहाँ सराहना हुई, वहाँ उन पर षड्यंत्र में सम्मिलित होने का लांछन भी लगाया गया। खिन्न होकर उनने १ वर्ष का मौन धारण कर लिया और फिर लाख कहने पर भी इतने दिन तक किसी से नहीं बोले।

थाइलैंड के राजा फ्याकांग ने अपना प्रथम पुत्र जन्मते ही यह भविष्यवाणी की थी कि बड़ा होने पर पुत्र ही उसकी हत्या करेगा। दरबारियों ने उसकी आशंका का समर्थन नहीं किया। बालक लाड़-चाव में पलता रहा। युवा होने पर उसने बाप को गद्दी से उतारकर स्वयं सिंहासनारूढ़ होने के लोभ में उसकी हत्या कर ही दी। जिन्हें स्मरण था उनने चर्चा की कि राजा यह भविष्यवाणी तीस वर्ष पूर्व ही कर चुका था।

स्कॉटलैंड के राजा अलेक्जेंडर तृतीय को किसी भविष्यवक्ता ने बताया कि उसकी मृत्यु घुड़सवारी के समय घोड़ा बिदकने से होगी। उसने इस संभावना का अनुमान वर्तमान घोड़े से लगाया और उसे मरवा

दिया। कुछ दिन बाद दूसरे घोड़े पर वह बाहर जा रहा था कि रास्ते में एक अजूबा देखकर घोड़ा ऐसा बिदका कि उछलकर पास के खड्ड में गिरा। राजा और घोड़ा दोनों ही मर गए।

स्पेन की सर्वश्रेष्ठ समझी जाने वाली इमारत 'इस्कोनियल' वहाँ के कुख्यात राजा फिलिप द्वितीय ने बनवाई थी। इसने उसे अपनी पत्नी मेरी ट्यूडर की स्मृति में बनवाया था। इस भवन के एक कक्ष में यह व्यवस्था भी की गई थी कि स्पेन के राजाओं की मृत्यु के बाद उनके शव उसी में गाड़े जाया करें और उनके स्मारक बना दिए जाया करें।

फिलिप को एक भविष्यवक्ता ने कहा था कि स्पेन का राजवंश २४ पीढ़ियों तक चलेगा। उसे इस पर पूरा विश्वास था। इसलिए उसने चौबीस कब्रें ही पूर्व नियोजित ढंग से बनाकर रखी थीं।

सन् १९२९ में स्पेन की रानी मैरिया क्रिस्टिना की मृत्यु हुई। उसका मृत शरीर २३वें गड्ढे में गाड़ा गया। आश्चर्य यह कि वह शताब्दियों से पूर्व घोषित भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य हुई। इसके बाद अलफोनों राजगद्दी पर बैठा। उसे दो वर्ष बाद ही गद्दी छोड़नी पड़ी और साथ ही राजतंत्र का भी अंत हो गया। इसके बाद स्पेन में गणतंत्र स्थापित हुआ और अलफोनो स्पेन का चौबीसवाँ—अंतिम राजा सिद्ध हुआ।

मार्टिन इवॉन ने अपनी पुस्तक 'टू एक्सपीरियन्सेस इन प्रोफेसी' में कई प्रामाणिक घटनाओं का उल्लेख करते हुए यह सिद्ध किया है कि मनुष्य के भीतर अद्भुत, अलौकिक और विलक्षण क्षमताएँ हैं। उन क्षमताओं के माध्यम से भूत, भविष्य, वर्तमान को देश, काल की सीमाओं से परे जाकर भी देखा जा सकता है।

अपनी पुस्तक में मार्टिन इवॉन ने 'लैंडेड टू' शीर्षक से हैटोल्ड ग्लूक के हवाले से एक घटना दी है, जो पूर्वाभास की विलक्षण क्षमता की झाँकी देती है।

नवंबर, १९५० की एक शनिवार को हमारे घर कोई उत्सव होने वाला था। एक दिन पूर्व शुक्रवार को ही मेरी धर्मपत्नी ने मुझसे कहा—"आज आप बाहर नहीं जाइएगा। घर की आवश्यक व्यवस्था में आज आपको हाथ बटाना पड़ेगा।" किंतु उस दिन मुझे ऐसी प्रबल प्रेरणा उठ रही थी कि आज तो समुद्र की सैर के लिए जाना ही चाहिए। मैंने अपनी धर्मपत्नी की बात को कभी ठुकराया नहीं, पर मैं स्वयं ही नहीं जानता कि उस दिन मुझे किस अज्ञात शक्ति द्वारा प्रेरित किया जा रहा था कि मैंने जान-बूझकर अपने मित्र जैक को कार लेकर अपने साथ चलने को राजी कर लिया। उस दिन समुद्र में तूफान आने की घोषणा मौसम विभाग के द्वारा की जा चुकी थी, इसलिए मेरी धर्मपत्नी ने समुद्र की ओर जाने से इनकार कर दिया, किंतु मेरे तन में न जाने क्यों कोई बात चिपक नहीं रही थी। मेरा कोई मन भी नहीं था पर भीतर से ऐसा लगता था, तुम्हें समुद्र की ओर जाना ही चाहिए।

निश्चित समय पर गाड़ी आ गई। हम और जैक समुद्र की ओर चल पड़े। हमारे वहाँ पहुँचने से पूर्व ही समुद्र भयंकर आवाज के साथ गरजने लग गया था। तटवर्ती मल्लाह पीछे हट चुके थे तो भी मेरे मुख से निकल ही गया—ओ भाई मल्लाह, हमें समुद्र की सैर करनी है, एक बोट तो देना।

मल्लाह बुरी तरह झल्लाया—आपको दिखाई नहीं देता समुद्र किस तरह उबल रहा है, बोट तो डुबाएँगे ही आप जान से हाथ धो बैठेंगे। वही बात जैक ने भी कही, किंतु मुझे तो कोई अज्ञात शक्ति खींच रही थी, मैंने कहा—"यह लो बोट की कीमत और एक बोट मेरे लिए छोड़ दो।"

मेरे हठ के सामने सब परास्त हो गए। बोट, हम और जैक देखते-देखते समुद्र की लहरों में जा फँसे। मुझे २०० गज की दूरी पर

फुटबॉल की तरह कोई वस्तु दिखाई दी। मैंने जैक को इशारा किया तो जैक झल्लाया—आज आपको क्या हो गया है, एक साधारण सी फुटबॉल के लिए अपने को मौत के मुख में डाल रहे हैं।

मुझे वह बातें भी कुछ प्रभावित न कर सकीं। बोट उधर ही बढ़ा दी। पास पहुँचकर देखता हूँ कि दो नाविक जो समुद्र के तूफान में फँस गए थे डूब रहे हैं, हमने किसी तरह उन्हें अपनी नाव में चढ़ाया और डोलते-डगमगाते किनारे आ पहुँचे।

मेरी इस सहृदयता और साहस को जिसने भी सुना सराहा। मेरी धर्मपत्नी ने उस दिन मुझे हृदय से लगा लिया। तब से बराबर सोचता रहता हूँ, वह कौन सी शक्ति थी जो मुझे इस तरह प्रेरित करके वहाँ तक ले गई? क्या ऐसा भी कोई तत्त्व है, जो अपनी इच्छा से विश्व का सृजन और नियमन करता है, यदि हाँ तो क्या मनुष्य इसकी स्पष्ट अनुभूति कर सकता है?

एक ऐसी अमेरिका में घटी घटना का वर्णन अपनी पुस्तक में उन्होंने किया है।

न्यूडेर्सीका वाल्टर जे मैसी अपनी पत्नी के साथ चाय की टेबल पर बैठा हुआ था। श्रीमती मैसी कप में चाय छान रही थीं। चाय उँडेलकर उसने दूध मिलाया ही था कि वह बड़-बड़ाने लगी—किसी होटल के मैनेजर को गोली से मारकर एक हत्यारा कार में चढ़कर भागा जा रहा है। दो मोटर साइकिलें उसका पीछा कर रही हैं। हत्यारे ने पीछा करने वालों पर भी गोली चलाई। उनमें से एक सवार मारा गया। हत्यारा मोटर छोड़कर अधबनी झोंपड़ी में घुस गया......।

यह बुदबुदाना जारी ही था कि श्रीमती मैसी के हाथ से दूध का बरतन छूट गया और वह अर्द्धमूर्च्छित होकर टेबल पर ही लुढ़क सी गईं। वाल्टर को कुछ भी समझ में न आया कि क्या करे ? उपलब्ध

चिकित्सा उपचार के बाद जब उसकी पत्नी होश में आई तो उसने बताया कि वह ठीक यही दृश्य किसी फिल्म की तरह चाय की प्याली में देख रही थी।

वाल्टर ने इस घटना को कोई विशेष महत्त्व नहीं दिया, पर मैसी के मस्तिष्क पर इसका प्रभाव ज्यों का त्यों बना हुआ था। वह अपने पति से बार-बार यही कहती कि या तो यह घटना हो चुकी है अथवा घटने वाली है। अतएव इस बारे में पुलिस को सूचित कर देना चाहिए। वाल्टर इसे भ्रम या मनोग्रंथि का विकार कह रहा था, जबकि मैसी बार-बार विचार कर रही थी। दो दिन तक दोनों में विवाद हुआ, अंततः वाल्टर ने मैसी की बात रखकर इस विवाद से छुटकारा पा लेने का निर्णय किया। वे लोग पुलिस दफ्तर पहुँचे और स्वप्न में देखे हत्यारे की हुलिया तथा पोशाक बताते हुए सारी बात कह दी। पुलिस अधिकारियों ने वाल्टर और मैसी को सनकी समझा तथा रिपोर्ट फाइलों में दबा दी गई।

अभी दो सप्ताह भी न बीत पाए थे कि ठीक ऐसी ही घटना का विवरण दैनिक समाचार पत्रों में छपा। कैलीफोर्निया के एक होटल मैनेजर की तिजोरी लूटने और गोली मार देने का विवरण सचमुच ही सनसनीखेज था। इससे भी सनसनीखेज था वह विचित्र साम्य जो मैसी द्वारा पुलिस में दर्ज कराई सूचना से अक्षरशः मेल खाता था। हत्यारा कार में बैठकर ही भागा था। दो पुलिसमैनों ने मोटर साइकिल पर उसका पीछा किया जिनमें से एक हत्यारे को गोली से मारा गया। बाद में वह हत्यारा लूट के धनसमेत एक अधबनी झोंपड़ी में पकड़ा गया।

यह समाचार भी बाद में अखबारों ने प्रकाशित किया कि किस प्रकार श्रीमती मैसी को इस हत्या की दुर्घटना का पूर्वाभास हो गया था तथा वह घटना अक्षरशः सत्य निकली। इस घटना से मार्टिन इवॉन ने यही निष्कर्ष निकाला है कि मनुष्य में अतींद्रिय शक्तियों की संभावनाएँ बीज रूप से विद्यमान हैं जो कभी-कभी इस रूप में भी प्रस्फुटित हो

जाती हैं। मनुष्य यों अन्य प्राणियों की तरह ही एक जीवित पशु मात्र है। उसमें बोलने और सोचने की अतिरिक्त विशेषताएँ भर विद्यमान हैं।

न्यूरो साइक्रेट्रिक संस्थान कैलीफोर्निया के डाइरेक्टर डॉ. क्रेग ने अपने विस्तृत शोध प्रबंध में ऐसे अनेकों व्यक्तियों का उल्लेख किया है जिन्होंने स्वयं प्रयास किया एवं अपनी क्षमताओं को जगाया।

ऐसे व्यक्तियों में हेरोल्ड शर्मन को भी अपने समय में काफी प्रसिद्धि मिली। सन् १९१५ में उसे मनुष्य की अतींद्रिय सामर्थ्यों का परिचय मिला। उस समय से ही वह उन्हें करतलगत करने का अभ्यास करने लगा। धीरे-धीरे उसे सफलता मिलने लगी। एक शाम वह अपने कमरे में बैठा टाइप कर रहा था। अँधेरा हो चला था। वह प्रकाश करने के लिए स्विच खोलने के लिए उठा। जैसे ही स्विच तक पहुँचा, अपने ही भीतर से एक आवाज आई—'लाइट मत खोलो'। इस प्रकार का उसका पहला अनुभव था कि अपनी ही सत्ता के भीतर से स्पष्ट निर्देश मिल रहा हो। वापस वह टाइप करने पुनः बैठ गया, पर अँधेरे के कारण कुछ सूझ नहीं रहा था। सोचा कि वह निर्देश मन का भ्रम भी हो सकता है, दोबारा वह स्विच बोर्ड के पास स्विच दबाने चला। पर इस बार पहली बार से भी अधिक स्पष्ट उसी निर्देश की पुनरावृत्ति हुई। ठीक उसी समय किसी व्यक्ति के नीचे दौड़ने की आवाज आई। कोई धड़ाधड़ दरवाजा खटखटाने लगा। वह दरवाजा पीटने के साथ-साथ तेज आवाज में बोलता भी जा रहा था कि लाइट मत जलाना। हाई वोल्टेज लाइन के साथ आपकी लाइन अकस्मात जुड़ गई है। बाद में मालूम हुआ कि वह लाइनमैन था तथा दौड़ता हुआ यह सूचना देने के लिए ही आया था। यदि शर्मन स्विच दबाता तो भयंकर संकट उपस्थित हो सकता था। उसे उस दिन के बाद समय-समय पर भविष्य की कितनी ही बातें पहले ही मालूम हो जाती थीं, जिसका उल्लेख प्रायः वह अपने निकटवर्ती मित्रों से करता रहता था।

एक फ्रांसीसी नाविक वोटिनो सन् १७६२ में मैरिसंस में जहाजी व्यवस्था के लिए नियुक्त किया। उधर से कम ही जहाज निकलते थे इसलिए काम कम रहा। उन दिनों जहाजों के पूर्व आगमन की सूचना मिल सके ऐसी टेलीफोन, रेडियो जैसी व्यवस्था नहीं थी। चौकसी रख कर ही जानकारी पाई और व्यवस्था की जाती थी। वोटिनो ने दिव्य दृष्टि का अभ्यास आरंभ किया। कुछ दिन में उसने वह क्षमता विकसित कर ली और कई दिन पूर्व जहाजों के आगमन, स्वरूप, समय की सही जानकारी देने लगा।

सन् १७७८ से लेकर १७८२ तक के चार वर्षों में उसने १७५ जलयानों के आगमन की पूर्वसूचनाएँ बताईं और वे सभी सही थीं। इस विशेषता के उपहार में फ्रांस सरकार ने उसे गवर्नर का पद और विपुल धन दिया।

हालैंड निवासी क्रोसेट का जन्म १९०९ में एक साधारण गरीब माँ-बाप के यहाँ हुआ था, ये दोनों थियेटर में काम करते थे। बचपन से ही क्रोसेट भविष्यवाणियाँ किया करते थे। बचपन में ही उसने नाजी आक्रमण तथा जापानियों द्वारा डचों के ईस्ट इंडीज अधिग्रहण के बारे में सही-सही पूर्वसूचना दे दी थी।

३६ वर्ष की आयु आते ही वह इस विधा में इतना निष्णात हो गया था कि किसी भी वस्तु को देने पर बता देता था कि वस्तु का मालिक कौन है? उसका सामान्य परिचय तथा वर्तमान परिस्थिति ही नहीं, वह बताया करता था कि मालिक के मित्र, नौकर-चाकर तथा पारिवारिक सदस्यगण कैसे हैं? उनकी स्थिति कैसी है अर्थात घर, पास-पड़ोस, स्थिति एवं मनोदशा कैसी है? उसकी इन प्रतिभाओं का प्रयोग पुलिस ने चोरों, अपराधियों तथा कत्ल करने वालों को ढूँढ़ने, पकड़ने में किया। उसे स्थान विशेष पर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। वह फोटो, नक्शा, साक्ष्य वस्तुएँ जैसे कपड़े अथवा हथियार आदि की सहायता से चोरों, हत्यारों एवं खोई वस्तुओं का पता बता दिया करता था।

सार्थक फलदायी दिशाबोध—लेडी चारलौट किंग अपनी पूर्वाभास संबंधी अतींद्रिय क्षमताओं के कारण विश्व विख्यात हैं। उनका निवास स्थान सलेन नामक स्थान पर यू. एस. ए. के औरगन प्रदेश में है। आने वाली गाड़ियों की ध्वनि को सुनकर वह पहले ही बता देती हैं कि आने वाले का उद्देश्य क्या है ? लेकिन एक और विलक्षणता की कड़ी उनके जीवन में अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है, वह है—भूकंपों का पूर्वाभास। जिन भूकंपों के आने से पूर्व ही चारलौट ने जो भविष्यवाणियाँ कीं, वह बिलकुल प्रमाण सिद्ध होकर रही हैं। यह मनुष्येतर प्राणियों से मिलती-जुलती उनकी सिद्धि है।

६ अगस्त, १९७९ को होलिस्टर (कैलीफोर्निया), इसी वर्ष १२ सितंबर को न्यू जूनिया, २४ जनवरी, १९८० को लिवरमोर (कैलीफोर्निया) तथा ३ मार्च, १९८० को यूरेका (कैलीफोर्निया) में आने वाले भूकंपों का लेडी चारलौट ने पूर्व उद्घोष किया था।

लेडी चारलौट ने बताया कि जैसे ही भूकंप आने वाला होता है तो उसके मस्तिष्क में गहन और बारंबार लय जैसी आवृत्ति चली जाती है। जब भूकंप तेज होने की स्थिति होती है तो उनका सिरदरद होने लगता है। चार वर्षों में ८० से भी ऊपर ऐसी घटनाओं को वह स्पष्ट रूप से बता चुकी हैं।

इस विषय में चारलौट अकेली ही नहीं हैं। एक और महिला कैलीफोर्निया के लॉस गेटास शहर में रहती हैं। नाम है क्लेरीसा वर्नहेड। इन्हें पिछले दो दशकों से 'अर्थक्वेक लेडी' नाम से जाना जाता है। भूकंपों की पूर्व जानकारी देने में वह सक्षम है। समय-समय पर उसने भूकंपों की कितनी ही भविष्यवाणियाँ कीं जो समय एवं स्थान के हिसाब से बिलकुल सही निकलीं। कितनी बार उसके भविष्य बोध का प्रसारण सीधे रेडियो, टेलीविजन के माध्यम से भी हुआ है।

वर्ष १९७४ को नवंबर माह में उसकी एक ऐसी ही भविष्य-वाणी का प्रसारण हुआ। अधिकारीगण भी रेडियो एवं टेलीविजन सेवाओं से प्रसारण की अनुमति इस कारण देते हैं, क्योंकि उसके पूर्ववर्ती कथन अपने समय पर सच निकल चुके हैं। नवंबर माह में रेडियो एवं टेलीविजन दोनों ही प्रसारणों से उसने अपनी दिव्य दृष्टि से खबर दी कि २८ नवंबर, वृहस्पतिवार, दोपहर ठीक तीन बजे मध्य तटवर्ती क्षेत्र में भूकंप का एक तीव्र झटका अनुभव किया जाएगा, पर किन्हीं अविज्ञात कारणों से कोई विशेष क्षत्ति नहीं होगी। २८ नवंबर की दोपहर को भूकंप आया। पोलिस रेडियो स्टेशन का संपर्क अन्य क्षेत्रों से टूट गया तथा समीपवर्ती क्षेत्रों में अत्यंत सामान्य नुकसान हुआ। जनहानि की कोई घटना प्रकाश में नहीं आई। भूकंप का समय तीन बजकर एक मिनट रिकॉर्ड किया गया। इस तरह क्लेरीसा के कथन में मात्र का एक मिनट का अंतर आया।

क्लेरीसा ने वर्ष १९७५ के आरंभ में ही कहा कि इस वर्ष प्रमुख रूप से दो भूकंप आएँगे। २९ नवंबर को उत्तरी गोलार्द्ध में और २५ मई को दक्षिणी गोलार्द्ध में। उत्तरी गोलार्द्ध वाले भूकंप का स्थान हवाई द्वीप समूह होगा। उक्त कथन पूरी तरह सही निकला। भूकंप के तीव्र झटके से हवाई द्वीप समूह भयंकर सर्वनाश का शिकार बना।

अमेरिका के एक रेलवे इंजन ड्राइवर होरेस एल सीवर ने तो अपनी पूर्वाभास की विलक्षण क्षमता के कारण बड़ी प्रसिद्धि पाई। बीसवीं सदी के प्रारंभिक दिनों में उनसे संबंधित कुछ घटनाएँ बड़ी चर्चा का विषय बनीं। उनकी इस क्षमता के कारण अनेकों जानें भी बचीं एवं उन्हें 'किंग ऑफ रेलवेज' की उपाधि दी गई। वे आस्तिकवादी थे व उनका भी सुकरात की तरह विश्वास था कि उन्हें यह बोध कोई दैवी सत्ता कराती है जो उनके साथ चलती है।

उन दिनों होरेस बिगफोर ट्रेन के ड्राइवर थे, जो अमेरिका के कैंटकी शहर से चलकर इलिनास होती हुई शिकागो पहुँचती है। एक

दिन उन्हें एक मिलिट्री रेजीमेंट को शिकागो पहुँचाने का कार्य सौंपा गया। गाड़ी ६० मील प्रति घंटा की गति से चल रही थी। एकाएक उन्हें लगा कि इंजन कक्ष में किसी की आवाज गूँजी—सावधान ! खतरा है। आगे पुल जला हुआ है। जबरदस्त विश्वास के साथ होरेस उठ खड़े हुए और पूरी शक्ति से गाड़ी रोकने का उपक्रम किया। गाड़ी बीच में ही रुक जाने से परेशान कमांडर नीचे आए और गाड़ी रोकने का कारण पूछा तो होरेस ने अपने पूर्वाभास की बात बताई। कमांडर बहुत बिगड़ा और गाड़ी स्टार्ट करने का आदेश दिया, किंतु होरेस ने स्थिति स्पष्ट हुए बिना गाड़ी चलाने से स्पष्ट इनकार कर दिया। पता लगाया गया तो बात सच निकली। कमांडर ने न केवल क्षमा याचना की अपितु हजारों सैनिकों की जीवन रक्षा के लिए होरेस को हार्दिक धन्यवाद दिया। किंतु होरेस कृतज्ञतापूर्वक यही कहते रहे, यह तो उन अज्ञात आत्मा की कृपा है जो मुझे ऐसा अनुभव कराते रहते हैं।

एक बार तो शिकागो से लौटते समय बड़ी ही विलक्षण घटना घटी। तब एकाएक उन्हें लगा कि किसी ने कहा—"सामने इसी पटरी पर दूसरी गाड़ी आ रही है, गाड़ी तुरंत पीछे लौटाओ।" बड़ी कठिन परीक्षा थी, किंतु अदम्य विश्वास के सहारे पूरी शक्ति और सावधानी से गाड़ी रोक दी और उसकी रफ्तार पीछे को कर दी। गाड़ी में बैठे यात्री चालक की सनक पर झुंझला ही रहे थे कि सामने से धड़-धड़ाता हुआ इंजन इस गाड़ी पर चढ़ बैठा। एक ही दिशा होने और सँभल जाने के फलस्वरूप किसी भी यात्री को चोट नहीं आई मात्र इंजन को मामूली क्षति पहुँची। पीछे सारी बात ज्ञात होने पर यात्री होरेस के प्रति कृतज्ञता से भर उठे। इस विलक्षण दैवी क्षमता को प्रत्यक्ष होते देख सभी को जीवसत्ता को परमसत्ता से प्राप्त विलक्षण अनुदानों पर भी विश्वास हुआ।

अमेरिकी मनोवैज्ञानिक डॉ. नेल्सन वाल्टर का कथन है कि हर मनुष्य के अंदर एक बलवती चेतनशक्ति रहती है जो परोक्ष के गर्भ में

पक रही उन हलचलों-घटनाक्रमों का पूर्वज्ञान प्राप्त करने की क्षमता रखती है, जो आगे विपत्ति बनकर आने वाली होती है। कोई उसे सुनकर सावधानी बरत लेते हैं, कोई उपेक्षा बरतकर बाद में हानि भुगतते व पछताते हैं।

पूर्वाभास संबंधी घटनाक्रम कभी-कभी समुदाय विशेष को भी होते देखे गए हैं। इंग्लैंड में वेल्स काउंटी में अमेरफान एक कसबा है। वर्षाकाल के दिन थे। सहसा समूचे कसबे में एक खलबली मच गई। अधिकांश लोगों को या तो रात्रि को स्वप्नों में या दिन में यों ही अनायास ही पूर्वाभास होता कि उनकी मृत्यु शीघ्र ही हो जाएगी। अमेरफानवासियों की इस बेचैनी ने इस तरह सार्वजनिक चर्चा का रूप ग्रहण किया कि जर्मनी के सुप्रसिद्ध मानसशास्त्री जॉन मॉरकर को घटना के अध्ययन के लिए बाध्य होना पड़ा। सर्वेक्षण के मध्य उन्होंने पाया कि कसबे के अधिकांश व्यक्तियों को इस तरह का पूर्वाभास हो रहा है। यही नहीं लोगों के चेहरे पर भय की रेखाएँ स्पष्ट झलकती थीं।

मुश्किल से एक पखवाड़ा बीता था कि सचमुच समीप के पहाड़ से एक दिन ज्वालामुखी फटा—कोयले की राख का भयंकर तूफान उमड़ा और उसने देखते-देखते हजारों व्यक्तियों को मौत की नींद सुला दिया। एक स्कूल की दीवार में हुए भयंकर विस्फोट से तो १०० बच्चे एक ही स्थान पर मृत्यु के घाट उतर गए।

इस विद्यालय की एक नौवर्षीया बालिका तब तो बच गई थी, किंतु घटना के १० दिन बाद वह एकाएक अपनी माँ से बोली—"माँ मैं मृत्यु से बिलकुल नहीं डरती, क्योंकि मेरे साथ भगवान रहते हैं।" माँ ने समझा बच्ची पूर्वघटना से भयाक्रांत है इसलिए उसने उसे हृदय से लगाकर समझाया, नहीं बेटी अब तो जो होना था हो गया अब तू निश्चिंत रह।

जॉन मारकर ने उस बालिका से भी भेंट की और पूछा—"बेटी तुम ऐसा क्यों सोचती हो?" बालिका ने उत्तर दिया—"क्योंकि मुझे

अपने चारों ओर अंधकार दिखाई देता है।'' इस भेंट के दूसरे ही दिन मध्याह्न में बच्ची का निधन हो गया। संयोग से उसे जिस स्थान पर दफनाया, वह स्थान कोयले की राख की ५-६ फुट परत से ढका हुआ था। जॉन मारकर ने इस अध्ययन से यह भी निष्कर्ष निकाला कि समस्त प्राणि जगत एक ही चेतना के समुद्र से संबद्ध है।

स्वप्नों के द्वारा भविष्य के पूर्वाभास की घटनाएँ आमतौर पर प्रकाश में आती हैं। प्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता जे. वी. राइन और उनकी पत्नी लुई ईंटाइन ने मिलकर इस संबंध में वर्षों तक शोध किया कि कई बार स्वप्नों में इस प्रकार के संकेत क्यों मिलते हैं जिनमें भावी घटनाओं का आभास होता है। डॉ. राइन विज्ञान अन्वेषण के दूसरे क्षेत्र में कार्यरत थे, परंतु जब उनकी पत्नी ने ऐसी दर्जनों घटनाओं का विवरण सुनाया जिनसे स्वप्नों की सार्थकता सिद्ध होती थी तो उसने अपने अन्वेषण का क्षेत्र बदलकर स्वप्नों में पूर्वाभास को अपना विषय बना लिया और लगभग ४,००० ऐसी घटनाओं का संग्रह प्रकाशित किया जिनमें स्वप्नों के माध्यम से लोगों की भवितव्यता की पूर्वसूचना प्राप्त हुई थी।

डॉ. राइन ने अपने अन्वेषण पर कितनी ही विज्ञानगोष्ठियों में भाषण दिए और इस संदर्भ में और अधिक शोध करने की आवश्यकता प्रतिपादित की। ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन ने उनके कई भाषण भी प्रकाशित किए। उनके भाषणों में मुख्यतः तीन शोध निष्कर्ष रहते थे। एक यह कि मनुष्य के भीतर ऐसी कोई अविज्ञात चेतना विद्यमान है जो सुदूर क्षेत्र तक अपना संबंध सूत्र बनाए हुए है और वह उपयुक्त अवसरों पर रहस्यमयी घटनाओं का उद्‌घाटन करती है। दूसरा यह कि परस्पर घनिष्ठ व्यक्तियों में सहज ही यह आदान-प्रदान हो सकता है। तीसरा यह कि इस प्रकार की अतींद्रिय शक्तियाँ पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक रहती हैं। विशेष रूप से उनमें जो धार्मिक रुचि लेती हैं।

यह चमत्कारी क्षमताएँ अद्भुत, विलक्षण हैं और कोई भी इन्हें प्राप्त करने का लोभ-संवरण नहीं कर सकेगा। परंतु भारतीय ऋषियों ने इन सिद्धियों को दूसरे दृष्टिकोण से देखा है। महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन में इस प्रकार की सिद्धियों का उल्लेख करते हुए कहा है—"ये सिद्धियाँ समाधि में विघ्न हैं तथा व्युत्थान में सिद्धि हैं।" (विभूतिपाद ३९)

अर्थात ये जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं हैं। जैसे दरिद्र मनुष्य थोड़ा सा द्रव्य पाकर ही संतुष्ट हो जाता है, उसी प्रकार विभ्रमग्रस्त पुरुष ज्ञान से पहले प्राप्त होने वाली इन सिद्धियों में रम जाता है और हर्ष, गौरव तथा गर्व से अभिभूत होकर अपने अंतिम लक्ष्य समाधि, परमशांति से विमुख हो जाता है। इन सिद्धियों की एक ही उपयोगिता बताई गई है कि मनुष्य इनके माध्यम से अपनी अद्भुत सामर्थ्य को पहचाने और विराट चेतना के ही एक अंश होने की अनुभूति करे। उसे प्राप्त करने के लिए प्रेरित हो।

उसी से शास्त्रकारों ने इन सिद्धि-सामर्थ्यों में न उलझते हुए सत्य की खोज में अनवरत लगे रहने का निर्देश दिया है। यदा-कदा यह चमत्कारी क्षमताएँ झलकती दिखाई देती हैं तो उसका भी कुल इतना ही उपयोग है कि मनुष्य अपने आप को परमपिता परमात्मा का उत्तराधिकारी होने की बात अनुभव कर सके और स्वयं भी उतना ही समर्थ, शक्तिमान तथा संसिद्ध होने की बात स्वीकार कर सके।

जीव-जंतुओं की पूर्वाभास क्षमता—मौसम का पता लगाने वाले यंत्र तो अभी कुछ दशाब्दियों पूर्व निर्मित हुए हैं, जिनके द्वारा आगामी २४ घंटों अथवा उससे कुछ अधिक समय का मौसम ज्ञात किया जा सकता है, परंतु इससे पहले भी लोग मौसम का पूर्वानुमान लगा लेते थे। वह पूर्वानुमान इतना सटीक बैठता था कि लोग उसी आधार पर खेत जोतने की तैयारियाँ करने लगते थे। मौसम अनुसंधानशालाओं द्वारा प्रसारित सूचनाएँ आज भी सीमित क्षेत्रों में ही पहुँच पाती हैं, परंतु

दूर दराज गाँवों में बसे, आधुनिक सभ्यता और साधनों से कोसों दूर लोग पशु–पक्षियों की हरकतों को देखकर मौसम का अनुमान लगाते हैं तथा उसी आधार पर जुताई–बुआई की तैयारियाँ करते हैं।

पशु–पक्षियों को बहुत सी प्राकृतिक घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता है। कहा जाता है कि कोई मकान गिरने वाला होता है और उसमें कोई बिल्ली रह रही होती है तो बिल्ली अपने बच्चों को उसमें से पहले ही निकाल लेती है। देहाती मरघट में जहाँ कभी–कभार कोई मुरदा जलता है यदि कोई सियार लौटता दिखाई देता है तो गाँव के लोग समझने लगते हैं कि निकट भविष्य में ही कोई मरने वाला है। जब कुत्ते एक साथ मिलकर ऊँचे स्वर में रोने लगते हैं तो बताया जाता है कि उस गाँव में चोरी, डकैती, बीमारी, कलह, अग्निकांड जैसे उत्पात होने वाले हैं।

कहा नहीं जा सकता कि ये मान्यताएँ कहाँ तक सत्य हैं ? परंतु इन मान्यताओं के आधार में निहित तथ्य अवश्य सत्य पाए जाते हैं। वह तथ्य यह कि जो घटनाएँ हमें आज घटती हुई दिखाई देती हैं उनके बीज अतीत के गर्भ में बहुत पहले ही विकसित हो चुके होते हैं। मकान का गिरना उसी समय दिखाई पड़ता है जबकि उसके टुकड़े जमीन पर गिरते दिखाई देते हैं, परंतु वास्तव में उसके गिरने की सूक्ष्म प्रक्रिया बहुत पहले से ही आरंभ हो चुकी होती है। कोई मनुष्य कितना ही आकस्मिक मरता हुआ जान पड़े, परंतु उसके मरने की प्रक्रिया काफी समय पहले शुरू हो चुकी होती है। यह प्रक्रिया ठीक उसी प्रकार आरंभ होती है, जिस प्रकार किसी बच्चे का जन्म आज होता हुआ दिखाई दे, परंतु उसका गर्भाधान नौ–सवा नौ महीने पहले हो चुका होता है।

हमारी दृष्टि की पकड़ में वह घटनाक्रम तभी आता है, जब वह दिखाई देता है, अन्यथा घटनाओं की संभावना के बीज बहुत पहले ही

पड़ चुके होते हैं। कई जीव-जंतुओं में इन बीजों का अंकुरण पहचानने की सामर्थ्य होती है। मुर्गे को सूर्य की प्रथम किरण का आगमन होते ही जबकि पूर्व के आकाश पर लालिमा छाने ही लगती है सूर्योदय की संभावना का पता लग जाता है। कितने ही अँधेरे और बंद स्थानों पर रखे जाने पर भी मुर्गे को निश्चित समय पर बांग देते हुए देखा जा सकता है। समुद्र में जब बादल बनना आरंभ ही होते हैं तभी उन स्थानों पर मोर एक विशेष स्वर के साथ कूँकने लगते हैं। जब मोर खूब कूँकने लगता है तो किसान समझ लेता है कि अब वर्षा शीघ्र ही होने वाली है। रूस के दक्षिणी भाग में एक ऐसी चिड़िया पाई गई है जो भूकंप आने के हफ्तों पहले उस स्थान पर दिखाई देना बंद हो जाती है। अर्थात उसे भूकंप आने का आभास हो जाता है, जबकि आधुनिकतम विकसित यंत्र भी भूकंप की चेतावनी दो-तीन दिन से अधिक समय पहले नहीं दे पाते।

अमेरिका के विख्यात मौसम विशेषज्ञ डॉ. लागन इस दिशा में वर्षों से परिश्रम कर रहे हैं। उनका कहना है कि भूकंप से पहले पशु-पक्षियों के व्यवहार में आए परिवर्तनों को सही ढंग से पहचान लिया जाए तो घंटों नहीं, दिनों पहले उससे होने वाले नुकसान से बचाव के प्रयास किए जा सकते हैं।

चीन में भी इस विषय में काफी शोध कार्य हुआ है, क्योंकि वहाँ के कई क्षेत्रों में एक वर्ष में पाँच-पाँच, छह-छह बार भूकंप आते हैं। इन मौसमविशेषज्ञों ने विधिवत एक चार्ट तैयार किया है, जिसमें यह बताया गया है कि कौन-कौन से पशु-पक्षी भूकंप के समय अपना व्यवहार बदल लेते हैं और उनके व्यवहार में किस प्रकार का परिवर्तन होता है? चार्ट में कहा गया है कि जब भूकंप आने की संभावना होती है तब गाय, भैंस, घोड़े, भेड़, गधे आदि चौपाये बाड़े में नहीं जाते। बाड़े में जाने के स्थान पर वे उलटे भागने लगते हैं। एकाध तरह का चौपाया तो कभी भी ऐसा कर सकता है, परंतु जब अधिकांश या सभी चौपाये बाहर भागने लगें तो भूकंप की

संभावना रहती है। उस समय चूहे और साँप भी अपना बिल छोड़कर भागने लगते हैं, सहमे हुए कबूतर निरंतर आकाश में उड़ानें भरने लगते हैं और वापस अपने घोंसलों में नहीं जाते। मछलियाँ भयभीत हो जाती हैं तथा पानी की ऊपरी सतह पर तैरने लगती हैं। खरगोश अपने कान खड़े कर लेते हैं और अकारण उछलने-कूदने लगते हैं।

जापान भी भूकंपों का देश है और वहाँ किए गए परीक्षणों तथा अध्ययन में भी पशु-पक्षियों के व्यवहार में इसी प्रकार के परिवर्तन नोट किए गए। अमेरिका, इटली तथा ग्वाटेमाला के वैज्ञानिक भी इन परिवर्तनों की पुष्टि करते हैं। उनका कहना है कि भूकंप आने के पहले पृथ्वी का चुंबकीय आकर्षण वायुमंडल को प्रभावित करने लगता है। हवाओं की गति और तापमान में अंतर आ जाता है। धरती और आकाश के बीच का दबाव बढ़ जाता है। ये परिवर्तन बहुत सूक्ष्म होते हैं जिन्हें पशु-पक्षी ही पहचान पाते हैं तथा वे अपनी सुरक्षा की व्यवस्था करने लगते हैं।

यह तो सच है कि बहुत सूक्ष्म परिवर्तन, स्थूल परिवर्तनों का बोध इंद्रियों के माध्यम से नहीं होता है या सूक्ष्म तरंगें इंद्रियों की पकड़ में नहीं आतीं उन्हें इंद्रियाँ पहचानने में असमर्थ होती हैं। इसलिए जिन व्यक्तियों को इनका आभास होता है, वे अतींद्रिय सामर्थ्य से संपन्न कहे जाते हैं। पशु-पक्षियों में यह सामर्थ्य मनुष्यों की तुलना में अधिक बढ़ी-चढ़ी रहती है, क्योंकि वे प्राकृतिक जीवन जीते हैं और मनुष्यों की तुलना में कम बुद्धिमान हैं। संभवतः इसी कारण प्रकृति ने अपने इन नन्हे लाड़लों को यह विशेष सामर्थ्य दी है। जो भी हो, यह तो मानना ही पड़ेगा कि कुछ है जो इंद्रिय चेतना से परे है, अतींद्रिय एवं मानवी बुद्धि से परे है।

फ्राईबर्ग इंस्टीट्यूट ऑफ पैरासाइकोलॉजी (प. जर्मनी) के प्रोफेसर डॉ. हान्स बेंडर ने पशुओं में पाई जाने वाली अतींद्रिय क्षमताओं की ५०० घटनाओं का संकलन किया है। इन घटनाओं में फ्राईबर्ग पार्क की एक ऐसी चिड़िया का उल्लेख है, जो मित्र राष्ट्रों द्वारा की जाने वाली

बमबारी की सूचना ठीक १५ मिनट पहले चिल्ला-चिल्लाकर देने लगती थी। इस संकेत को सुनते ही स्थानीय नगरनिवासी सुरक्षित स्थानों (एयर रेड शेल्टर्स) में पहुँच जाते थे। इस प्रकार उस पक्षी ने अनेक अवसरों पर हजारों लोगों की जान बचाने के लिए भावी आपत्ति की पूर्वसूचना दी। एक दिन सूचना देने का अपना कर्त्तव्य पूरा करके जब वह अपने छिपने के लिए निरापद स्थान की तलाश कर रही थी, तभी बमबारी होने लगी और सबकी जान बचाने वाला वह पक्षी अपनी जान गँवा बैठा। स्थानीय निवासियों को जब उसकी मृत्यु का पता चला तो उसी पार्क में उस पक्षी का एक भव्य स्मारक बनाकर, उसे श्रेष्ठतम नागरिक का अलंकरण प्रदान कर दुखी संतप्तों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

प्रसिद्ध मनोविश्लेषक श्रीमती रेनी हाइन्स ने अपनी पुस्तक 'दि हिडेन स्प्रिंग्स' में पशुओं में पाई जाने वाली ऐसी अतींद्रिय क्षमताओं के अनेक उदाहरणों का संकलन किया है। उसमें एक ऐसे कुत्ते का दृष्टांत दिया गया है जिसके मालिक का घर आने का समय अनिश्चित रहता था। उसने एक चीनी रसोइया नौकर रखा हुआ था ताकि हारे-थके घर लौटने पर गर्म भोजन तत्काल मिल सके। वह कुत्ता मालिक के लौटने से तीन-चार घंटे पूर्व ही रसोइये को मालिक के आने की सूचना उसके कपड़े खींचकर अथवा विशेष आवाज में बोलकर दे देता था। रसोइया इस संकेत को समझकर तुरंत भोजन बनाने की तैयारी में जुट जाता और मालिक को पधारने पर गर्मागर्म भोजन तैयार मिलता। कुत्ते द्वारा बिना टेलीफोन के दी जाने वाली यह सूचना कभी भी गलत नहीं निकली।

'दि साइकिक पावर ऑफ एनीमल्स' नामक पुस्तक में मानवेतर प्राणियों में पाई जाने वाली अतींद्रिय शक्तियों संबंधी कई घटनाओं को संकलित किया गया है। उसमें लेखक ने अपने ही एक अनुभव का उल्लेख इस प्रकार किया है—एक दिन मैं अपने घोड़े पर सवार होकर

कहीं जा रहा था। अचानक घोड़ा एक मिनट के लिए अड़ गया। काफी मारपीट करने और जोर लगाने पर भी वह टस से मस नहीं हुआ। उसी समय थोड़ी दूर पर बिजली गिरी। यह देखकर मेरे मन में अपने घोड़े के प्रति असीम प्यार उमड़ पड़ा, क्योंकि यदि वह अपने स्थान से चल देता तो हम दोनों की मृत्यु हो जाती।

एक और विचित्र घटना अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से जुड़ी है। उनका प्यारा कुत्ता 'पैट' जो ह्वाइट हाउस में बँधा था, लिंकन की हत्या से कुछ समय पूर्व विचित्र प्रकार से भौंकने एवं अपने स्थान पर ही बेचैनी से चहलकदमी करने लगा था।

'सोसाइटी ऑफ पैरासाइकोलॉजी रिसर्च' के डॉ. जे. बी. राइन ने कबूतरों के पैर में नंबर डालकर कई प्रयोग किए। उसमें १६७ नंबर के कबूतर की एक घटना इस प्रकार है—

इस विशिष्ट कबूतर को पालने के लिए एक लड़के की नियुक्ति की गई थी। उसका नाम हग ब्रेडी परकिन्स था। सरदी का मौसम था। उस लड़के को एक रात 'फ्रास्ट बाइट' के कारण तकलीफ हुई। शल्य चिकित्सा के लिए उस लड़के को १२० मील दूर अस्पताल में ले जाया गया। दिन में ऑपरेशन संपन्न हो गया। रात को वह लड़का हॉस्पिटल के एक कमरे में सोया हुआ था। बाहर बरफ पड़ रही थी। बरफीली हवा भीतर न आए इसलिए खिड़की-दरवाजे बंद रखे गए थे, तभी खिड़की के शीशे पर कुछ फड़फड़ाहट की आवाज सुनाई पड़ी। नर्स ने ज्यों ही खिड़की खोली कबूतर भीतर घुस आया। इसकी आहट पाकर लड़के की नींद खुल गई। लड़के ने नर्स से पूछा—"इसके पैर में बँधे टैग पर कहीं १६७ नंबर तो नहीं लिखा है।" नर्स ने उसके कथन को सही पाया।

ग्रह-नक्षत्रों की तरह ही अन्य जीवधारियों एवं मनुष्य में भी एक विशिष्ट विद्युत का प्रवाह निस्सृत होता है। वह एक-दूसरे को बाँधता है। इस प्रकार समस्त मनुष्य जाति का प्रत्येक सदस्य एक-दूसरे के साथ अनजाने ही बँधा हुआ है और जिन धागों को यह बंधन कार्य

करना पड़ता है, वही एक से दूसरे तक उसकी सत्ता का भला-बुरा प्रभाव पहुँचाता है। एक व्यक्ति दूसरे के विचारों से अनायास ही परिचित और प्रभावित होता रहता है। यह आगे की बात है कि वह प्रभाव कितना भारी-हलका था और उसे किस कदर किसने स्वीकार या अस्वीकार किया।

आइंस्टीन 'समग्र ज्ञान' को 'सामान्य ज्ञान' की परिधि से आगे की बात मानते थे। वे कहते थे कि जिज्ञासा, प्रशिक्षण, चिंतन एवं अनुभव के आधार पर जो जाना जाता है उतना ही 'ज्ञान' नहीं है वरन चेतना का एक विलक्षण स्तर भी है जिसे अंतर्ज्ञान कहा जा सकता है। संसार के महान आविष्कार इस अंतर्ज्ञान प्रज्ञा के सहारे ही मस्तिष्क पर उतरे हैं। जिन बातों का कोई आधार न था उनकी सूझ अचानक कहाँ से उतरी? इसका उत्तर सहज ही नहीं दिया जा सकता, क्योंकि उसका कोई संगत एवं व्यवस्थित कारण नहीं है। रहस्यमय अनुभूतियाँ जिस प्रज्ञा से प्रादुर्भूत होती हैं, उन्हें अति मानवीय मानना पड़ेगा।

सिक्स्थ सेन्स, साई फिनॉमिना, दिव्यदृष्टि, ई. एस. पी. इत्यादि नामों से अतिमानवी चेतनशक्ति की बहुधा चर्चा होती रहती है। वस्तुतः यह हर किसी की पहुँच के भीतर है। अतीत ज्ञान, भविष्य दर्शन, मनःपाठन, दूरश्रवण आदि विशेषताएँ तो असामान्य एवं विशिष्ट व्यक्तियों में पाई जाती हैं, किंतु अपने प्रसुप्त को जगाकर हर कोई अपनी छठी इंद्रिय को तो कम से कम विकसित कर ही सकता है।

❑

दूरश्रवण की दिव्य सिद्धि

रक्त-संचार, श्वास-प्रश्वास, आकुंचन-प्रकुंचन, ग्रहण-विसर्जन, स्थगन-परिभ्रमण, विश्राम-स्फुरणा, शीत-ताप जैसे परस्पर विरोधी अथवा पूरक अगणित क्रिया-कलाप शरीर के अंग-अवयवों में निरंतर होते रहते हैं। हर हलचल ध्वनि तरंगें उत्पन्न करती है। ऐसी दशा में उनका शब्द-प्रवाह उपयुक्त स्थिति में कानों तक पहुँच ही सकता है और संवेदनशील कर्णेंद्रिय उन्हें भली प्रकार सुन भी सकती है।

कान जैसा कोई इलेक्ट्रॉनिक यंत्र मनुष्य द्वारा बन सकना संभव नहीं, क्योंकि कान में ऐसी संवेदनशील झिल्ली लगाई गई है जिसकी मोटाई एक इंच का २५०० मिलियनवाँ भाग (एक मिलियन बराबर दस लाख) है। इतनी हलकी साथ ही इतनी संवेदनशील ध्वनिग्राहक वस्तु बन सकना मानवीय कर्तृत्व से बाहर की बात है। सुनने के प्रयोजन में काम आने वाले मानव निर्मित यंत्रों की तुलना में कान की संवेदनशीलता दस हजार गुनी है। हमारे कान लगभग ४ लाख प्रकार की आवाज पहचान सकते हैं और उनके भेद-प्रभेद का परिचय पा सकते हैं। सौ वाद्य यंत्रों के समन्वय से बजने वाला आरकेस्ट्रा सुनकर उनसे निकलने वाली ध्वनियों का विश्लेषण प्रस्तुत करने वाले कान कितने ही संगीतज्ञों के देखे गए हैं। शतावधानी लोग सौ शब्द शृंखलाओं के क्रमबद्ध रूप से सुनने और उन्हें मस्तिष्क में धारण कर सकने में समर्थ होते हैं। कहते हैं कि पृथ्वीराज चौहान ने घंटे पर पड़ी हुई चोट को सुनकर उसकी दूरी की सही स्थिति विदित कर ली थी।

कानों की झिल्ली आवाज की बिखरी लहरों को एक स्थान पर केंद्रित करके भीतर की नली में भेजती है। वहाँ वे तरंगें विद्युत कणों में बदलती हैं। इसी केंद्र में तीन छोटी, किंतु अति संवेदनशील हड्डियाँ जुड़ती हैं, वे परस्पर मिलकर एक पिस्टन का काम करती हैं। इसके आगे लसिकायुक्त घोंघे की आकृति वाले गह्वर में पहुँचते-पहुँचते

आवाज का स्वरूप फिर स्पष्ट हो जाता है। इस तीसरे भाग की झिल्ली का सीधा संबंध मस्तिष्क से है। कान के बाहरी परदे पर टकराने वाली आवाज को लगभग ३,५०० कणिकाओं द्वारा आगे धकेला जाता है और मस्तिष्क तक पहुँचने में उसे सेकंड के हजारवें भाग से भी कम समय लगता है। मस्तिष्क उसे स्मरण शक्ति के कोष्ठकों में वितरित-विभाजित करता है। वह स्मरण-शक्ति पूर्व अनुभवों की आवाज पर भी यह निर्णय करती है कि यह आवाज तुरही की है या घड़ियाल की। सुनने की प्रक्रिया को अंतिम रूप यहीं आकर एक बहुत बड़ी, किंतु स्वल्प समय में पूरी होने वाली प्रक्रिया के उपरांत मिलता है।

वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में साउंड प्रूफ ऑडीओमेट्री कक्ष बनाए जाते हैं, जिनमें कान की श्रवण संबंधी संवेदनशीलता की जाँच की जाती है। न्यूजर्सी की एक प्रयोगशाला में ऐसे ही एक प्रयोग के दौरान एक चिकित्सक को विचित्र अनुभूति हुई।

इसमें प्रवेश करने पर कुछ ही समय में सीटी बजने, रेल चलने, झरने गिरने, आग जलने, पानी बरसने के समय होने वाली आवाजों जैसी ध्वनियाँ सुनाई पड़ती थीं। इस प्रयोग को कितने ही मनुष्यों ने अनुभव किया। बात यह थी कि शरीर के भीतर जो विविध क्रिया-कलाप होते रहते हैं, उनसे जो ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं, वे इतनी हलकी होती हैं कि बाहर होते रहने वाले ध्वनि-प्रवाह में वे एक प्रकार से खो जाती हैं। नक्कारखाने में तूती की आवाज की तरह यह भीतरी अवयवों की ध्वनियाँ कानों तक नहीं पहुँच पाती। पहुँचती हैं तो वायुमंडल में चल रहे शब्द-कंपनों की तुलना में अपनी लघुता के कारण उनका स्वल्प अस्तित्व अनुभव न होता हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। पर जब बाहर की आवाज रोक दी गई और केवल भीतर की ध्वनियों को मुखरित होने का अवसर मिला तो वे इतनी स्पष्ट सुनाई देने लगीं मानो वे अंग अपनी गतिविधियों की सूचना चिल्ला-चिल्ला कर दे रहे हों। इससे स्पष्ट होता है कि इंद्रियों की शक्ति का यदि अभिवर्द्धन अभ्यास

किया जाए तो उनकी क्षमता में असाधारण और आश्चर्यजनक वृद्धि हो सकती है। कर्णेंद्रियों का विकास इतना अधिक हो सकता है कि वह दूरगामी, हलकी आवाजें भी अच्छी तरह सुन ले। भीड़ के चहल-पहल के सम्मिश्रित शब्द घोष में से अपने परिचितों की आवाज छाँट और पकड़ ले। घुसफुस की, कानाफूसी की आवाजों को भी कर्णेंद्रिय की प्रखरता को तीव्र बनाने पर सुना जा सकता है। ऐसी विशेषताएँ कइयों में जन्मजात होती हैं। किन्हीं में प्रयत्नपूर्वक अभ्यास करने से विकसित होती हैं।

यह तो स्थूल कर्णेंद्रिय के निकटवर्ती उच्चारणों को सुनने-समझने की बात हुई। इससे भी बढ़कर बात यह है कि सूक्ष्म और कारण-शरीरों में सन्निहित श्रवणशक्ति को यदि विकसित किया जा सके तो अंतरिक्ष में निरंतर प्रवाहित होने वाली उन ध्वनियों को भी सुना जा सकता है जो चमड़े से बने कानों की पकड़ से बाहर हैं।

सिकंदर में यह गुण था—उस समय की बात है जब सिकंदर पंजाब की सीमा पर आ पहुँचा। एक दिन, रात को उसने अपने पहरेदारों को बुलाया और पूछा यह गाने की आवाज कहाँ से आ रही है? पहरेदारों ने बहुत ध्यान लगाकर सुनने की कोशिश की पर उन्हें तो झींगुर की भी आवाज सुनाई न दी। भौचक्के पहरेदार एक-दूसरे का मुँह देखने लगे, बोले महाराज ! हमें तो कहीं से भी गाने की आवाज सुनाई नहीं दे रही।

दूसरे दिन सिकंदर को फिर वही ध्वनि सुनाई दी, उसने अपने सेनापति को बुलाकर कहा—"देखो जी ! किसी के गाने की आवाज से मेरी नींद टूट जाती है। पता तो लगाना यह रात को कौन गाना गाता है।" सेनापति ने भी बहुतेरा ध्यान से सुनने का प्रयत्न किया, किंतु उसे भी कहीं से कोई आवाज सुनाई नहीं दी। मन में तो आया कि कह दें आपको भ्रम हो रहा है पर सिकंदर का भय क्या कम था, धीरे से बोला—"महाराज ! बहुत प्रयत्न करने पर भी कुछ सुनाई नहीं पड़

रहा, लेकिन अभी सैनिकों को आपकी बताई दिशा में भेजता हूँ। अभी पता लगाकर लाते हैं कौन गा रहा है?"

चुस्त घुड़सवार दौड़ाए गए। जिस दिशा से सिकंदर ने आवाज का आना बताया था—घुड़सवार सैनिक उधर ही बढ़ते गए। बहुत पास जाने पर उन्हें एक ग्रामीण के गाने का स्वर सुनाई पड़ा। पता चला कि वह स्थान सिकंदर के राजप्रासाद से १० मील दूर है। इतनी दूर की आवाज सिकंदर ने कैसे सुन ली? सैनिक, सेनापति सभी इस बात के लिए स्तब्ध थे। ग्रामीण एक निर्जन स्थान की झोंपड़ी पर से गाता था और आवाज इतना लंबा मार्ग तय करके सिकंदर तक पहुँच जाती थी। प्रश्न है कि सिकंदर इतनी दूर की आवाज कैसे सुन लेता था दूसरे लोग क्यों नहीं सुन पाते थे? सेनापति ने स्वीकार किया कि सचमुच ही अपनी ज्ञानेंद्रियों को संतुष्ट करके केवल वही सत्य नहीं कहा जा सकता जो आँखों से देखा और कानों से सुना जाता है। अतींद्रिय सत्य भी संसार में है उन्हें पहचाने बिना मनुष्य जीवन की कोई उपयोगिता नहीं।

दूर की आवाज सुनना विज्ञान के वर्तमान युग में कोई बड़े आश्चर्य की बात नहीं है। 'रेडियो डिटेक्शन एंड रेजिंग' अर्थात 'रडार' नाम जिन लोगों ने सुना है, वे यह भी जानते होंगे कि यह एक ऐसा यंत्र है जो सैकड़ों मील दूर से आ रही आवाज ही नहीं वस्तु की तसवीर का भी पता दे देता है। हवाई जहाज उड़ते हैं तब उनके आवश्यक निर्देश, संवाद और मौसम आदि की जानकारियाँ 'रडार' द्वारा ही भेजी जाती हैं और उनके संदेश रडार द्वारा ही प्राप्त होते हैं। बादल छाए हैं, कोहरा घना हो रहा है, हवाई पट्टी में धुआँ छाया है रडार की आँख उसे भी बेधकर देख सकती है और जहाज को रास्ता बताकर उसे कुशलतापूर्वक हवाई अड्डे पर उतारा जा सकता है।

रडार में वस्तुतः साधारण सी रेडियो तरंगों का सिद्धांत है। जब ध्वनि लहरियाँ किसी माध्यम से टकराती हैं तो वे फिर वापस लौट आती हैं उस स्थान, वस्तु आदि का पता देती हैं। हवाई जहाज की

ध्वनि को रेडियो तरंगों द्वारा पकड़कर यह पता लगा लिया जाता है कि वे किस दिशा में कितनी दूर पर हैं। यह कार्य प्रकाश की गति अर्थात १,८६,००० मील प्रति सेकंड की गति से होता है। रेडियो तरंगों की भी वही गति होती है। तात्पर्य यह है कि यदि उपयुक्त संवेदनशीलता वाला रडार जैसा कोई यंत्र हो तो बड़ी से भी बड़ी दूरी की आवाज को सेकंडों में सुना जा सकता है, ऑसीलोकोप पर देखा जा सकता है। प्रकाश में भी तीव्रगामी तत्त्वों की खोज ने तो अब इस संभावना को और भी बढ़ा दिया है और अब सारे ब्रह्मांड को भी कान लगाकर सुने जाने की बात को भी कोई बड़ा आश्चर्य नहीं माना जाता।

मुश्किल इतनी ही है कि कोई भी यंत्र इतने संवेदनशील नहीं बन पाते कि दसों दिशाओं से आने वाली करोड़ों आवाजों में से किसी भी पतली से पतली आवाज को जान सकें और भयंकर से भी भयंकर निनाद में भी टूटने-फटने के भय से बची रहें। रडार इतना उपयोगी है पर इतना भारी-भरकम कि उसे एक स्थान पर स्थापित करने में वर्षों लग जाते हैं। सैकड़ों फुट ऊँचे एंटीना, ट्रांसमीटर, रिसीवर, बहुत अधिक कंपन वाली (सुपर फ्रिक्वेंसी), रेडियो ऊर्जा, इंडिकेटर, आस्सीलेगर, माडुलेटर, सिंकोनाइजर आदि अनेकों यंत्र प्रणालियाँ मिलाकर एक रडार काम करने योग्य हो पाता है। उस पर भी अनेक कर्मचारी काम करते हैं, लाखों रुपयों का खरच आता है, तब कहीं वह काम करने के योग्य हो पाता है। कहीं बिजली का बहुत तेज धमाका हो जाय तो यह 'रडार' बेकार भी हो जाते हैं और जहाज यदि ऐसे हों जो अपनी ध्वनि को बाहर फैलने ही न दें तो 'रडार' उनको पहचान भी नहीं सकें। यह सब देखकर इतने भारी मानवीय प्रयत्न और मानवीय बुद्धि-कौशल तुच्छ और नगण्य ही दिखाई देते हैं।

दूसरी तरफ एक दूसरा रडार—मनुष्य का छोटा सा कान एक सर्वशक्तिमान कलाकार—विधाता की याद दिलाता है जिसकी बराबरी का रडार संभवत: मनुष्य कभी भी बना न पाए। कान हल्की आवाज

को भी सुन और भयंकर घोष को भी बरदाश्त कर सकते हैं। प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि कानों की मदद से मनुष्य लगभग ५ लाख आवाजें सुनकर पहचान सकता है, जबकि रडार का उपयोग अभी कुछ तक ही सीमित है।

कान के भीतरी भाग में जो संदेशों को मस्तिष्क में पहुँचाने का काम करते हैं ३०५०० रोये पाए जाते हैं। यह रोये जिस श्रवण झिल्ली से जुड़े होते हैं, वह तो १/५०००००००००००००० इंच से भी छोटा अर्थात इलेक्ट्रॉनिक माइक्रोस्कोप से भी मुश्किल से दिखाई दे सकने वाला होता है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इतने सूक्ष्म व संवेदनशील यंत्र को बनाने में मनुष्य जाति एक बार पूरी तरह सभ्य होकर नष्ट हो जाने के बाद फिर नए सिरे से जन्म लेकर विज्ञान की दिशा में प्रगति करे तो ही हो सकती है। इस झिल्ली का यदि पूर्ण उपयोग संभव हो सके तो संसार की सूक्ष्म से सूक्ष्म हलचलों को, लाखों मील दूर की आवाज को भी ऐसे सुना जा सकता है मानो वह यहीं-कहीं अपने पास ही हों या बैठे मित्र से ही बातचीत हो रही हो।

महर्षि पतंजलि ने लिखा है—

श्रीत्रःकाशयोः संबन्ध संयमादिदव्यं श्रोत्रम्।

—पयो सूत्र ४०

श्रवणेंद्रिय (कानों) तथा आकाश के संबंध पर संयम करने से दिव्य ध्वनियों को सुनने की शक्ति प्राप्त होती है।

महर्षि पतंजलि ने आगे लिखा है—'**ततः प्रतिभ श्रावण जायन्ते**' अर्थात संयम के अभ्यास से प्रतिभ अर्थात भूत और भविष्य ज्ञान दिव्य और दूरस्थ शब्द सुनने की सिद्धि प्राप्त होती है। योग विभूति में वे लिखते हैं—

शब्दार्थ प्रत्ययानामितरेतराध्यासत् संकरस्तस्प्रतिभाग संयमात् सर्व भूतरुतज्ञानम्॥ १७॥

शब्द, अर्थ और ज्ञान के अभ्यास से अभेद भासता है और उसके विभाग में संयम करने से भी प्राणियों के शब्दों में निहित भावनाओं का भी ज्ञान होता है। यह सूत्र सिद्धांत सूक्ष्म कर्णेंद्रिय की महान महत्ता का प्रतिपादन करते हैं और बताते हैं कि जब तक मनुष्य के पास ऐसा क्षमता संपन्न शरीर है उसे भौतिक शक्तियों की ओर आकर्षित होने की आवश्यकता नहीं। सिकंदर १० मील तक ही सुन सकता था योगी तो अपने कान लगाकर सारे ब्रह्मांड को सुन सकता है।

तंत्रविद्या में 'कर्णपिशाचिनी' साधना का महत्त्वपूर्ण प्रकरण है। रेडियो, टेलीफोन तो निर्धारित स्थान पर ही संदेश पहुँचाते हैं, उन्हें विशेष यंत्रों द्वारा ही प्रेषित किया जाता है और विशेष यंत्र ही सुनते हैं। कर्णपिशाचिनी विद्या से कहीं पर भी हो रहे शब्द-प्रवाह को सुना जा सकता है। स्थूल शब्दों के अतिरिक्त अन्य घटनाक्रमों की हलचलें विद्युत के रूप में अंतरिक्ष में विद्यमान रहती हैं, उन किरणों को प्रकाश रूप में देखा जा सकता है और शब्द रूप में सुना जा सकता है। तांत्रिक साधना से इस सिद्धि को उपलब्ध करने वाले अपने ज्ञान भंडार को असाधारण रूप से बढ़ा सकते हैं और उस स्थिति से विशेष लाभ उठा सकते हैं।

नादयोग सूक्ष्म शब्द-प्रवाह को सुनने की क्षमता विकसित करने का साधना विज्ञान है। कानों के बाहरी छेद बंद कर देने पर उनमें स्थूल शब्दों का प्रवेश रुक जाता है, तब ईथर से चल रहे ध्वनि-कंपनों का उस नीरवता में सुन-समझ सकना सरल हो जाता है। नादयोग के अभ्यासी आरंभ में कई प्रकार की दिव्य ध्वनियाँ कानों के छेद बंद करके मानसिक एकाग्रता के आधार पर सुनते हैं। शंख, घड़ियाल, मृदंग, वीणा, नफीरी, नूपुर जैसी आवाजें आती हैं और बादल गरजने, झरना झरने, आग जलने, झींगुर बोलने जैसी क्रमबद्ध ध्वनियाँ भी सुनाई पड़ती हैं। आरंभ में यह शरीर के अंतरंग में हो रही हलचलों की ही प्रतिक्रिया होती है, पर पीछे दूरवर्ती घटनाक्रमों के संकेत प्रकट करने

वाली अधिक सूक्ष्म आवाजें भी पकड़ में आती हैं। अनुभव के आधार पर उनका वर्गीकरण करके यह जाना जा सकता है कि इन ध्वनि-संकेतों के साथ कहाँ-किस प्रकार का—किस काल का घटनाक्रम संबद्ध है? आरंभिक अभ्यासी भी अपने शरीरगत अवयवों की हलचल, रक्त-प्रवाह, हृदय की धड़कन, पाचनसंस्थान आदि की जानकारी उसी भाँति प्राप्त कर सकता है जिस तरह कि डॉक्टर लोग स्टेथोस्कोप फोनोकार्डियोग्राफी आदि उपकरणों से हृदय की गति, रक्तचाप आदि का पता लगाते हैं। अपने ही नहीं दूसरों के शरीर की स्थिति का विश्लेषण इस आधार पर हो सकता है और तदनुकूल सही निदान विदित होने पर सही उपचार का प्रबंध हो सकता है।

सूक्ष्मशरीर की कर्णेंद्रिय को विकसित करके संसार में घटित होने वाले घटनाक्रम को जाना जा सकता है। कारणशरीर का संबंध चेतना जगत से है। लोगों की मनःस्थिति के कारण उत्पन्न होने वाली अदृश्य ध्वनियाँ जिसकी समझ में आने लगें, वह मानव प्राणी की, पशु-पक्षियों और जीव-जंतुओं की मनःस्थिति का परिचय प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार बिना उच्चारण के एक मन से दूसरे मन का परिचय, आदान-प्रदान होता रह सकता है। विचार-संचालन विद्या के ज्ञाता जानते हैं कि मनःस्थिति के अनुसार भावनाओं के उतार-चढ़ाव में एक विचित्र प्रकार की ध्वनि निस्सृत होती है और उसे सुनने की सामर्थ्य होने पर मौन रहकर ही दूसरों की बात अंतःकरण के परदे पर उतरती हुई अनुभव की जा सकती है और अपनी बात दूसरों तक पहुँचाई जा सकती है।

कारणशरीर की कर्णेंद्रिय साधना, दैवी संकेतों के समझने, ईश्वर के साथ वार्त्तालाप और भावनात्मक आदान-प्रदान करने में समर्थ हो सकती है। साधनात्मक पुरुषार्थ करते हुए अपने इन दिव्य संस्थानों को विकसित करना—अपूर्णता से पूर्णता की ओर बढ़ना यही तो योग साधना का—आत्मसाधना का उद्देश्य है।

❑

विचारशक्ति की भौतिक अभिव्यक्ति

दुनिया को जैसी कुछ हम देखते हैं वस्तुतः वह वैसी नहीं है उसमें संदेह की पूरी-पूरी गुंजाइश है। यदि हमारी आँखों की वर्तमान क्षमता में थोड़ा सा अंतर होता और वे इन्फ्रारैड किरणों को देख पातीं तो दुनिया इससे बिलकुल भिन्न प्रकार की दीखती जैसी कि अब हमें दीख पड़ती है। प्राणि जगत के विभिन्न प्राणी अपनी इंद्रिय शक्ति के सहारे अपने संपर्क में आने वाले पदार्थों और प्राणियों के बारे में मत निर्धारित करते हैं। यह अनुभूतियाँ एक से दूसरे को इस प्रकार होती हैं, जिसमें परस्पर तनिक भी समानता नहीं रहती। दीमक के लिए तीतर साक्षात यमराज है पर बाज के लिए वह चलते-फिरते स्वादिष्ट भोजन के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। ऊँट नीम की पत्तियों को स्वादपूर्वक खाता है, किंतु हमें वे कुड़ुई लगती हैं। रासायनिक विश्लेषण से नीम का सार-तत्त्व एक ऐसा रसायन है, जिसे विभिन्न प्राणियों की जिह्वा विभिन्न प्रकार के स्वादों में अनुभव करेगी। इसी प्रकार अन्य इंद्रियों की संरचना के आधार पर वस्तुओं की तथा प्राणियों की उपस्थिति की चित्र-विचित्र प्रतिक्रियाएँ होती हैं। इसमें मस्तिष्क की बनावट और प्राणी की वंश परंपरागत संचित अनुभूतियाँ भी बहुत बड़ा कारण हैं। विज्ञानी रेनाल्ड के अनुसार यह दृश्य संसार परमाणुओं की धूलि का उड़ता हुआ अंधड़ मात्र है। कणों के इकट्ठे होने और बिखरने से विभिन्न पदार्थ बनते-बिगड़ते रहते हैं। प्राणी किस वस्तु को, किस रूप में समझे और उनसे क्या अनुभूति उपलब्ध करे—यह पदार्थ के ऊपर नहीं, जीवधारियों की अपनी संरचना पर निर्भर है। संसार का असली रूप और प्रभाव क्या है ? यह जानना असंभव है, क्योंकि हमारी जानकारी जिन इंद्रियों पर निर्भर

है, वे स्वयं ही एक विशिष्ट प्रकार की हैं और जैसी कुछ वे हैं, उनका ज्ञान भी उसी आधार पर बनता है।

आँखों की उपयोगिता से इनकार नहीं किया जा सकता। उनकी प्रामाणिकता भी माननी पड़ती है। प्रत्यक्ष दर्शन की बात सही मानी जाती है। इतने पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि आँखें जो कुछ देखती हैं, वह सही ही होता है। मृगमरीचिका, इंद्रधनुष, भूत-प्रेत आदि आँखों से दीखने पर भी मिथ्या ही सिद्ध होते हैं। सिनेमा में चलती-फिरती तसवीरों का दीखना आँखों का भ्रम है वस्तुतः वे अचल होती हैं। जिस तेजी से फिल्म घूमती है, उतनी तेजी आँखों के ज्ञानतंतु मस्तिष्क तक सही सूचना पहुँचा सकने में समर्थ नहीं होते। फलतः फिल्में चलती-फिरती दीखने लगती हैं। जब सामान्य घटनाक्रमों के संबंध में यह बात है तो संसार की—जीवन की वस्तुस्थिति समझने में तो आँखें और भी कम काम करती हैं। भगवान का, आत्मा का दर्शन दिव्य चक्षुओं से—ज्ञान-नेत्रों से ही संभव है। चर्म-चक्षुओं से चेतनातत्त्व को देख सकना तो दूर भौतिक जगत में प्रत्यक्ष विद्यमान विद्युत-प्रवाह, रेडियो विकिरण, श्रवणातीत ध्वनियाँ जैसे तथ्यों को भी नहीं देखा जा सकता। सामने प्रस्तुत कितनी ही वस्तुएँ खुली आँख से नहीं दीखतीं, सूक्ष्मदर्शी यंत्रों के सहारे ही उनका पता चलता है। टैलिस्कोप सामने के वे दृश्य दिखाता है जो आँखें नहीं देख पातीं।

ज्ञानप्राप्ति के माध्यमों में सुनना और देखना अति महत्त्वपूर्ण हैं। मस्तिष्कीय विकास में इन्हीं दो माध्यमों की भूमिका प्रधान है। स्वाध्याय में आँखें और सत्संग में कान ही मस्तिष्क तक ज्ञान का प्रवाह पहुँचाते और उसे सुसंपन्न बनाते हैं। यों अन्य माध्यमों से भी कई तरह की उपयोगी जानकारियाँ मिलती हैं, पर प्रधानता इन्हीं दो की है।

भगवान ने दस इंद्रियाँ मनुष्य को दी हैं, पर ज्ञान-भंडार को भरने में आँख और कान का योगदान जितना काम करता है, उतना अन्य सब ज्ञान-उपार्जन-साधन मिलकर भी नहीं कर पाते।

यह तो उस अनुभूति की चर्चा हुई जो इंद्रियगम्य है, लेकिन इससे भी परे बहुत कुछ है जो इंद्रियातीत है। विचार-तरंगों के क्रिया-कलापों को इसी श्रेणी में लिया जा सकता है। ये इतने विलक्षण एवं चमत्कारी होते हैं कि सहसा प्रत्यक्षवाद का पक्षधर विज्ञान उनका विश्वास नहीं कर पाता। किंतु अतींद्रिय बोध पर आधारित ऐसी अनेकों घटनाएँ अब इस विधा को विज्ञान की परिधि में प्रतिष्ठा दिला चुकी हैं।

अप्रत्यक्ष होते हुए भी विचारों की सामर्थ्य एवं प्रभाव प्रत्यक्ष अन्य शक्तियों से कहीं अधिक है। जीवन से उनका घनिष्ठ संबंध है। विकास अथवा पतन में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। परा-मनोवैज्ञानिकों के अनुसार भौतिक जगत की चुंबकीय तरंगों से विचार-तरंगों की गति एवं शक्ति असंख्यों गुनी है। जिस विज्ञान के अंतर्गत विचार-तरंगों का स्वरूप एवं प्रभाव ज्ञात होता है उसे योग दर्शन में विचार-वैगिकी कहते हैं। तत्त्वदर्शियों का मत है कि संसार में शुभ एवं अशुभ विचार-तरंगों का निरंतर प्रसारण होता है, जिनमें विविध गुण, विकार मिश्रित होते हैं। जिस प्रकार प्रकाश तरंगों में तीव्रता, तरंगदैर्घ्य तथा आवृत्ति होती है उसी प्रकार विविध तरह की विचार-तरंगों में विविध प्रकार की तीव्रता, तरंगदैर्घ्य एवं आवृत्ति होती है। वे सूक्ष्म अंतरिक्ष में घूमती रहतीं तथा चैतन्य संसार को प्रभावित करती हैं।

विचार-तरंगों का आदान-प्रदान अथवा प्रसारण जिस प्रक्रिया द्वारा संपन्न होता है, उसे मनोवेत्ता 'टेलीपैथी' कहते हैं। इस प्रक्रिया में बिना इंद्रियों का सहारा लिए विचार-तरंगों को एक मन से दूसरे मन तक प्रेषित किया जाता है। इस क्रिया में देश-काल संबंधी भौतिक सीमाएँ आड़े नहीं आ पातीं। टेलीपैथी के सफल संप्रेषण में मन की एकाग्रता का असाधारण महत्त्व है। उस एकाग्रता का संपादन ध्यान के विविध आध्यात्मिक प्रयोगों में अधिक सफलता से होता है। प्रायः भौतिक उपचार उस उपलब्धि में अधिक सफल नहीं हो पाते। कारण कि जिस गहरे स्तर की एकाग्रता विचार-संप्रेषण के लिए चाहिए, वह

भौतिक प्रयत्नों से नहीं बन पाती। शरीर एवं बुद्धि से परे जाकर मन की विचार-तरंगों को प्राणशक्ति के माध्यम से घनीभूत कर पाना ध्यान साधना के माध्यम से ही संभव हो पाता है।

आणविक जीवविज्ञानी जैंबिसमोनाड नामक विद्वान ने एक पुस्तक लिखी है—'चांस एंड नेसेसिटी'। उसमें उन्होंने यह रहस्योद्‌घाटन किया है कि मैटेरियल वर्ल्ड से जुड़ी बायोस्फीयर की स्ट्रैटोस्फीयर जैसी परतों के अतिरिक्त एक सूक्ष्म परत भी मौजूद है। इस परत का उन्होंने नाम—आइडियोस्फीयर रखा है। उनका मत है कि आइडियोस्फीयर में वैचारिक संपदा का वह भंडार छिपा पड़ा है जो सृष्टि से लेकर अब तक मानव मस्तिष्क द्वारा आविष्कृत हुआ है तथा अपनी समर्थता के कारण समय-समय पर मानव जाति के उत्थान-पतन का आधार बना है। वे लिखते हैं—"सशक्त विचार कभी भी समाप्त नहीं होते— अचेतन ब्रह्मांड में विद्यमान रहते हैं। जीवधारियों की तरह विचार भी अपनी वंश-परंपरा में ही यथावत न बने रहकर विकास के लिए सतत आतुर रहते हैं। समधर्मी विचार आपस में मिलते हैं, अनुकूल का चुनाव करते हैं तथा घनीभूत होते रहते हैं।"

साथ ही इस तथ्य का भी उन्होंने उल्लेख किया है कि जिन विचारों की आवृत्ति जितनी अधिक होती है, उतने ही सक्षम-समर्थ बनते जाते हैं। उनकी तरंगें आइडियोस्फीयर में मौजूद रहती तथा अपनी प्रेरणाएँ संप्रेषित करती हैं। वे तरंगें कई प्रकार की होती हैं। सभी सूक्ष्म वातावरण में प्रवाहित होती रहती हैं। प्रयोग होने अथवा न होने पर उनकी सामर्थ्य बढ़ती है, पर मूलतः समाप्त कभी नहीं होतीं। उनके अनुसार दूरानुभूति, पूर्वाभास, विचार-संप्रेषण, विचार-प्रहार, पदार्थों पर विचारों के प्रभाव आदि अतींद्रिय शक्तियों के मूल में ये विचार-तरंगें ही होती हैं। अभ्यास द्वारा सघन कर केंद्रित की हुई तरंगें शक्तिशाली आइडियोस्फीयर के माध्यम से अपनी विलक्षणता का परिचय देती रहती हैं। यह प्रक्रिया पूर्णतः विज्ञानसम्मत है। इसमें किसी भी प्रकार का न कोई फ्राड है न तुक्का।

अविज्ञात के प्रकटीकरण को ही चमत्कार कहते हैं। वस्तुतः इस संसार में चमत्कार जैसी कोई वस्तु है नहीं। प्रकृति के अंतराल में उसकी सनातन सत्ता इस प्रकार भरी है कि उसमें कमी पड़ने या बढ़ोत्तरी होने जैसी कोई बात होती नहीं। जो व्यवहार में आता है, जो विदित या प्रकट है, वही सामान्यतया दृष्टिगोचर होता है, पर इस छोटे क्षेत्र से आगे बढ़कर कोई विशेष उपलब्धियाँ यदि सामने आती हैं तो उन्हें दैवी अनुग्रह या सिद्धि-चमत्कार कहा जाने लगता है। अतींद्रिय क्षमताओं के संबंध में भी यही बात है। उस आधार पर कितने ही कौतुक-कुतूहलों के विवरण सामने आते रहते हैं। इन्हें आकस्मिक नहीं समझा जाना चाहिए।

विचारशक्ति की भौतिक अभिव्यक्ति का सर्वप्रथम वैज्ञानिक परीक्षण फ्रांस के काउँट अगेनर डी गेस्परिन ने किया। उन्होंने अपने कुछ वैज्ञानिक मित्रों के साथ कुछ प्रयोग किए। उन्होंने देखा कि कुछ व्यक्ति वस्तुओं को बिना स्पर्श किए एक स्थान पर हटाने की पात्रता रखते हैं। उन्होंने वस्तु को बिना स्पर्श किए हटाने वाली शक्ति को उसी प्रकार नापा जैसे भौतिकविज्ञानी गुरुत्वाकर्षण शक्ति को नापते हैं। अभी तक किसी भी वस्तु अथवा व्यक्ति के हवा में उड़ने की घटना को जो कि गुरुत्वाकर्षण शक्ति के सिद्धांत के प्रतिकूल है, एक पारलौकिक और दैवी शक्ति के हस्तक्षेप द्वारा ही संभव माना जाता था। किंतु डी गेस्परिन इस कार्य में कोई अन्य बुद्धिसंगत मर्म होने की संभावना को मानते थे। उनका तर्क यह था कि यह कार्य मानव अपनी आत्मशक्ति के द्वारा भी असंभव को संभव बनाते हुए कर सकता है।

डी गेस्परिन की रिपोर्ट सन् १८५४ में प्रकाशित हुई और इसके एक वर्ष बाद ही जिनेवा के प्रोफेसर ड्यूरी ने भी अपने शोध का विवरण प्रकाशित किया। उनके परिणाम भी गेस्परिन से मिलते-जुलते थे। उन्होंने बताया कि कोई अज्ञात शक्ति इसमें कार्य करती है, इसे अतींद्रिय अथवा आत्मिक शक्ति कहा जा सकता है। तदनंतर प्रोफेसर

सर विलियम क्रुक्स ने इस पर अनुसंधान किया। उनकी विद्वता की साख थी और वे रायॅल सोसाइटी के फेलो के गरिमामय पद पर भी थे, अत: उन्हें अपने अनुसंधान से संबंधित प्रयोगों को तिमाही पत्रिका 'जनरल ऑफ साइंस' में प्रकाशित करवाना संभव हो गया। उन्होंने डेनियल डुंगाहोम जो कि इन अज्ञात शक्तियों का माध्यम था, के प्रयोगों का कई बार सफल परीक्षण किया और देखा कि वह कितनी सरलता से बिना स्पर्श किए किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित कर देता है।

एक बार अन्य वैज्ञानिकों के सामने क्रुक्स के घर पर एक प्रयोग किया गया। इसमें तार के एक पिंजड़े में एक आकॉर्डियन रखा गया। पिंजरे में केवल आकॉर्डियन को छुआ भर जा सकता था और उसकी चाबियों तक हाथ पहुँचा नहीं सकता था। होम के हाथ की गतिविधियों को सब दर्शक देख सकते थे। इन दर्शकों में कई मूर्द्धन्य भौतिकशास्त्री और वकील भी थे। थोड़ी देर में वह आकॉर्डियन अपने आप हिलने लगा और थोड़ी देर बाद ध्वनि निकलने लगी। फिर लय और स्वरबद्धता के साथ एक के बाद दूसरे क्रम से कई गीतों की ध्वनियाँ बजीं। साधारणत: कोई भी धुन बिना उसकी चाबी को चलाए निकालना असंभव ही होती है, किंतु सबने आश्चर्य से देखा कि वाद्य बड़ी मधुर ध्वनि निकाल रहा है। इसके बाद सबके आश्चर्य से और भी वृद्धि तब हुई जब सबने देखा कि आकॉर्डियन को छूने वाले हाथ को भी पिंजरे में से होम ने निकालकर पास में बैठे एक अन्य व्यक्ति के हाथ में दे दिया और आकॉर्डियन उसी प्रकार ध्वनित होता रहा। इस प्रयोग में किसी अन्य कृत्रिम दूर संप्रेषण माध्यम को तो प्रयुक्त नहीं किया गया है, यह पहले ही परख लिया गया था।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रयोग के बारे में क्रुक्स ने लिखा है कि एक भारी भार तौलने की मशीन के बोर्ड के एक सिरे को छू भर देने से होम उसके वजन को अधिक अथवा कम करके दिखा देने की पात्रता रखता था, जबकि उस मशीन पर स्वयं क्रुक्स के चढ़ने पर उस पर

बहुत थोड़ी प्रतिक्रिया हुई। केवल छूने भर से वह भारी मशीन कैसे कम-ज्यादा वजन बना सकी—यह एक रहस्य ही था। आत्मशक्ति का जड़ पदार्थ को प्रभावित करने वाला वैज्ञानिकों को स्तंभित करने वाला यह एक सफल प्रयोग था।

भारतीय योगशास्त्रों में स्थूल नेत्रों के अतिरिक्त एक तीसरे सूक्ष्म नेत्र का उल्लेख भी मिलता है, जिसे आज्ञाचक्र कहते हैं। इसका स्थान दोनों ध्रुवों के बीच में बताया जाता है। ध्यान साधना के समय यहीं दृष्टि केंद्रित करने का निर्देश भी विभिन्न शास्त्रों में मिलता है। इस केंद्र में संसार की स्थूल और सूक्ष्म परिस्थितियाँ जानने-समझने की ही नहीं वस्तुओं और व्यक्तियों को प्रभावित करने की भी क्षमता है। इतना ही नहीं, वातावरण में व्यापक परिवर्तन भी इस केंद्र के उपयोग द्वारा संभव बताया गया है। दूरदर्शन, परोक्ष दर्शन तो उसकी आरंभिक कला है। एक्स-किरणें एवं लेसर किरणें जिस प्रकार ठोस पदार्थों में पार हो जाती हैं, वे पदार्थ उसमें कोई बाधा नहीं पहुँचाते और वह आँखों से न दिखाई देने वाली भीतरी स्थिति का भी चित्र खींचकर रख देती हैं, उसी प्रकार आज्ञाचक्र की संकल्प किरणें दूर अदृश्य को भी तमाम अवरोधों, बाधाओं के बाद भी जान लेती हैं। इस माध्यम से न केवल पदार्थों को देखने का प्रयोजन पूरा होता है, वरन जीवित प्राणियों की मन:स्थिति को भी समझ पाना संभव हो जाता है। आज्ञाचक्र द्वारा मात्र देखना-समझना ही संभव नहीं होता अपितु उसकी क्षमता दूसरों को भी प्रभावित और परिवर्तित कर सकती है।

❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)